राज
कॉमिक्स
विशेषांक

SPECIAL COLLECTORS EDITION

भोकाल

डायजेस्ट 1

Set of 10 Comics

- खौफनाक खेल
- तिलिस्मी ओलम्पाक
- भोकाल
- शूतान
- अतिक्रूर
- भोकाल तिलिस्म में
- तिलिस्म टूट गया
- भोकाल और फूचांग
- अतिक्रूर और गजोख
- विकांडा

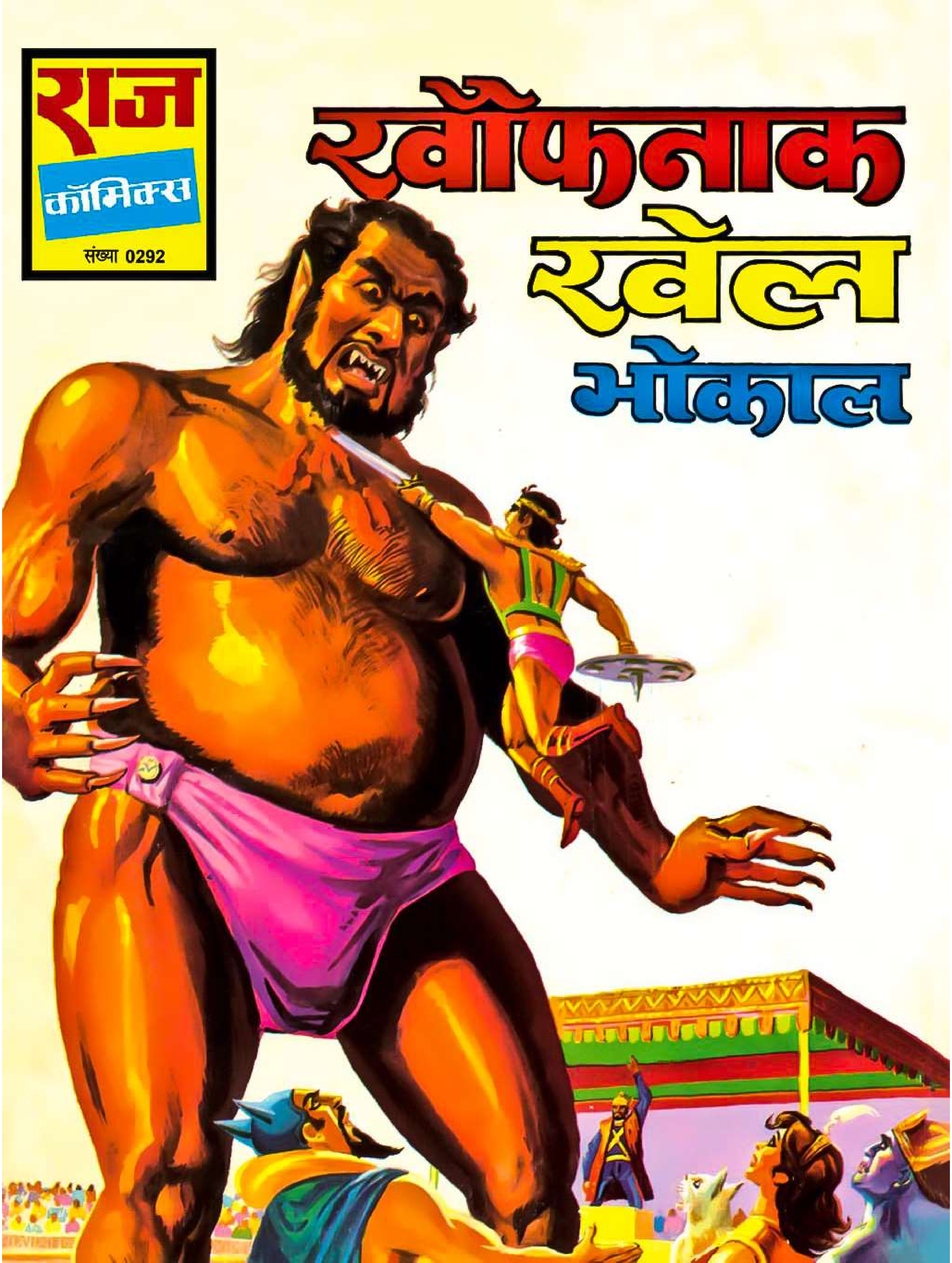
राज
कॉमिक्स
संख्या 0292
खौफनाक
खेल
भोकाल

भोकाल सीरीज

खौफनाक खेल

● कथानक : संजय गुप्ता ● सम्पादन: मनीषचन्द्र गुप्त ● चित्रांकन: कदम स्टुडिओ

महाबली फूचांग ओसाक ग्रह का बागी जिसने ओसाक ग्रह की वह रात खून से रंग दी, महाराज गार्बोचकी हत्या करके –

© RAJA POCKET BOOKS

महारानी रसीया राजकुमारी सोफिया को लेकर भाग निकली।
फूचांग का क्रोध संभाले नहीं संभल रहा था –
उसे पकड़कर लाओ। उसके बिना तिलिस्मी ओलम्पाक में नहीं घुसा जा सकता। मुझे सोफिया जरूर चाहिए। जिंदा या मुर्दा।
उधर एक गुप्त स्थान पर रानी रसीया की छत्रछाया में राजकुमारी सोफिया अब जवान हो चुकी थी–
बेटी सोफिया! अब तुम इस लायक हो गई हो कि अपने पिता की हत्या का बदला ले सको।
मां! मैं फूचांग को खून से नहला दूंगी।
नहीं, अभी नहीं। अभी तुम्हें तिलिस्मी ओलम्पाक पहुंचना है। वहीं कैद है फूचांग की मौत और ओसाक ग्रह का भविष्य।
तिलिस्मी ओलम्पाक।
और वहां पहुंचने के लिए तुम्हें पृथ्वीलोक जाना पड़ेगा। महर्षि गाजोबाजो के पास। वे पृथ्वीलोक में हमारे जासूस हैं और तुम्हारे पिता के वफादार भी। तुम्हें तिलिस्मी ओलम्पाक की पूरी शिक्षा और चाबी वही देंगे।
ठीक है मां, मैं कल ही वहां के लिए प्रस्थान कर जाती हूं।

पृथ्वीलोक पर विकासनगर में महर्षि गाजोबाजो के आश्रम में
महाबली फूचांग को गाजोबाजो का प्रणाम।
गाजोबाजो! तिलिस्मी ओलम्पाक की तुम्हें पूरी जानकारी है और तुम्हें यह भी मालूम है कि...
...राजकुमारी सोफिया के बिना वहां नहीं पहुंचा जा सकता। और राजकुमारी सोफिया को वहां पहुंचने के लिए तुम्हारे पास आना ही पड़ेगा।
तो महाबली मुझसे क्या चाहते हैं?
हम चाहते हैं कि जब राजकुमारी सोफिया आपके पास पहुंचे तो आप राजकुमारी को हमें सौंप दें।
जरूर महाबली, ऐसा ही होगा।
हम विकासनगर के महाराज विकासमोहन के मेहमान हैं यहां पर।
और जब राजकुमारी सोफिया वहां पहुंची—
महर्षि गाजोबाजो को सोफिया का प्रणाम।
आओ पुत्री! स्वागत है तुम्हारा।
हमें पता है पुत्री कि तुम यहां क्यों आई हो। हम तुम्हें खुद तिलिस्मी ओलम्पाक ले चलेंगे, अभी तुम आराम करो।
जैसी आपकी इच्छा महर्षि।

और अगले दिन महर्षि गाजोबाज़ो अपने आश्रम से निकले।
चलो, सारथि, विकास-नगर महाराज विकास-मोहन के दरबार में।
महाराज विकास मोहन का दरबार —
वाह! क्या नृत्य है ! क्या नर्तकी है। महामंत्री चन्द्रमणि हमारे मित्र फूचांग के लिए मदिरा लाओ।
जरूर महाराज, जरूर मदिरा ही जीवन है। हिक हिक
तभी महर्षि गाजोबाज़ो ने वहां प्रवेश किया —
महाबली फूचांग व महाराज विकासमोहन को गाजो-बाज़ो का प्रणाम।
तुरन्त रागरंग बन्द हो गया —
प्रणाम महर्षि।
गाजोबाज़ो आपके लिए बेशकीमती तोहफा लाया है महाबली फूचांग!
कालीन खोलकर दिखाया जाए।

राजकुमारी सोफिया!

खिल उठा फूचांग का शैतानी चेहरा—
हम तुमसे अति प्रसन्न हुए गाजोबाजो! तुमने हमारा दिल जीत लिया! हम इसका इनाम देंगे आपको।
गाजोबाजो, बेईमान! धोखेबाज!!
हा हा हा महर्षि गाजोबाजो, अब आप जल्दी से ताबीज तैयार करें!
जो आज्ञा महाबली!
और तब महर्षि गाजोबाजो राजकुमारी सोफिया को लेकर वधशाला में पहुंचा—
राजकुमारी! अपने इष्टदेव खजूरा को याद कर लो!
गाजोबाजो! आप तो हमारे पिता के वफादार थे।
हा हा हा राजकुमारी! मेरे लिए पैसा और रुतबा जरूरी है। और वह मुझे महाबली फूचांग से मिलेगा।
गाजोबाजो! इस कुकृत्य के लिए ओसाक ग्रहवासी व इष्टदेव खजूरा आपको कभी माफ नहीं करेंगे।
राजकुमारी! तिलिस्मी ओलम्पाक हमारे हाथ आने के बाद हमें किसी चीज की जरूरत नहीं रह जाएगी।
खचाक

और महर्षि गाजोबाजो ने राजकुमारी सोफिया की कटी गर्दन उठाई -
हा हा हा
सोफिया के तड़पते हुए जिस्म को देखा -
और उसके चेहरे को अपने हाथ से भींचकर गायब कर दिया -
फक
अब यह बाल और यह खून हमारे काम आएगा।
और ताबीज तैयार हो गए।

तभी महाबली फूचांग ने वहां प्रवेश किया—
महर्षि! कृपया बताएं, क्या हमारा काम हो गया है?
जी हां, महाबली! अब यह ताबीज पहन कर कोई भी महाबली, महावीर या सर्वोत्तम स्त्री पुरुष तिलिस्मी ओलम्पाक में प्रवेश कर सकता है।...
...महान खजूरा के वरदान के कारण केवल सोफिया ही तिलिस्मी ओलम्पाक में प्रवेश कर सकती थी। महान खजूरा ने उसके खून व उसके बालों में यह शक्ति भर दी थी। आप तिलिस्मी ओलम्पाक में महान खजूरा के शाप के कारण नहीं घुस सकते थे। अब आपको यह खौफनाक खेल खेलने के लिए जरूरत है संसार के सर्वोत्तम, महावीर व महाबलिष्ठ व्यक्ति की।
हां, गाजोबाजो! यह खेल होगा और बड़े जोर-शोर से होगा!
किन्तु उसी क्षण वहां महाबली फूचांग के गुप्तचर ने प्रवेश किया—
महाबली फूचांग! खबर मिली है कि सोफिया अभी जीवित है!
क्या?
लेकिन वह इस से आगे कुछ ना बोल सका—
आहऽऽ
और जल मरा!
गरज उठा फूचांग—
महर्षि गाजोबाजो! क्या कह रहा था यह गुप्तचर और यह जल कैसे गया?
महाबली फूचांग! यह गुप्तचर वधशाला के सुरक्षा घेरे में घुस आया था, इसलिए जल मरा

...और राजकुमारी सोफिया के बारे में शायद वह जानता नहीं होगा कि उसका मैंने यहां अभी-अभी वध किया है।
हुम्म!
महर्षि गाजोबाजो! तुमने हमारी बहुत सेवा कर ली। अब इस सेवा का तुम्हें अति विशिष्ट पुरस्कार देंगे हम।
आप महान हैं महाबली!
सेवा के इनाम में फूचांग की तलवार उठी–
और गाजाबाजो की गर्दन कटकर नीचे जा पड़ी–
हा हा हा! तुझ जैसा चालबाज, चालाक बूढ़ा अब जीवित नहीं रहना चाहिए।
अब रचना पड़ेगा एक भयानक जाल। एक खौफनाक खेल।
और उसके लिए आज ही विश्व के सभी राजाओं, सम्राटों, चक्रवर्ती सम्राटों, महावीरों और महाबलिओं को न्यौता देना होगा।

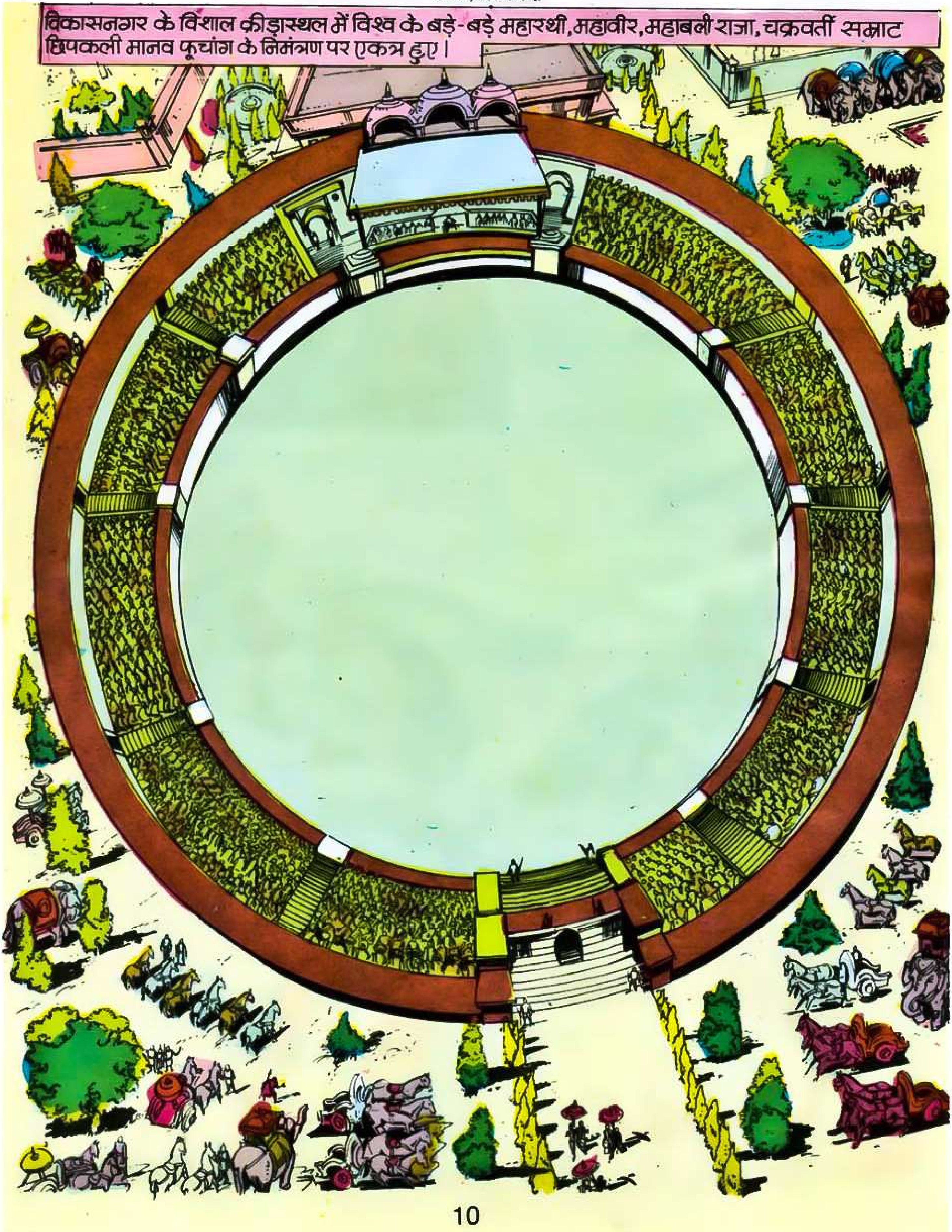
विकासनगर के विशाल क्रीड़ास्थल में विश्व के बड़े-बड़े महारथी, महावीर, महाबली राजा, चक्रवर्ती सम्राट छिपकली मानव फूचांग के निमंत्रण पर एकत्र हुए।

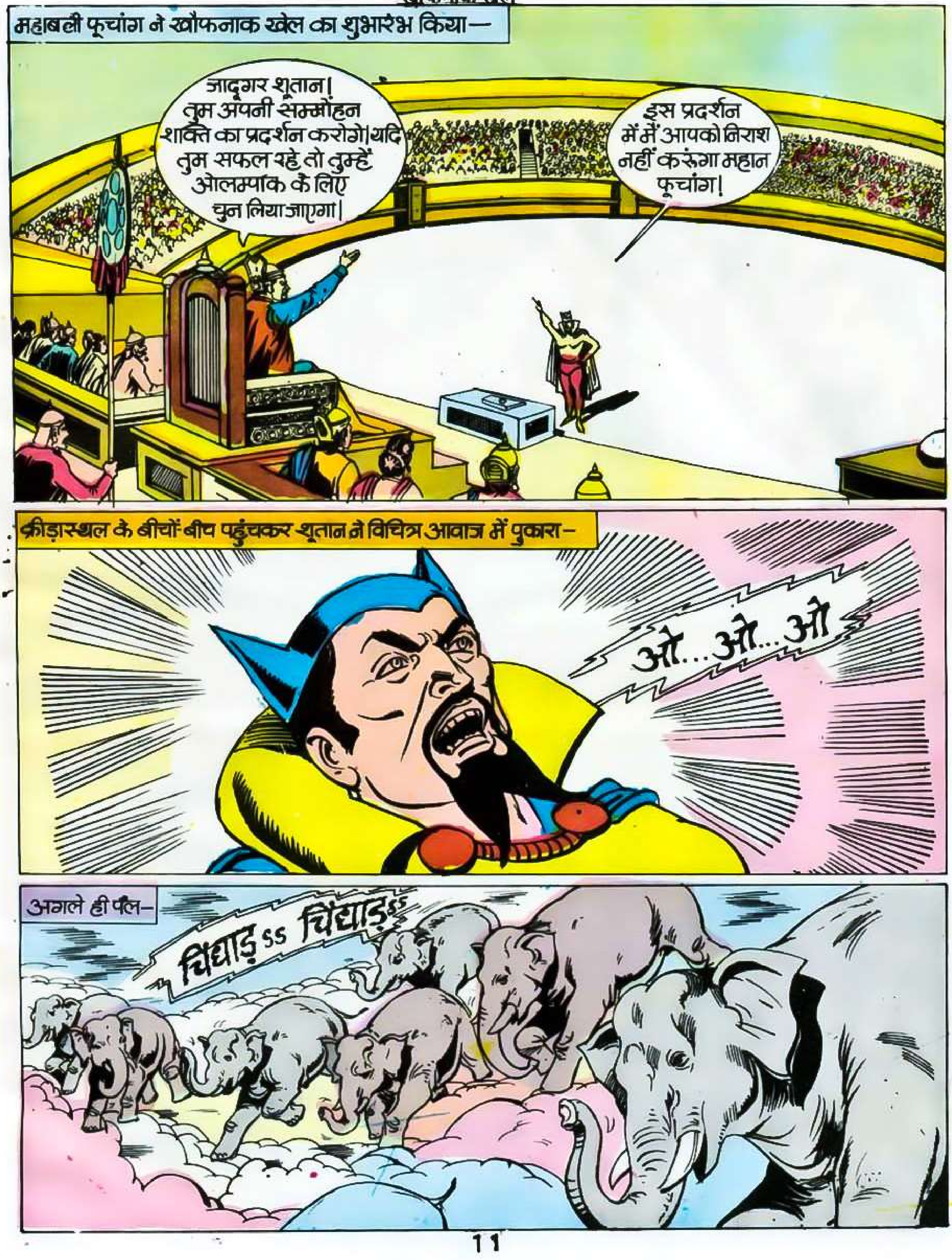
महाबली फूचांग ने खौफनाक खेल का शुभारंभ किया—
जादूगर शूतान! तुम अपनी सम्मोहन शक्ति का प्रदर्शन करोगे। यदि तुम सफल रहे तो तुम्हें ओलम्पिक के लिए चुन लिया जाएगा।
इस प्रदर्शन में मैं आपको निराश नहीं करूंगा महान फूचांग!
क्रीड़ास्थल के बीचों बीच पहुंचकर शूतान ने विचित्र आवाज़ में पुकारा—
ओ...ओ...ओ
अगले ही पल—
चिंघाड़ss चिंघाड़ss

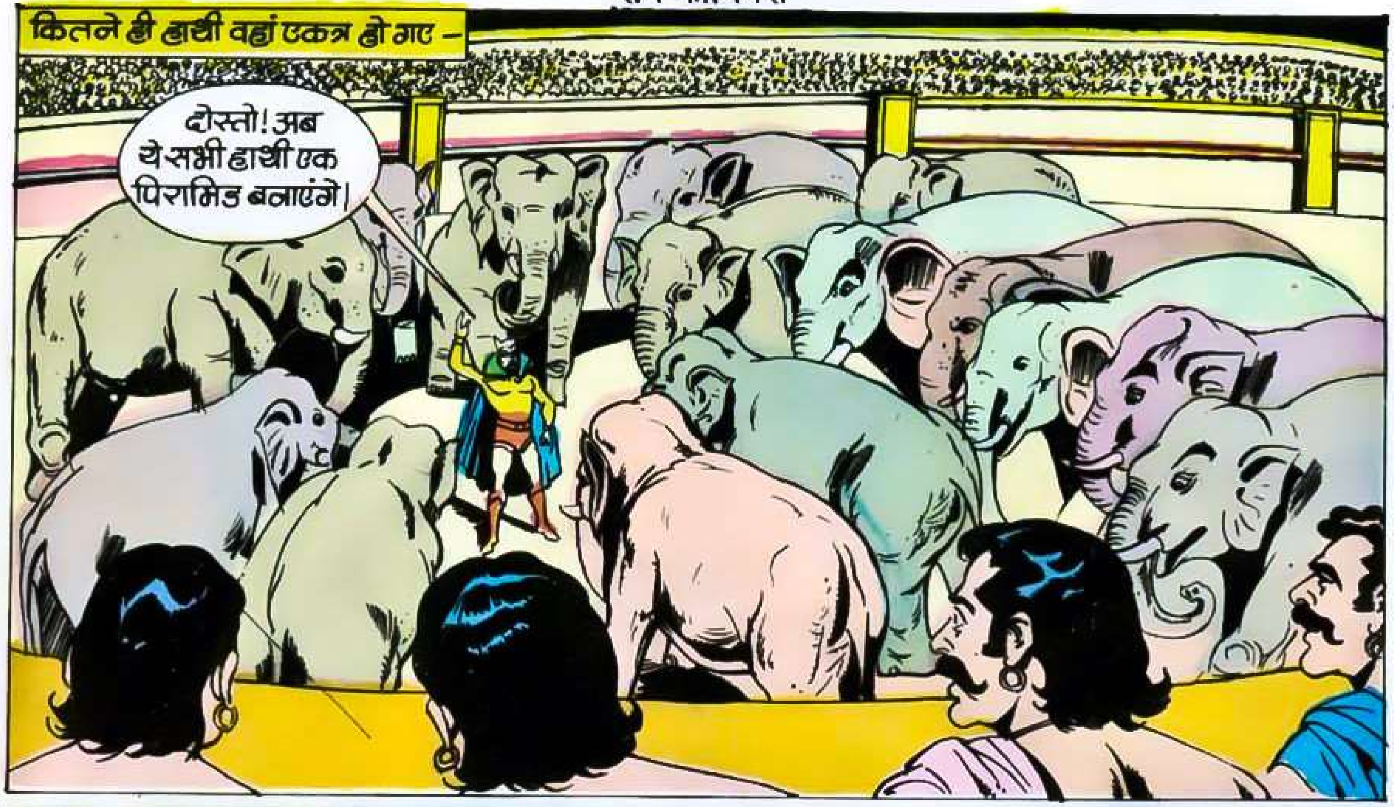
कितने ही हाथी वहां एकत्र हो गए –
दोस्तो! अब ये सभी हाथी एक पिरामिड बनाएंगे।

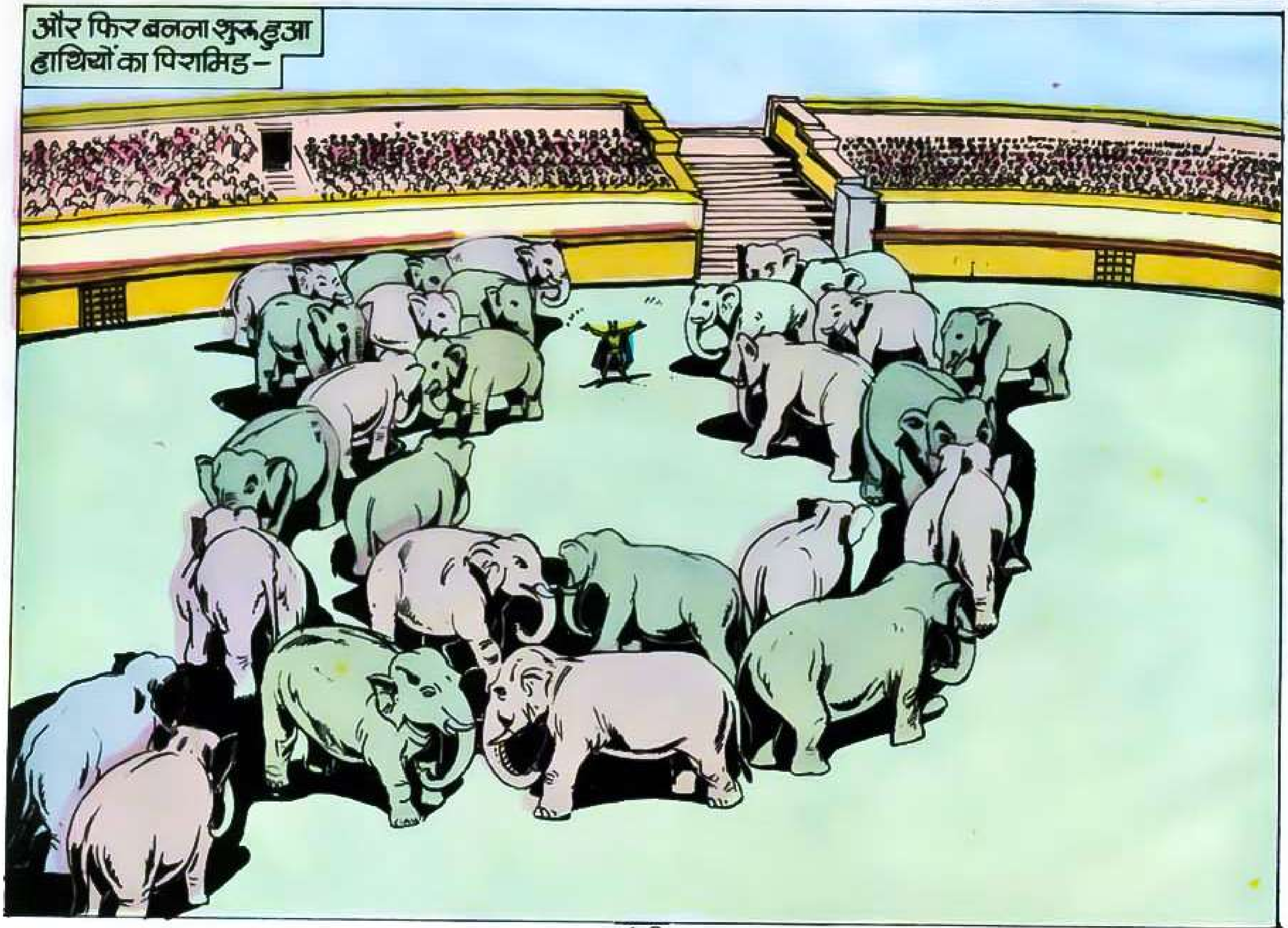
और फिर बनना शुरू हुआ हाथियों का पिरामिड –

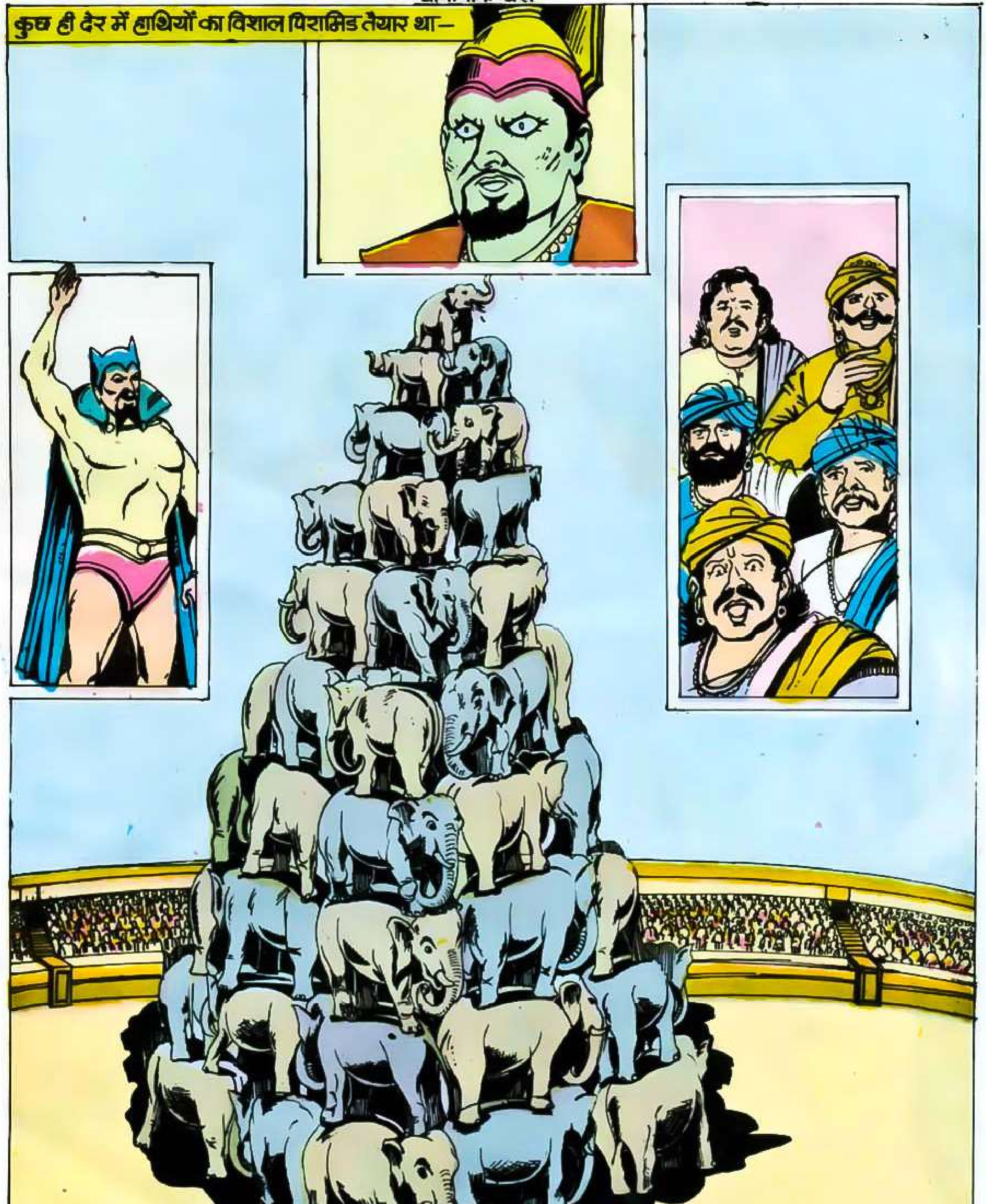
कुछ ही देर में हाथियों का विशाल पिरामिड तैयार था—

कुछ ही पल बाद जब सम्मोहन टूटा तो वहां कोई हाथी तो क्या, हाथी का बच्चा भी नहीं नजर आ रहा था-
तड़ तड़ तड़
दोस्तो! अब मैं आपको सम्मोहन शक्ति का दूसरा चमत्कार दिखाता हूं।
क्रीड़ास्थल में बैठे दर्शक केवल खुद को जीवित अनुभव करेंगे जबकि यहां बैठे सभी लोगों को निर्जीव।

अगले ही पल–
अरे! क्रीड़ास्थल में सब मरे पड़े हैं। केवल मैं ही जिंदा हूं।
यह क्या हुआ? सभी लोग कैसे मर गये? मैं बच गया।
अरे! सब मरे हुए लोग। मैं तो जीवित हूं। मुझे इनके बीच नहीं बैठना चाहिए।
इस युवती ने कितना सुंदर हार पहन रखा है। यह तो मर चुकी है, और कोई भी जीवित नहीं है। मैं इसका हार उतार लेती हूं।
उस क्रीड़ास्थल में सभी अपने को जीवित और शेष सबको निर्जीव अनुभव कर रहे थे–
भगवान की अनुकम्पा है कि मैं जीवित हूं। इतने सारे निर्जीव लोगों के बीच मेरा बच जाना महान आश्चर्य है।

कुछ देर के बाद जादूगर शूतान ने अपना सम्मोहन तोड़ा-
अरे वाह! इसने तो कमाल कर दिया।
सचमुच आश्चर्यजनक।
इस जादूगर ने तो अद्भुत सम्मोहन किया है।
देश-विदेश के सम्राटों ने जादूगर शूतान की बहुत प्रशंसा की -
सचमुच महान है।
इसे ओलम्पाक में भेजना चाहिए।
ऐसा आश्चर्य तो कभी देखा, सुना नहीं।
तालियों की गूंज और दर्शकों के भारी शोर के बीच महाबली फूचांग ने घोषणा की-
दोस्तो! आपका निर्णय मुझे स्वीकार है। मैं जादूगर शूतान को ओलम्पाक के लिए चुन रहा हूं।

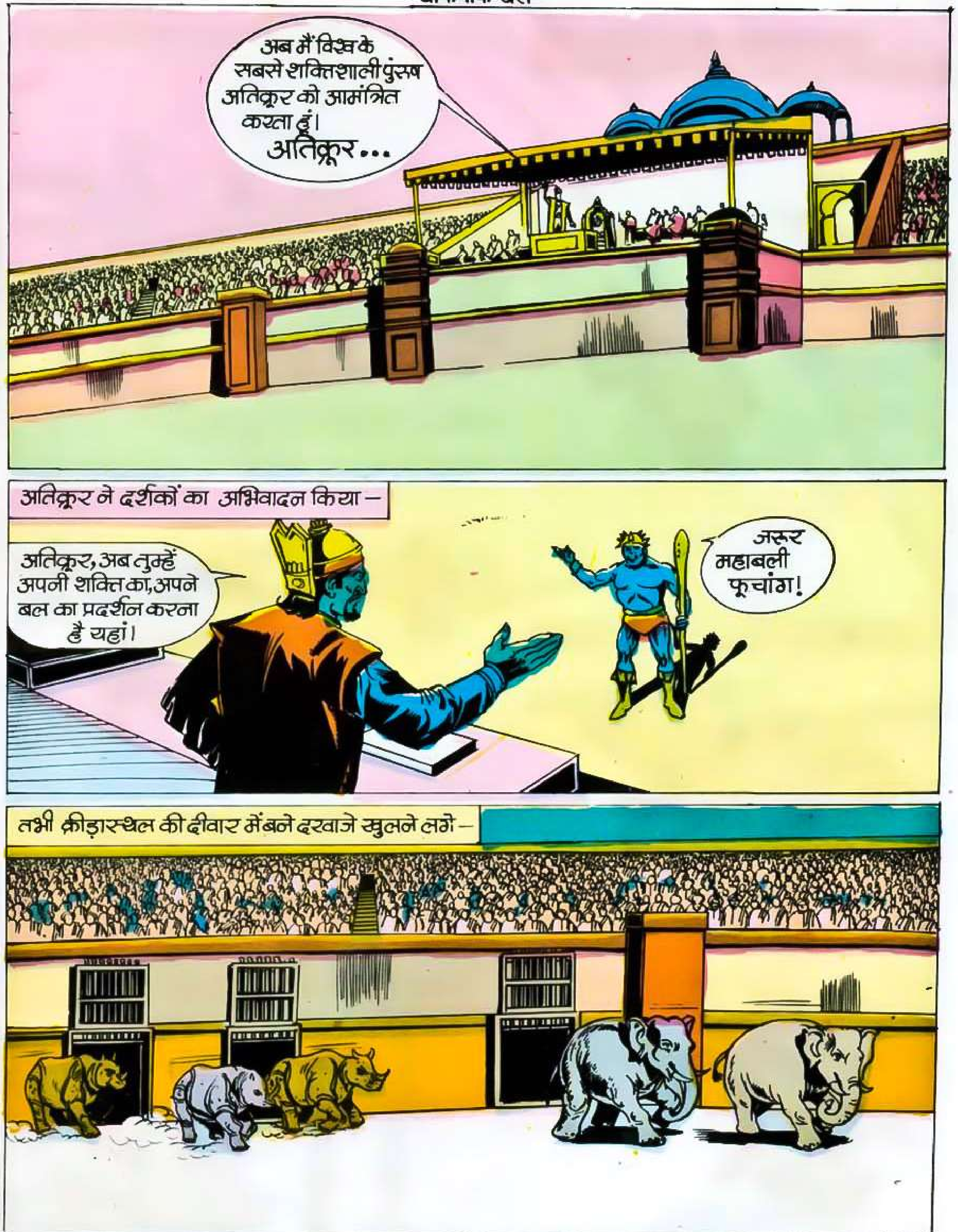
अब मैं विश्व के सबसे शक्तिशाली पुरुष अतिक्रूर को आमंत्रित करता हूं। अतिक्रूर...
अतिक्रूर ने दर्शकों का अभिवादन किया –
अतिक्रूर, अब तुम्हें अपनी शक्ति का, अपने बल का प्रदर्शन करना है यहां।
जरूर महाबली फूचांग!
तभी क्रीड़ास्थल की दीवार में बने दरवाजे खुलने लगे –

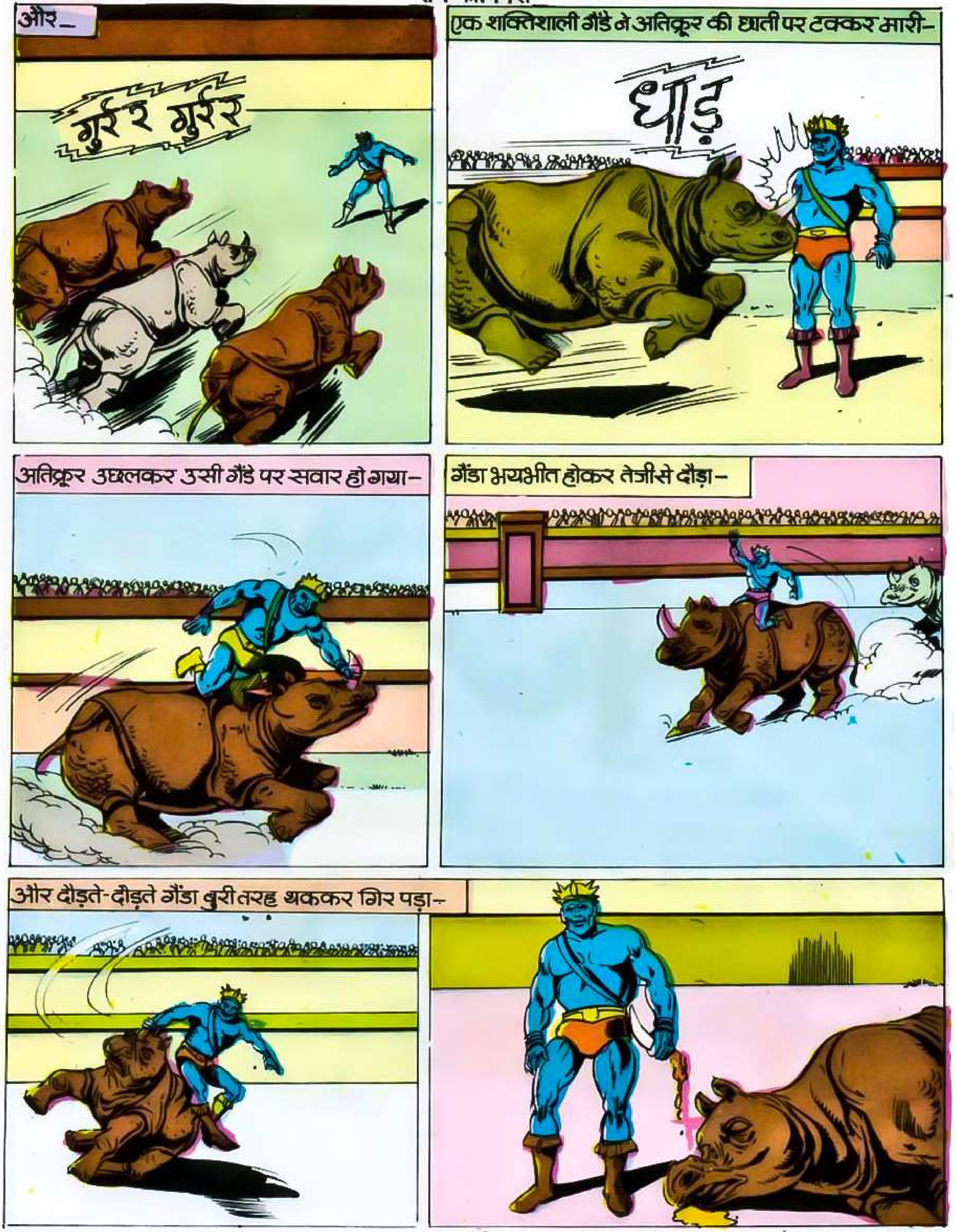
और_
गुर्रर गुर्रर
एक शक्तिशाली गैंडे ने अतिक्रूर की छाती पर टक्कर मारी-
धाड़
अतिक्रूर उछलकर उसी गैंडे पर सवार हो गया-
गैंडा भयभीत होकर तेज़ी से दौड़ा-
और दौड़ते-दौड़ते गैंडा बुरी तरह थककर गिर पड़ा-

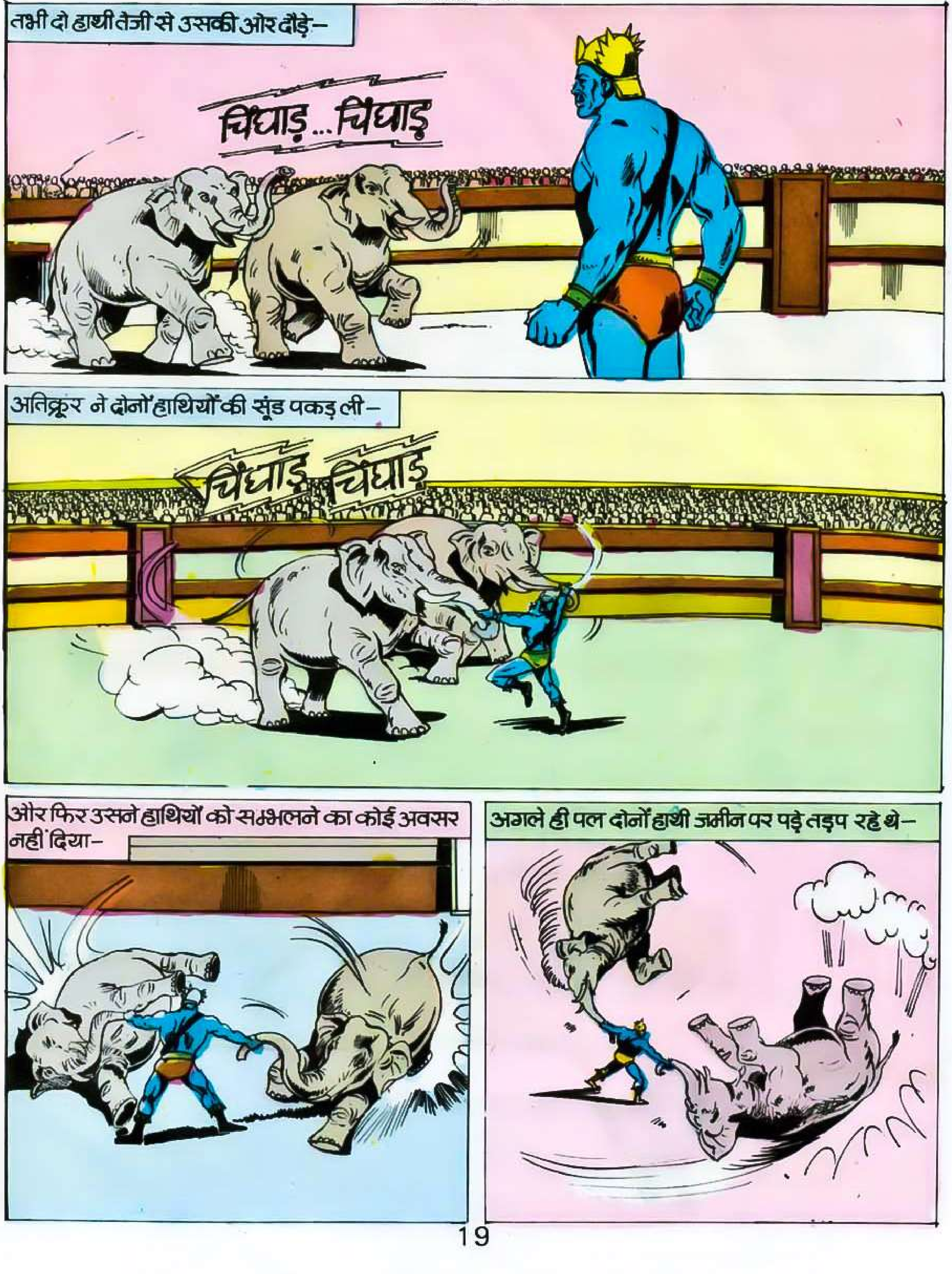
तभी दो हाथी तेजी से उसकी ओर दौड़े–
चिंघाड़...चिंघाड़
अतिक्रूर ने दोनों हाथियों की सूंड पकड़ ली–
चिंघाड़ चिंघाड़
और फिर उसने हाथियों को सम्भलने का कोई अवसर नहीं दिया–
अगले ही पल दोनों हाथी जमीन पर पड़े तड़प रहे थे–

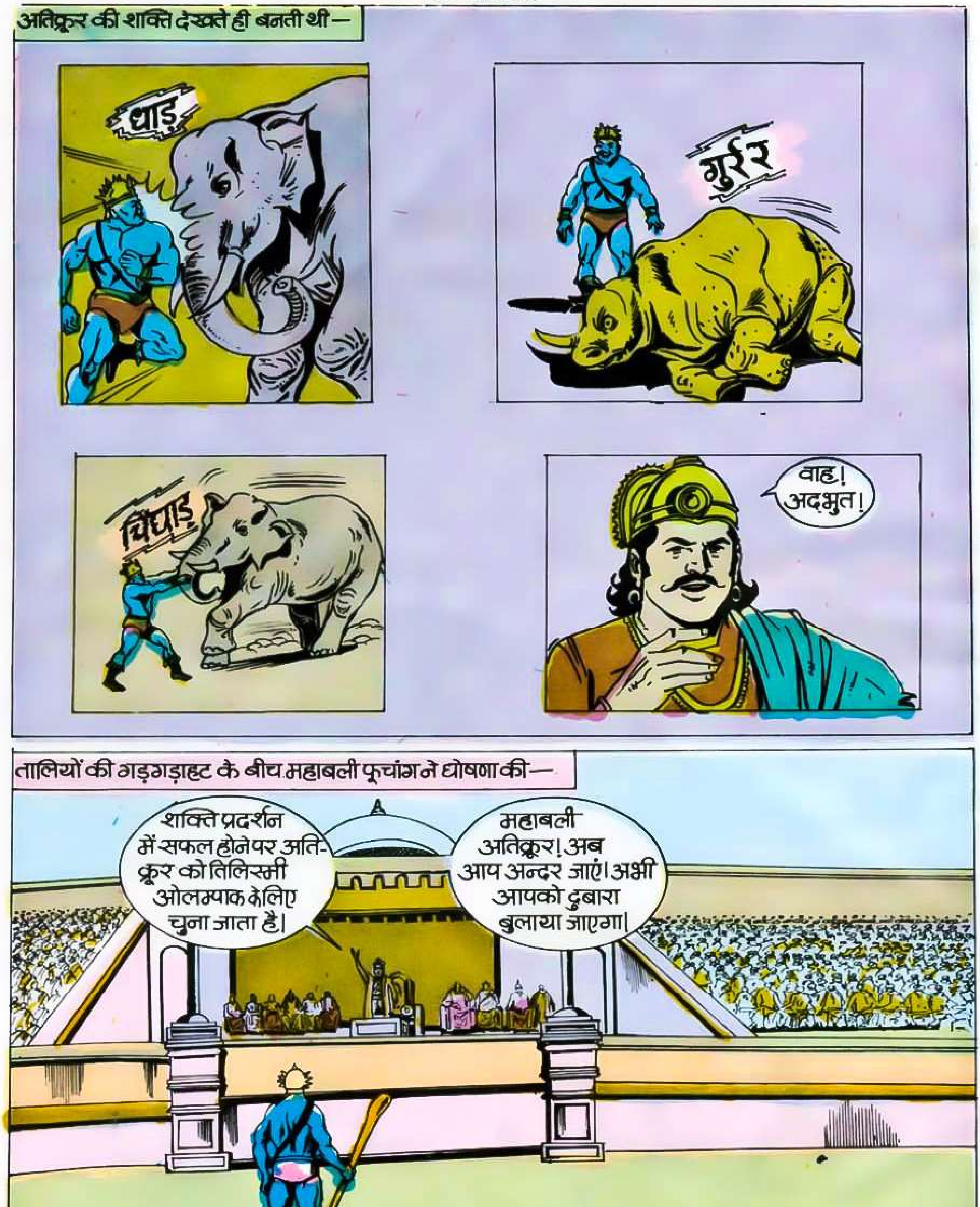

अतिक्रूर की शक्ति देखते ही बनती थी—
धाड़
गुर्रर
चिंघाड़
वाह! अद्‌भुत!
तालियों की गड़गड़ाहट के बीच महाबली फूचांग ने घोषणा की—
शक्ति प्रदर्शन में सफल होने पर अति-क्रूर को तिलिस्मी ओलम्पाक के लिए चुना जाता है।
महाबली अतिक्रूर! अब आप अन्दर जाएं। अभी आपको दुबारा बुलाया जाएगा।
और अतिक्रूर के जाने के बाद...

...हर दर्शक के दिमाग में एक ही तूफान था—
जाने अब कौन आएगा?
पता नहीं, क्या आश्चर्य दिखाएंगे महाबली फूचांग अब?
लेकिन इससे पहले कि उनके प्रश्नों का सही जवाब मिलता—
गड़ गड़ गड़ गड़
और सबके चेहरों पर खिंच गईं आतंक की रेखाएं—
धरती का सीना चीरकर निकला भयानक दैत्य।

किन्तु तभी एक मानव भागता हुआ उसके सामने आ गया—
और एक निष्फल सा दुस्साहस किया उसने—
जिसने दैत्य को बुरी तरह से गुस्सा दिला दिया—
और—
दैत्य झुका—

और अगले ही क्षण चीखें निकल गईं सभी दर्शकों की। दैत्य ने मैदान की धरती का एक बड़ा टुकड़ा उखाड़कर अपने हाथों में उठा लिया –
नहींऽऽ ईईऽऽऽ
भोकाल
अब कुछ करना होगा।
उफ! यह अब नहीं बचेगा।

और आलोप –
राज कॉमिक्स
भोकाल बन गया।

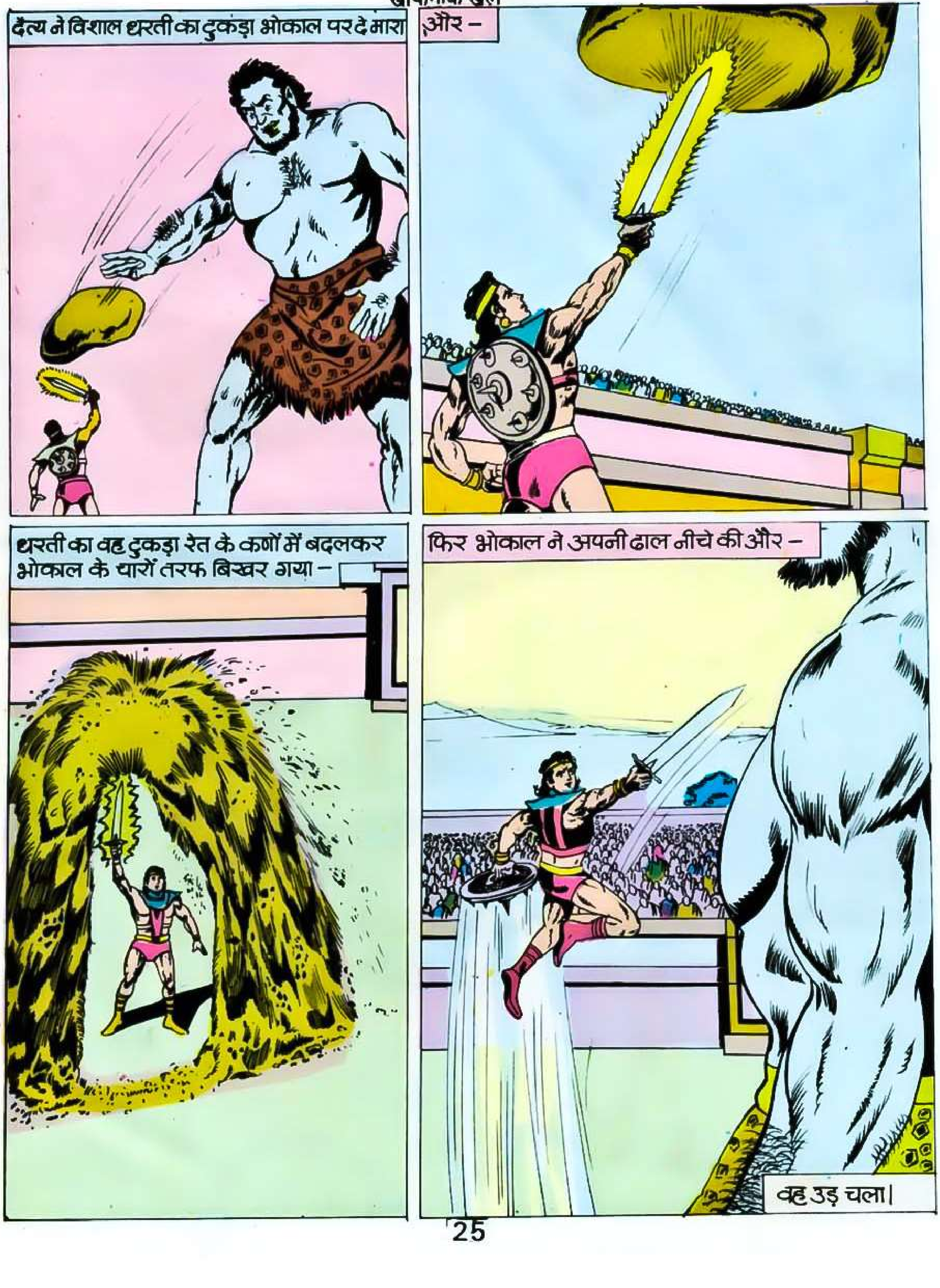
दैत्य ने विशाल धरती का टुकड़ा भोकाल पर दे मारा
और –
धरती का वह टुकड़ा रेत के कणों में बदलकर भोकाल के चारों तरफ बिखर गया –
फिर भोकाल ने अपनी ढाल नीचे की और –
वह उड़ चला।

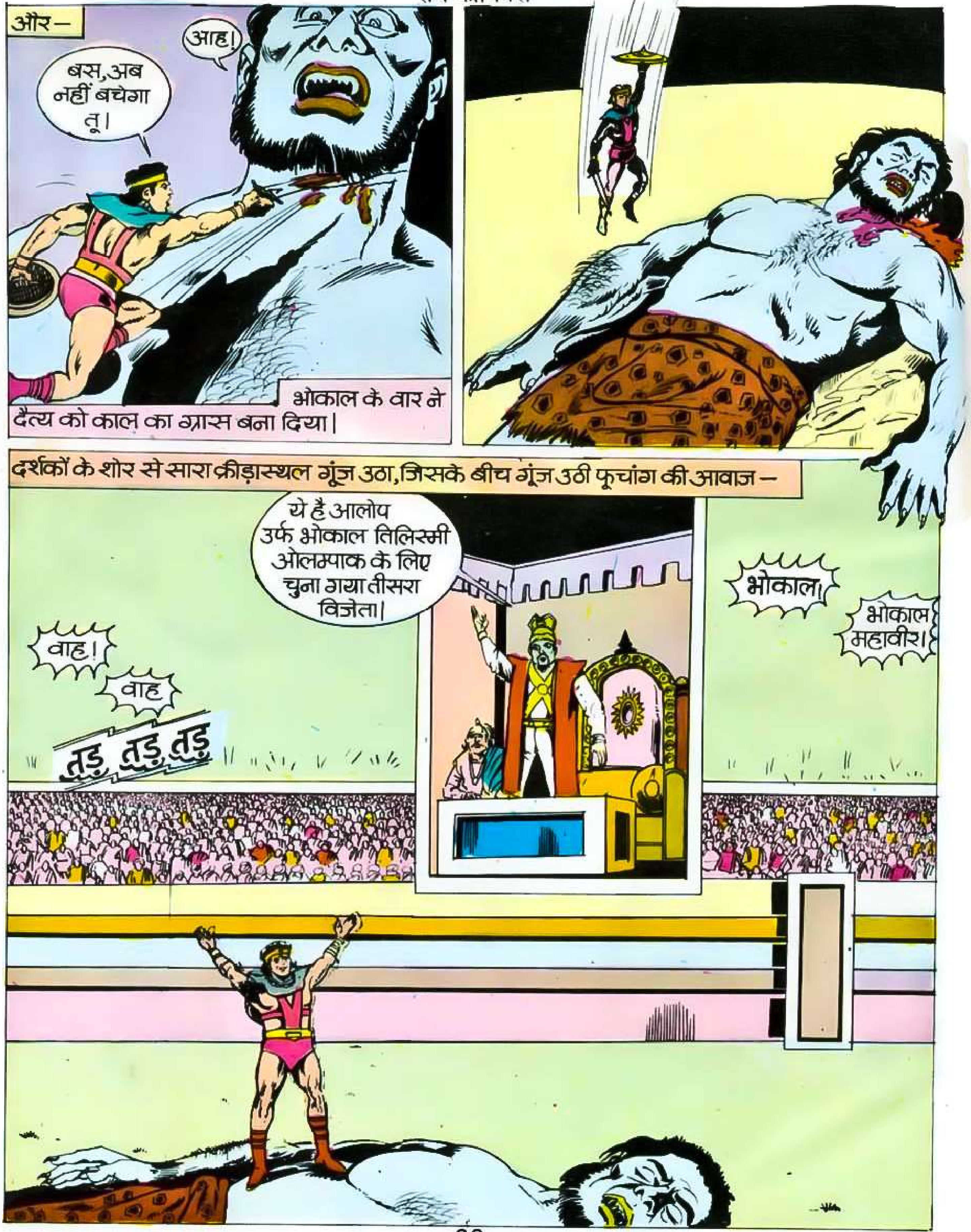
और –
आह!
बस, अब नहीं बचेगा तू।
भोकाल के वार ने दैत्य को काल का ग्रास बना दिया।
दर्शकों के शोर से सारा क्रीड़ास्थल गूंज उठा, जिसके बीच गूंज उठी फूचांग की आवाज –
ये है आलोप उर्फ भोकाल तिलिस्मी ओलम्पाक के लिए चुना गया तीसरा विजेता।
भोकाल।
भोकाल महावीर।
वाह!
वाह
तड़ तड़ तड़

महाबली फूचांग का खूंखार स्वर गूंजा-
अब मैं इन तीनों विजेताओं को तिलिस्मी ओलम्पाक भेजूंगा
तभी क्रीड़ास्थल पर एक बिजली ने प्रवेश किया -
ठहरो! मैं भी तिलिस्मी ओलम्पाक में भाग लेना चाहती हूं।
नहीं! तिलिस्मी ओलम्पाक में सर्वोत्तम, महाबली, महावीर इंसान ही भाग ले सकते हैं।
मैं किसी भी सर्वोत्तम, महाबली, महावीर से लड़ने को तैयार हूं।
नहीं, हमें चींटी को हाथी से लड़ाने में समय नहीं गंवाना।
तुम्हें चींटी को हाथी से लड़वाना ही होगा। नहीं तो तुम मुझसे मुकाबले के लिए तैयार हो जाओ।

फूचांग ने मुस्कराकर दो बार ताली बजाई और –
तड़ तड़
दोनों भयानक अंदाज में तुरीन की तरफ बढ़े –
तभी एक बिजली सी कौंधी –
कड़ क...ड़-कड़ाक
चल कपाला!
कपाला उछली और –
आह!
शाबास कपाला!
क्या बला थी वह ?

कपाला ने फिर छलांग लगाई, किन्तु इस बार वह फंस गई —
म्याऊं
दूसरे राक्षस ने भी तब तक जंजीर वाला गोला प्राप्त कर लिया था
उफ!
सर्र र्र
दोनों राक्षस उन्हें लिये आकाश में उड़ चले —
हा हा हा हमसे क्या खाकर लड़ने आई थी बालिका!
उंह
क्रीड़ास्थल के शांत वातावरण में गूंज उठी फूचांग की हड्डियों को जमा देने वाली खौफनाक हंसी —
हा हा हा चींटी और हाथी का मुकाबला।
किन्तु-
तभी दोनों राक्षसों की चीखों से कांप उठा आकाश —
आह ऽऽ
धर्ई
आह ऽऽ

दोनों राक्षस कंकालों में बदल गये
म्याऊं
चल कपाला! फूचांग के पास।
और उस बला का यह करतब देख क्रीड़ास्थल में बैठा हर दर्शक स्तब्ध था—
फूचांग के सामने गुर्रा उठी तुरीन--
अब बोलो! भेजोगे ना मुझे 'तिलिस्मी ओलम्पाक' में।
हां,हां, जरूर।
इस निर्णय से सभी दर्शकों में हर्ष की लहर छा गई -
तड़ तड़
वाह वाह

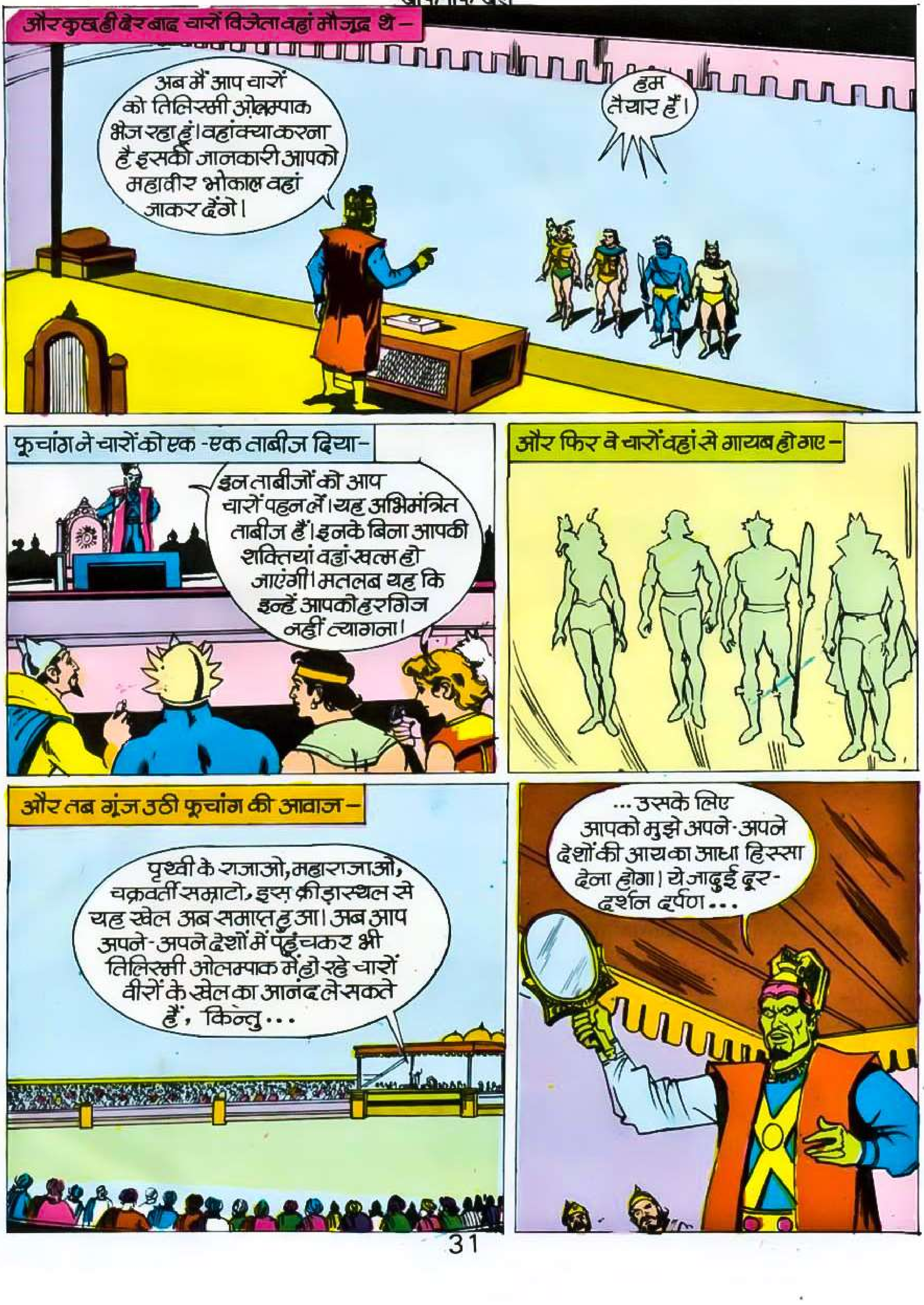
और कुछ ही देर बाद चारों विजेता वहां मौजूद थे –
अब मैं आप चारों को तिलिस्मी ओलम्पाक भेज रहा हूं। वहां क्या करना है इसकी जानकारी आपको महावीर भोकाल वहां जाकर देंगे।
हम तैयार हैं।
फूचांग ने चारों को एक-एक ताबीज दिया –
इन ताबीजों को आप चारों पहन लें। यह अभिमंत्रित ताबीज हैं। इनके बिना आपकी शक्तियां वहां खत्म हो जाएंगी। मतलब यह कि इन्हें आपको हरगिज नहीं त्यागना।
और फिर वे चारों वहां से गायब हो गए –
और तब गूंज उठी फूचांग की आवाज –
पृथ्वी के राजाओ, महाराजाओ, चक्रवर्ती सम्राटो, इस क्रीड़ास्थल से यह खेल अब समाप्त हुआ। अब आप अपने-अपने देशों में पहुंचकर भी तिलिस्मी ओलम्पाक में हो रहे चारों वीरों के खेल का आनंद ले सकते हैं, किन्तु...
...उसके लिए आपको मुझे अपने-अपने देशों की आय का आधा हिस्सा देना होगा। ये जादुई दूर-दर्शन दर्पण...

पाठको, आपके दिमाग ने इस अद्भुत कथानक से खूब कुश्ती लड़ी, अब आपके दिमाग में कुछ प्रश्न होंगे, जैसे :-

- महारानी रसीया का क्या हुआ ?
- राजकुमारी सोफिया का कत्ल कैसे हुआ ?
- क्या था तिलिस्मी ओलम्पाक ?
- आलोप, अतिक्रूर, तुरीन व शूतान कौन थे ?
- तिलिस्मी ओलम्पाक में क्या हुआ ?
- तिलिस्मी ओलम्पाक से फूचांग क्या चाहता था ?
- आलोप के भोकाल बनने का क्या रहस्य था ?
- इन सब प्रश्नों के जवाब आपको मिलेंगे ...

'तिलिस्मी ओलम्पाक' ...में।

चित्रकथा आपको कैसी लगी, इसके बारे में लिखें:
संजय गुप्ता, 1-03-दरीबा कलां, दिल्ली-110006

समाप्त

मुद्रक : जापान आर्ट प्रैस

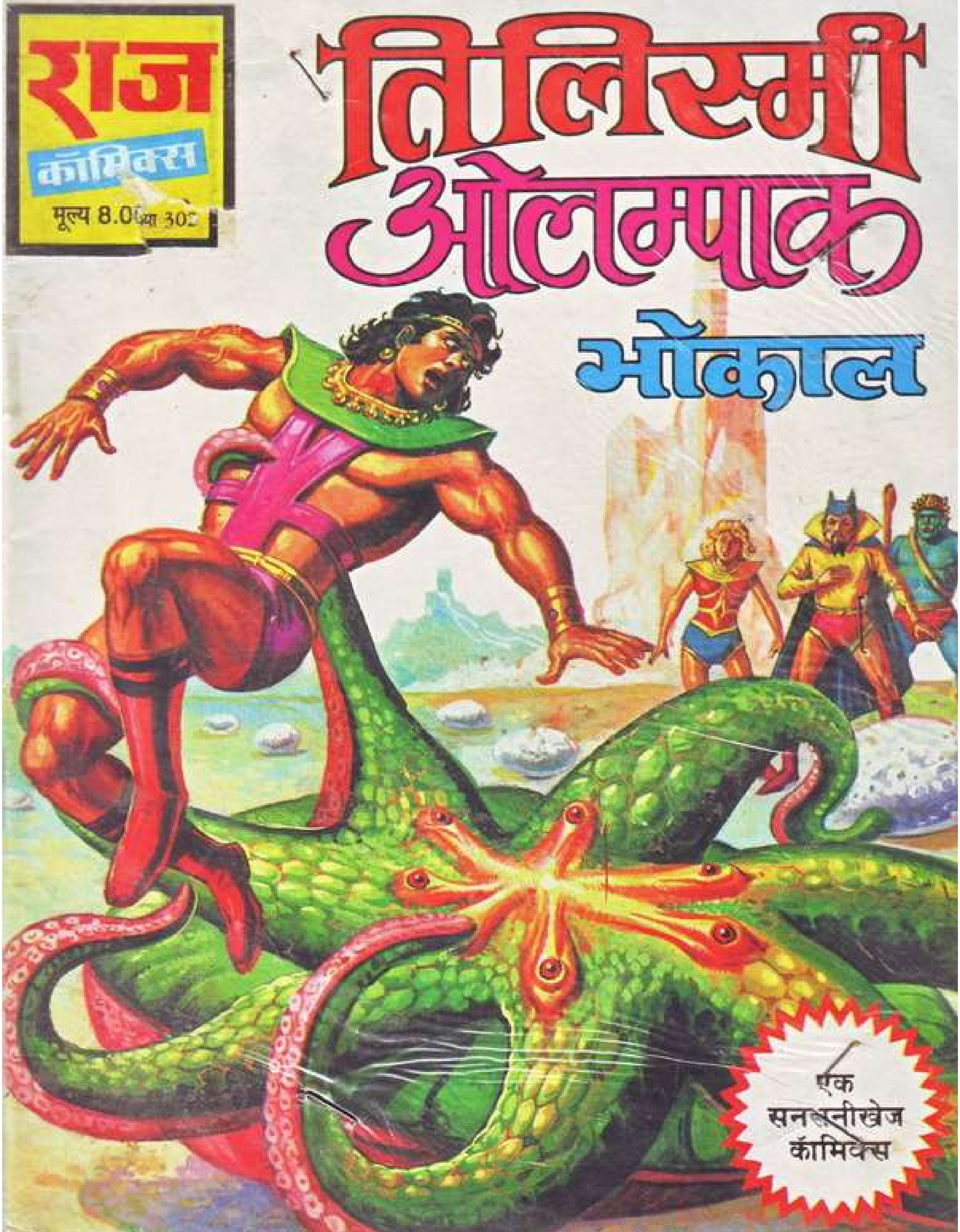
राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.0
तिलिस्मी
ओलम्पाक
भोकाल
एक
सनसनीखेज
कॉमिक्स

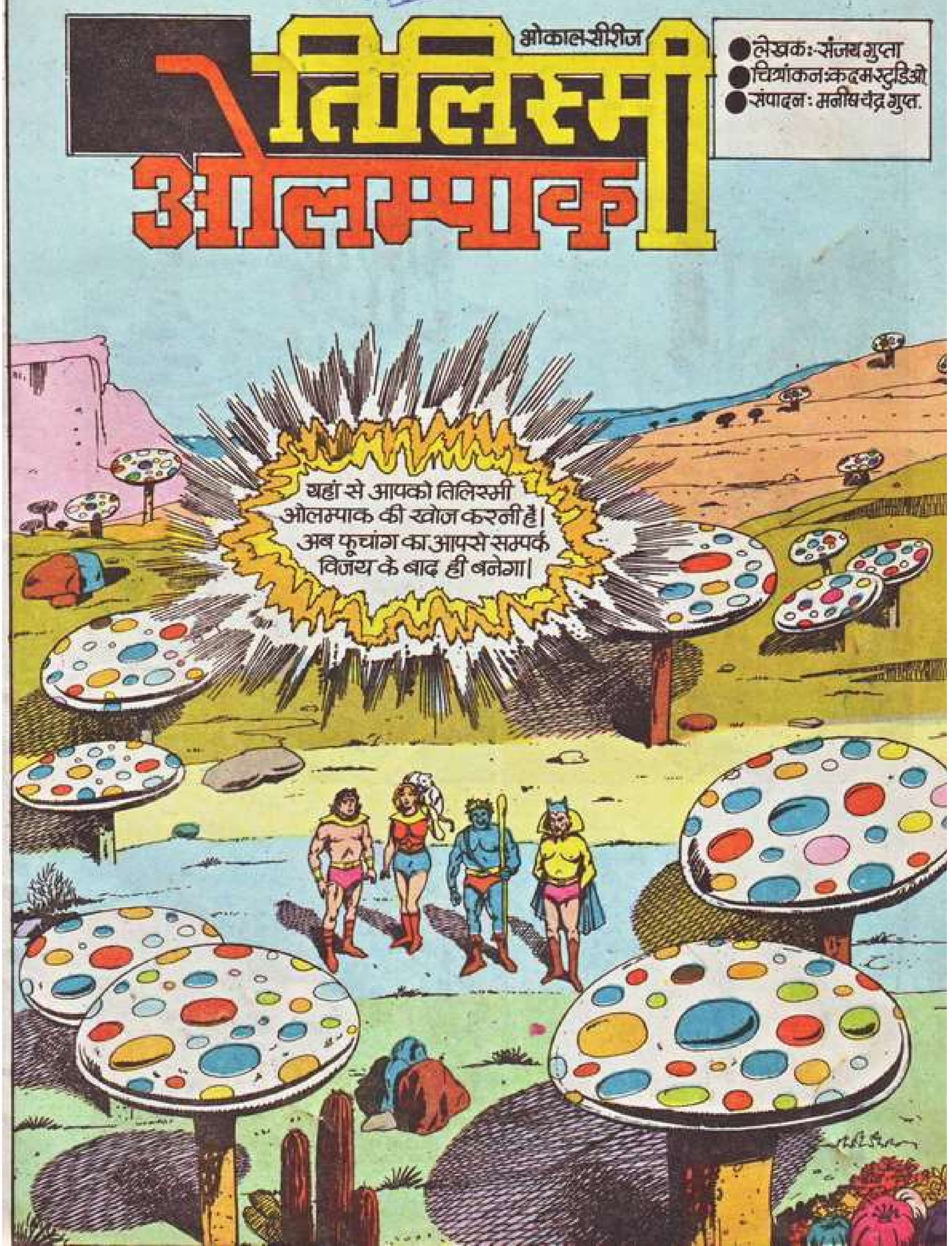
भोकाल सीरीज
तिलिस्मी ओलम्पाक
लेखकः संजय गुप्ता
चित्रांकनः कदम स्टुडिओ
संपादनः मनीष चंद्र गुप्त.
यहां से आपको तिलिस्मी ओलम्पाक की खोज करनी है। अब फुचांग का आपसे सम्पर्क विजय के बाद ही बनेगा।

इसके साथ ही वहां छा गई एक गहरी खामोशी जिसे तोड़ा तुरीन ने—
भोकाल! हमें बताओ कि अब हमें क्या करना है?
तलाश
तलाश किसकी?
तिलिस्मी ओलम्पाक की।
भोकाल की सम्मोहक आवाज ने सबको बांध लिया था-
हां, महाबली फूचांग के ग्रह के इष्टदेव खजुरा ने इस ग्रह पर तिलिस्मी ओलम्पाक का निर्माण किया था और महाबली फूचांग चाहते हैं कि हम उसे ढूंढें और उसका तिलिस्म तोड़ दें।
और इसके बदले हमें क्या मिलेगा?
बोल उठा भोकाल—
हमें मिलेगा सम्मान। हम में से जो भी वीर तिलिस्म तोड़ेगा उसे 'महावीर' की उपाधि मिलेगी और मिलेगा तिलिस्मी ओलम्पाक में कैद खजाना।
मुंह खुले रह गए उनके—
खजाना!
हां, बहुत बड़ा खजाना।
लेकिन खजाना क्या यूंही मिल जाया करता है?

नहीं! बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं। बड़ा खजाना बड़े पापड़ —
म्याऊँ ऽऽऽ
मौत बना वह सरीसृप चारों के सपने तोड़ने के लिए उनके सिरों तक पहुंच चुका था।
चारों ऐसे उछलकर खड़े हुए जैसे उनके नीचे की धरती जल उठी हो —
क्रिंया या आ
क्या बला है यह?
हे भगवान यह क्या?
वाह!
क्याला डर गई बेचारी

शूतान कूद पड़ा चारों के बीच से निकलकर मैदान में-
इससे मैं निपटता हूं।
शूतान क्या इस सरीसृप को बांध पाएगा।
कुछ किया तो उस जादूगर ने –
और तभी वहां एक और सरीसृप पैदा हो गया...
सम्मोहन से तैयार एक नकली सरीसृप-
और असली सरीसृप एक ऐसे सरीसृप से लड़ रहा था
जो कि वहां था ही नहीं–
क्रिया SSSSSS
हा हा हा भई वाह, देखो कैसे उछल रहा है।
हा हा हा मजा आ गया। खूब बेवकूफ बनाया इसे शूतान ने।

क्रिंया
किन्तु तभी असली सरीसृप की पूंछ ने कहर ढा दिया –
हाय!
शैतान की हड्डियाँ चीख-चिल्ला उठीं। और उसका सम्मोहन टूट गया।
सरीसृप को जैसे होश आया —
उफ। हाय मार डाला रे!
धप्प
सरीसृप की नजर पड़ी तुरीन पर —
क्रिंया SSSSSSS
आ भई! हम भी अपनी शक्ति आजमा लें तुझपर!
उसने अपनी पूंछ उछाली –
बड़ा कड़वा अनुभव हुआ सरीसृप को।

गुस्से से पागल हो उठा वह —
हर्र
उफ! बचो!
तभी पीछे से अतिक्रूर ने सरीसृप की पूंछ पकड़ ली —
मुझ से भी तो थोड़ा खेल ले सरीसृप!
सरीसृप ने मुड़कर देखा —
हम्फ! हम्फ!
लेकिन शायद उसे पता था यह मच्छर उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता
लेकिन अतिक्रूर ने तुरीन को तो बचने का अवसर दे ही दिया था —
भोकाल कुछ करो!
पहले अतिक्रूर को शक्ति आजमाने दो।
किन्तु अतिक्रूर उसकी पूंछ के नीचे दब कर रह गया —
हाय!
अब कुछ करना पड़ेगा शायद।
उफ! यह अतिक्रूर तो मरेगा, आज ज्यादा खेलने के चक्कर में!
म्याऊं
फिर वह पूंछ का दबाव बढ़ाने लगा।

दबाव बढ़ता जा रहा था, पूंछ का।
दम घुटता जा रहा था, अतिक्रूर का।
तभी-
थड़ाक
एक जबरदस्त ठोकर टकराई सरीसृप के थूथन पर।
सरीसृप ने अपना विशाल जबड़ा खोला और -
उफ! भोकाल बचो।
लेकिन तब तक सरीसृप का जबड़ा बंद हो चुका था -
जैसे समय रुक गया हो -
और-

सरीसृप के जबड़े के अंदर ही...
भोऽऽऽकाऽऽऽऽल
आलोप--
भोकाल बन गया।

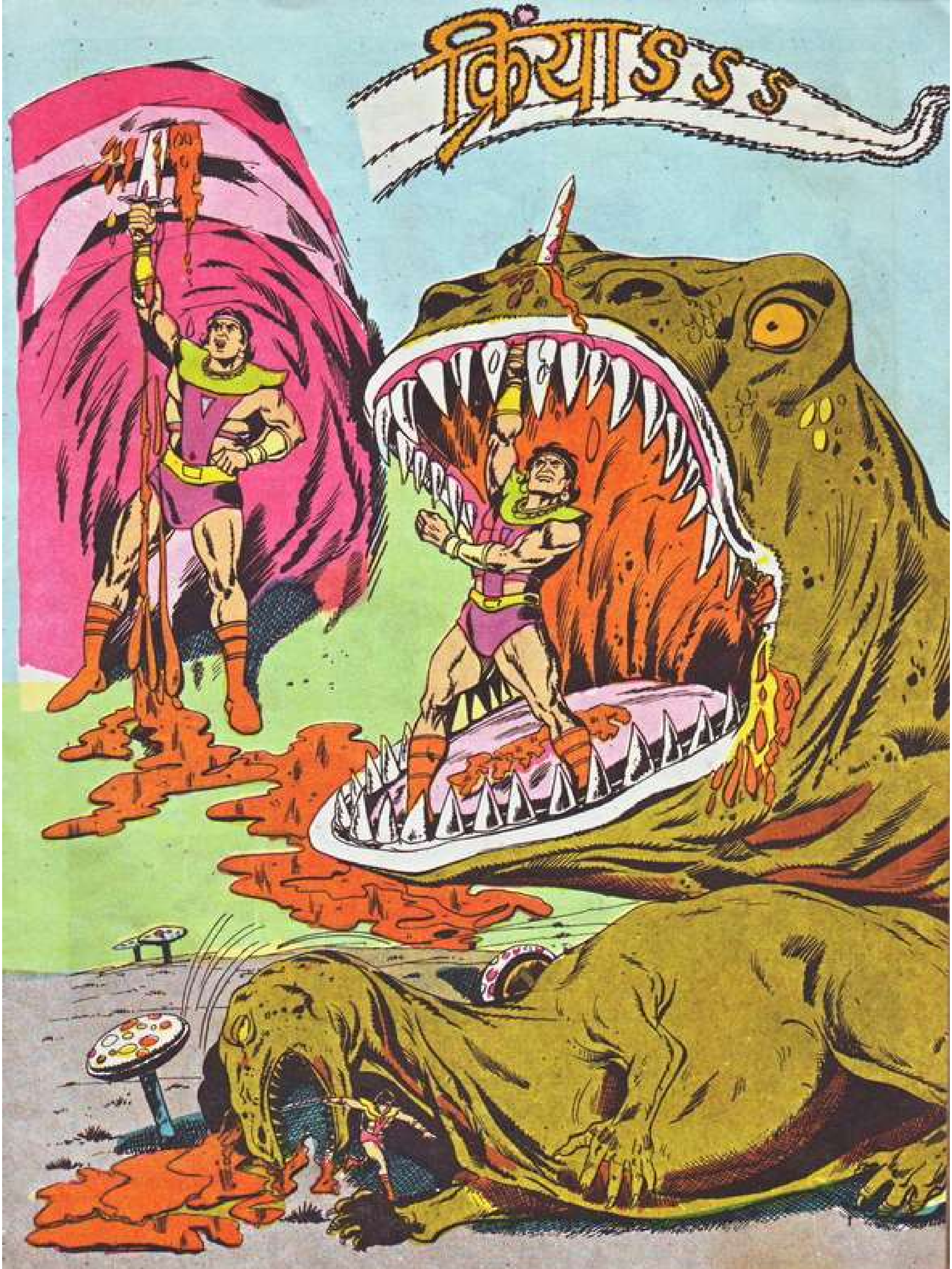

क्रियाऽऽऽ

अतिक्रूर भी स्वतन्त्र हो गया –
धन्यवाद मित्र!
तत्पश्चात –
वाह! भोकाल वाह! शाबास।
म्याऊँ
भोकाल!
भयानक हुआ है। जाने आगे क्या होगा?
मुश्किल यह है कि हम वापस भी नहीं जा सकते।
एक बार तो मैंने सोचा कि भोकाल तो गया।
तुम सब बहुत जल्दी डर गए।
और फिर चारों आगे बढ़ चले।
इधर पृथ्वी पर –
वाह! बहुत खूब।
मजा आ गया। यह खौफनाक खेल देखकर।
मुझे भोकाल बहुत अच्छा लगा।
क्या रोमांचक लड़ाई थी।
सभी राजा-महाराजा तिलिस्मी ओलम्पाक में खेले जा रहे उस खौफनाक खेल का आनंद ले रहे थे।

अति रोमांचक
वाह फूचांग तुम्हारा तिलिस्मी ओलम्पाक लाजवाब है।
जियो भोकाल।
विकासनगर में भी राजा विकासमोहन, रानी मोहिनी, राजकुमारी श्वेता मोहन, राजकुमार अंकित मोहन, महामंत्री चंद्रमणि व सेनापति प्रवीनसिंह के साथ बैठे वह खेल देख रहे थे।
काश! मैं भोकाल होता तो सबके पेट का खून निकाल देता।
मैं भी तिलिस्मी ओलम्पाक में जाऊंगी।
बिना मदिरा के यह लोग वहां रहते कैसे होंगे?
महाराज! आपके मित्र राजा फूचांग ने वाकई दिलचस्प चीज बनाई है।
यह लोग समझ नहीं रहे हैं, मुझे तो लगता है, यह फूचांग कोई गहरा षड्यंत्र रच रहा है।
हां प्रिय, तबियत प्रसन्न हो गई। तुरीन को भी तो देखो, कैसी साहसी सुन्दरी है।
किन्तु आने वाले बड़े तूफान से वे सभी अनभिज्ञ थे।

राजकुमारी श्वेता मोहन के छोटे से मस्तिष्क में आंधियां चल रही थीं—
मुझे तिलिस्मी ओलम्पाक में जरूर जाना है।
किंतु वह जा किधर रही थी।
वह ठिठकी—
हमें अंदर जाना है, महाबली फूचांग से मिलने।
नहीं, अभी तुम अंदर नहीं जा सकती। महाबली फूचांग अभी अति व्यस्त हैं।
उफ! यह तो फूचांग का कक्ष है।
तुरन्त पलट गई वह बालिका, किंतु मन में यह विचार लिए—
मैं अभी मिलूंगी फूचांग से और जरूर मिलूंगी।
पता नहीं क्या करना चाहती है यह।
जल्दी ही वह राजमहल की छत पर आ गई। ठीक उस जगह जिसके नीचे फूचांग का कमरा था—
हा हा हा विकास मोहन!
राजा विकास मोहन! तुम सब मेरे जाल में फंस चुके हो और जल्दी ही मैं तुम्हारा सर्वनाश कर दूंगा।
खून खौल उठा श्वेता मोहन का फूचांग के जहरीले शब्द सुनकर और…

वह बच्ची अपने आपको रोक ना सकी —
तड़ाक
फूचांग दुष्ट कमीने!
लेकिन वह बच्ची उस शैतान से टकराई थी, जो कि सुरक्षा घेरे में कैद रहता है —
गलत हाथों में पड़ गई बच्ची-
हाहाहा फूचांग से टक्कर हाहाहा मुझसे बढ़कर शक्तिशाली तीन लोकों में कोई नहीं मूर्ख लड़की।
बड़ा शौक है तुझे तिलिस्मी ओलम्पाक जाने का। अब जाना तो पड़ेगा ही, क्योंकि तू बहुत कुछ जान जो गई है।
शैतान के मन में शैतानी विचार-
हाथ उठा उसका और —
गई बकरी शेर की मांद में।
एक मासूम जिन्दगी को खौफनाक मौत के शिकंजे में भेज रहा था नीच।
हा हाहा अब लोगों को इस खौफनाक खेल में और मजा आएगा।

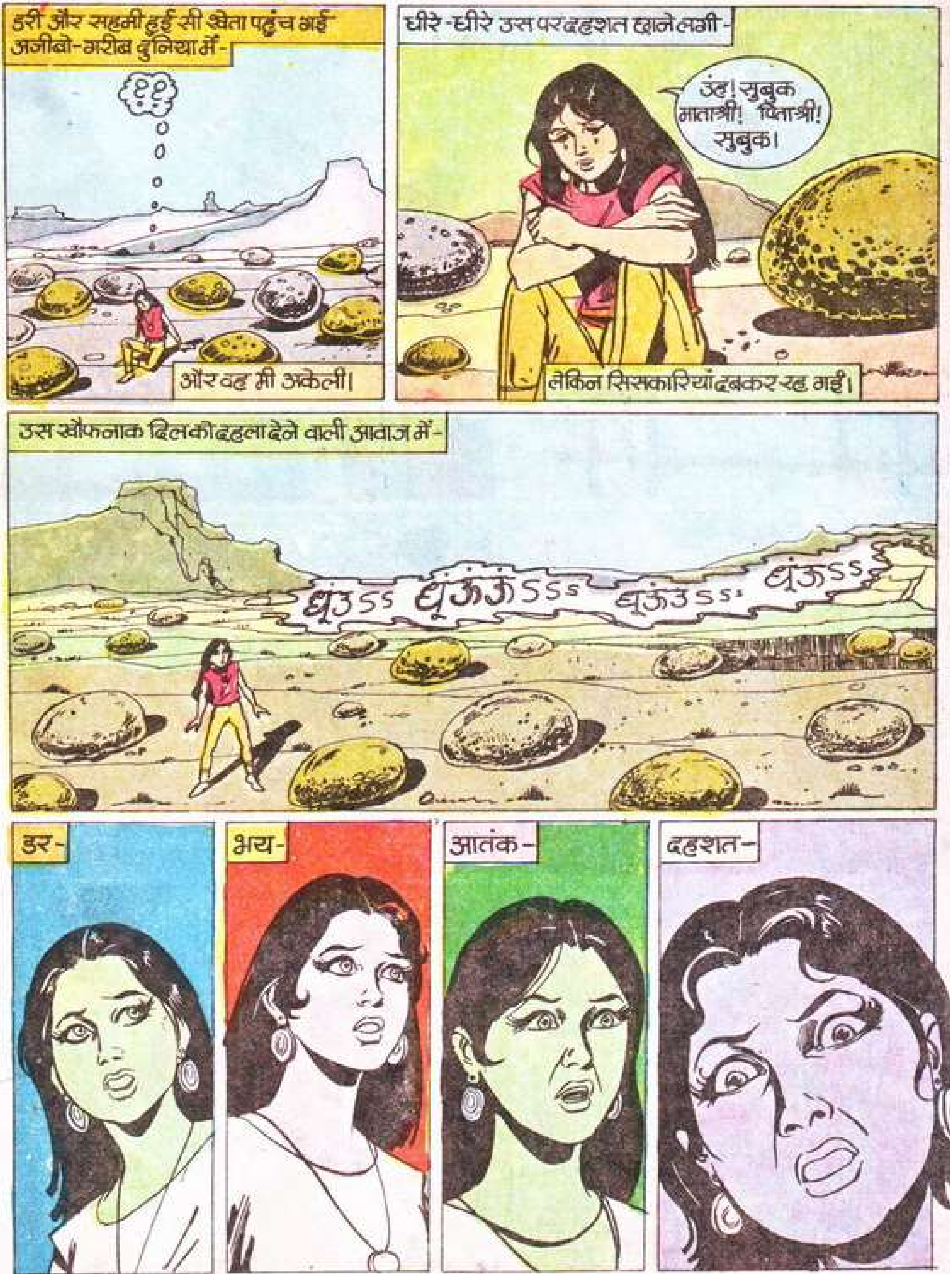
डरी और सहमी हुई सी श्वेता पहुंच गई अजीबो-गरीब दुनिया में -
और वह भी अकेली।
धीरे-धीरे उस पर दहशत छाने लगी -
उंह! सुबुक माताश्री! पिताश्री! सुबुक।
लेकिन सिसकारियां दबकर रह गईं।
उस खौफनाक दिलकी दहला देने वाली आवाज में -
घूंऽऽ घूंऊंऽऽऽ घूऊंउऽऽऽ घूंऊंऽऽ
डर-
भय-
आतंक-
दहशत-

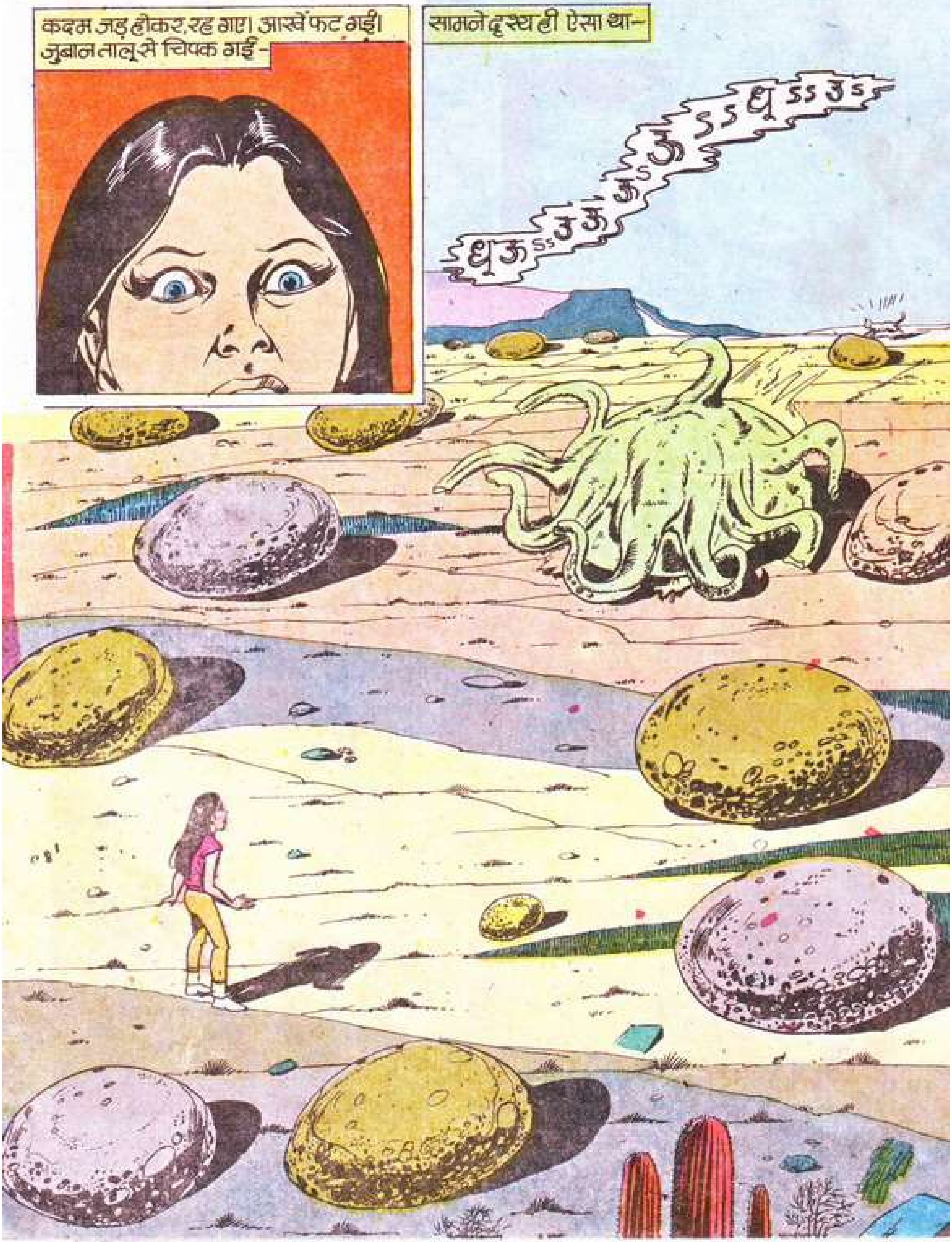

कदम जड़ होकर रह गए। आखें फट गईं।
जुबान तालू से चिपक गई -
सामने दृश्य ही ऐसा था-
धूऊ ऽऽ ऊऊ ऊऽ ऊ ऽऽ धू ऽऽ ऊऽ

कोई और भी था जिसने यह दृश्य देखा था -
म्याऊं
उल्टे पांव दौड़ ली वह -
सिर्फ बिल्ली ही नहीं मानव भी पृथ्वी पर यह दृश्य देखकर रोमांचित हो उठे थे -
उफ! यह बच्ची यह कौन है?
यह बच्ची वहां कैसे पहुंच गई?
हे ईश्वर इसकी रक्षा कर।
और विकासनगर, वहां तो चीख-पुकार मच गई -
मेरी बच्ची श्वेता!
ढूंढो पूरे महल में श्वेता को। वहां कैसे पहुंच गई?
मम्मी! दीदी को बचाओ। अब मैं उससे कभी नहीं लड़ूंगा।
उफ! यह भयानक जानवर। काश, मैं इस समय वहां होता।

भयंकर जीव अब तक श्वेता के सिर पर आ धमका था।
धूऊ धू ऊ
नहीं ई ई sss मुझे मत मारो।
तभी-
हे मेरे ईश्वर! यह तो राजकुमारी श्वेतामोहन है।
महाबली अतिक्रूर ने उसे उठा लिया -
शर्म नहीं आती। बच्ची पर हमला कर रहा था।
और उसे उछाल फेंका -
धू ऊं उ
धड़ाक
वह पलटा फिर उसकी ध्वनि तीव्र, अतितीव्र होती चली गई -
ssधूऊं sss धूऊं sss
सभी असमंजस में थे -
क्या हो गया इसे?
और क्या हो गया। टूट-फूट गया, इसलिए मातम मना रहा है। साले की आंखें भी तो नहीं हैं, जो सम्मोहित ही कर लेता।

पृथ्वी पर विकासनगर में-
मुझे मेरी बेटी चाहिए महाराज! ब हूँ हूँ
धीरज रखो प्रिय! हम कोशिश कर रहे हैं। वैसे भी अब वह सही हाथों में पहुंच गई है।
परन्तु कब तक महाराज! अभी तो वह सभी संकट में है।
मुझे मेरी बहन चाहिए पिताश्री! ऊ ऊ ऊ
और संकट वाकई अभी नहीं टला था-
यह मेरी तरफ बढ़ रहा है। देखता हूं यह क्या नुकसान पहुंचा सकता है।
भयंकर जीव ने अपनी सूंड अतिक्रूर की टांग से चिपका दी और-
आह आ ऽऽऽ
अगले ही क्षण उसने एक जबरदस्त ठोकर भयंकर जीव के मुंह पर जड़ दी-
आह! यह तो साक्षात मौत है। इससे बचो, मेरी आधी शक्ति खींच ली इसने।
अतिक्रूर ही जानता था कि उसकी जबरदस्त ठोकर खाकर भी कितनी मुश्किल से वह भयंकर जीव उसके शरीर से अलग हुआ था।
सब एकदम सजग हो गए, वहां से भागने को तैयार-
मुझे पकड़ लिया इसने तो मैं कैसे बचूंगा?
हमें यहां से दूर हट जाना चाहिए।
लेकिन भागेंगे कैसे?

क्योंकि भयंकर जीव की चीखें सुनकर उसके माता-पिता जो आ पहुंचे थे-
धौं ऽ ऊं ऽ ओ ऽ ऽ ओ ऽ ऽ आ ऽ ऽ अ ऽ ऽ ऽ
कानों को फाड़ देने वाला शोर था वह-
अरे बापरे! हम तो बच्चे से डर-कर भाग रहे थे अभी।
और यहां पहुंच गए मां-बाप।
अब क्या होगा?
होगा क्या? भोकाल चाचा अभी इन्हें मार डालेंगे।
माता-पिता को देख बच्चा खुशी से उछल रहा था-

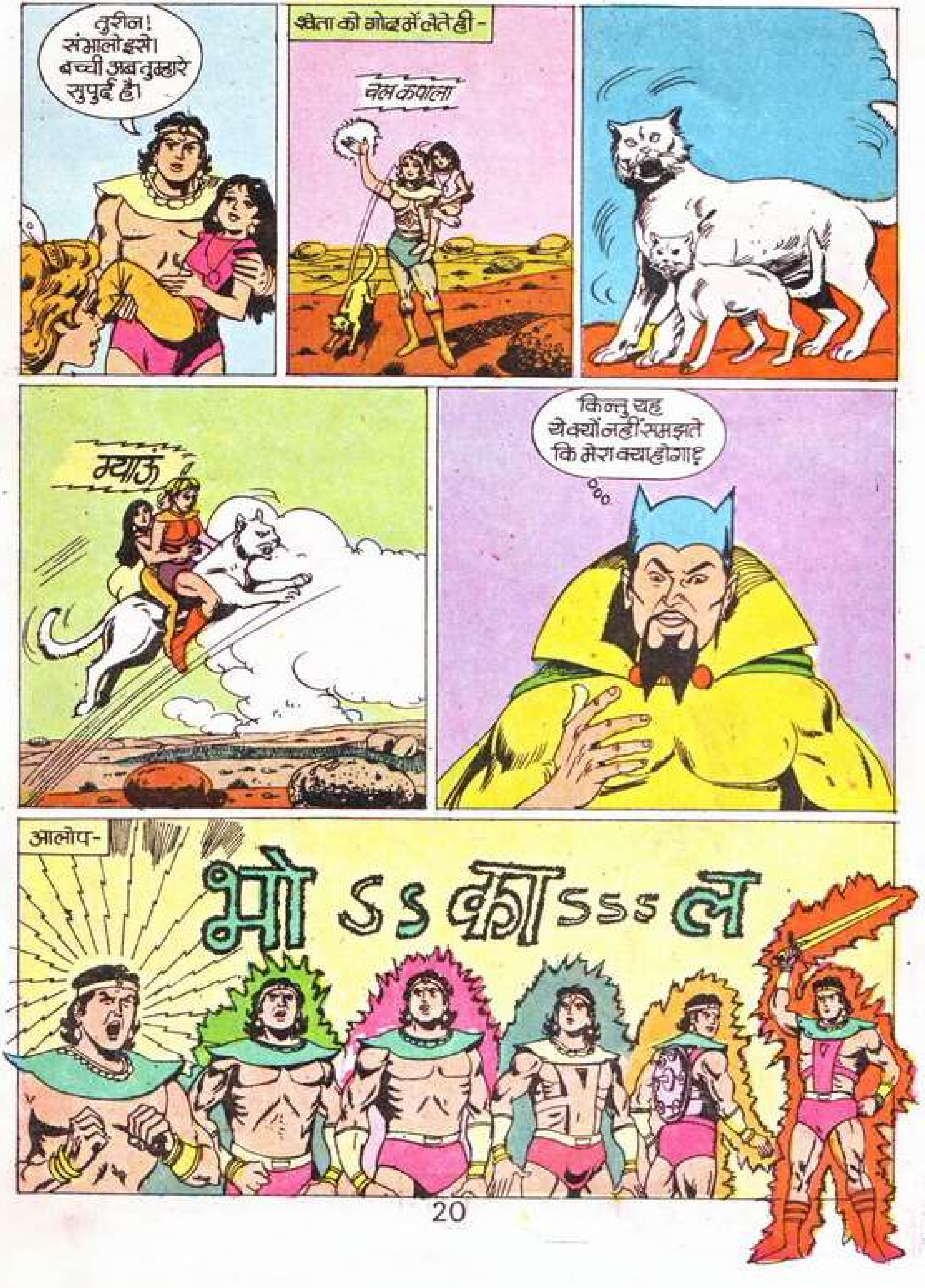
तुरीन! संभालो इसे। बच्ची अब तुम्हारे सुपुर्द है।
श्वेता को गोद में लेते ही -
चल कपाला
म्याऊं
किन्तु यह ये क्यों नहीं समझते कि मेरा क्या होगा?
आलोप-
भो ऽऽ का ऽऽऽ ल

बन गया भोकाल।
उधर पृथ्वी पर चंद्रगढ़ का राजा सूर्यसेन-
वाह भाई! फुचांग खुश किता!
सुजानगढ़ का राजा परकाल देव-
मैं तो यह देख-देखकर पागल हो जाऊंगा।
चित्तौड़गढ़ का सम्राट डबरालदेव-
इतने मजे कभी नहीं आये।
सोकामपुर का राजा चकटालसिंह-
इस दुनिया का सबसे बड़ा मनोरंजन यही है।
जूनागढ़ का राजा खुजाला-
मन करता है बस तिलिस्मी ओलम्पाक को ही देखता रहूं।
मोहकमपुर का सम्राट चोपड़राजा-
इस भोकाल का मुंह चूमने का मन करता है।
खोयामपुर का राजा भोकलाटकाल-
मैं तो मर जाऊंगा अगर यह खेल खत्म हो गया तो हां।

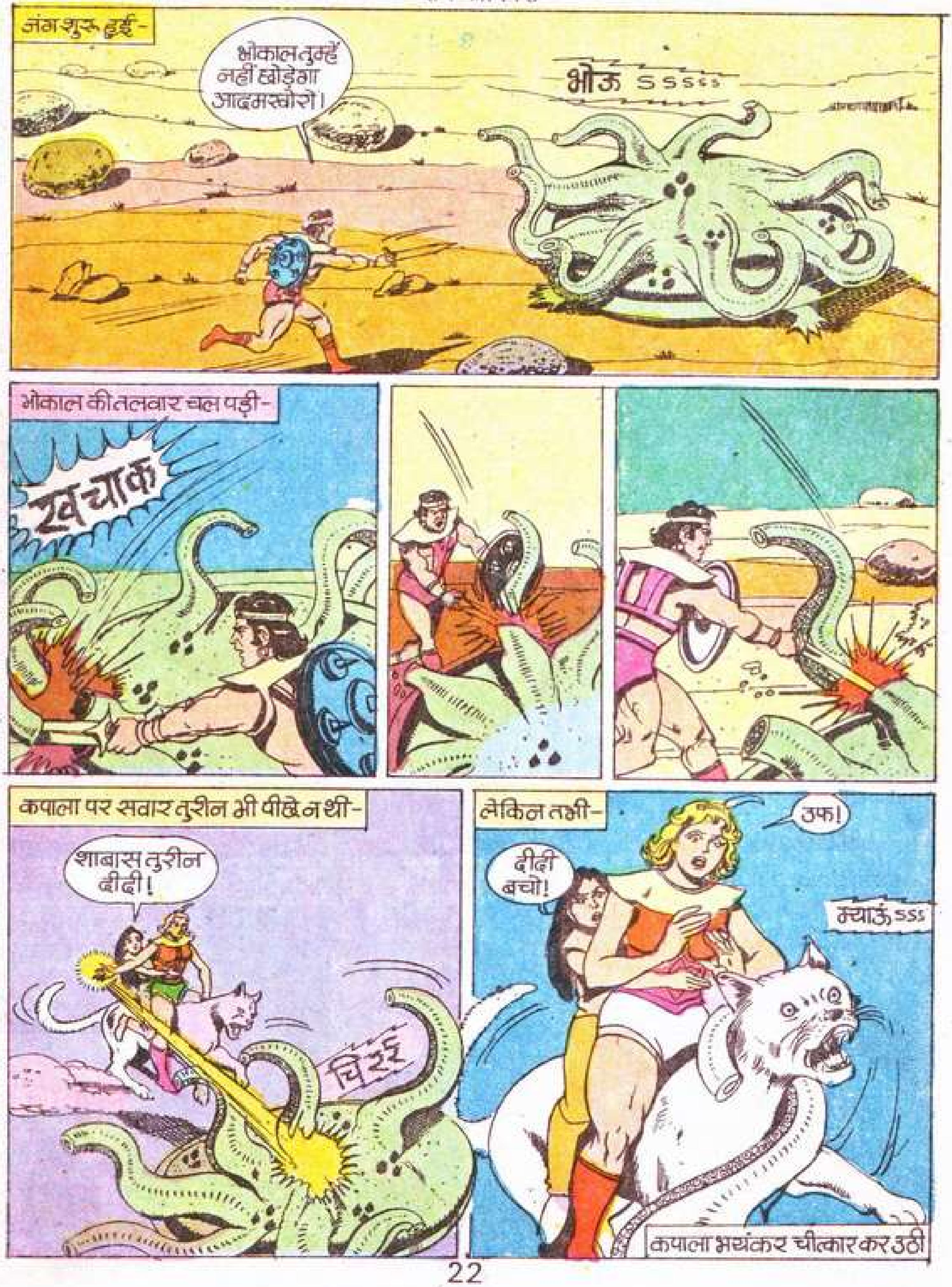
जंग शुरू हुई -
भोकाल तुम्हें नहीं छोड़ेगा आदमखोरो!
भोऊ sssss
भोकाल की तलवार चल पड़ी -
खचाक
कपाला पर सवार तुरीन भी पीछे न थी -
शाबास तुरीन दीदी!
चिर्र्र
लेकिन तभी -
उफ!
दीदी बचो!
म्याऊं sss
कपाला भयंकर चीत्कार कर उठी

और भोकाल भी फंस गया भयंकर जीव की सूंड में।
ओ अ ओ
किन्तु अभी...
...वहां था अतिक्रूर
छोड़ दो इन्हें जालिमो।
कुछ ही पलों में उसने कई चट्टानें फेंक मारीं-
हाय!
अरे यह क्या ?
हां यह चट्टानें नहीं थीं, यह थे भयंकर जीव के अण्डे
चारों तरफ से भयंकर जीव उसकी तरफ बढ़ने लगे-
भाग बेटा शैतान, अब नहीं छोड़ेंगे यह तुझे! यह तो बढ़ते ही जा रहे हैं।
उफ! यह तो और मुसीबत बुला ली मैंने।
तभी-

अतिक्रूर की दृष्टि एक खास चीज पर पड़ी -
हाएं ! यह क्या? यह जीव मेरे फेंकने से उलटा हो गया था और उलटते ही मर गया। यानी, यानी ...
मैं अगर इन सभी जीवों को उलट दूं तो यह सब मर जाएंगे।
और विचार आते ही अतिक्रूर भयंकर जीवों पर टूट पड़ा -
अब नहीं बचते तुम बेटा।
रास्ता छोड़ो! मुझे अभी तुम्हारे मां-बाप से भी निबटना है।
अंततः वह उस विशालकाय भयंकर जीव के सामने था जिसने भोकाल को दबोचा हुआ था -
मुझे इसकी सूंडों से भी बचना है।

तेजी से भागता अतिक्रूर भयंकर जीव से टकराया-
मैं आ गया भोकाल! इस भयंकर जीव का काल।
और पूरी शक्ति लगाकर उसने उस विशालकाय जीव को उलट ही दिया -
धन्यवाद अतिक्रूर!
भोकाल को आजाद कराकर अतिक्रूर दूसरे भयंकर जीव की तरफ दौड़ा-
अब तेरी बारी है दुरात्मा!
लेकिन -
आह!
किन्तु अब भोकाल आजाद था-
भोऽओ ऽऽओऽऽऽ
भयंकर चीत्कार कर उठा भयंकर जीव। आखिरी चीत्कार।

मारा गया शैतान।
चलो मैं भी बच गया
आओ, हम सब कपाला को देखें।
कपाला जो अब अपना स्वरूप बदल रही थी-
तुरीन! कपाला को क्या हुआ?
वह अपने आप ठीक हो जाएगी भोकाल, लेकिन थोड़ा वक्त लगेगा।
कुछ देर बाद-
आप यहां कैसे आ गईं राजकुमारी श्वेता?
क्योंकि मुझे आपसे मिलना था भोकाल चाचा, और आप मुझे आप ना कहें केवल श्वेता कहें। नहीं तो मैं नाराज हो जाऊंगी।
ओहो! मेरी गुड़िया नाराज हो जाएगी।
मुझे तो भूख लगी है बहुत ज़ोर की।
मैं अपनी आंखों में रोज़ करेले का रस डालता हूं यहां तो करेला भी नहीं है तू खाने की बात कर रहा है।
अरे! भोजन के बारे में तो मैं भी पूछना भूल गई थी। हमें भोजन कैसे मिलेगा?
हां, भोकाल चाचा! हमें भी भूख लगी है।
मुस्कराया भोकाल और-
लो, यह थैली। मुझे महाबली फूचांग ने दी थी। इससे जैसी भी इच्छा करो वैसा ही भोजन मिलेगा।
चलो एक समस्या तो सुलझी।

सबने अपनी इच्छा का भोजन मंगवाया -
वाह! इस थैली से अबकरेला भी मिल जाएगा।
हा हा हा
और सबने अपनी भूख मिटाली।
इधर पृथ्वी पर -
महाराज! आप फूचांग के पास चलिए। वह जरूर हमारी बेटी हमें वापस लादेगा।
ठीक कहती हो तुम प्रिय! चलो हम ऐसा ही करते हैं।
राजा विकासमोहन महारानी के साथ फूचांग से मिलने चल पड़े --
अगर मेरी बच्ची को कुछ हो गया महाराज तो मैं फूचांग का लहू पी जाऊंगी।
शांत प्रिय शांत! फूचांग श्वेता को वहां से जरूर वापस ले आएगा।
उधर फूचांग -
मैं सोच चुका हूं तुम्हें क्या जवाब देना है राजा विकासमोहन। मैं राजकुमारी को वापस ला सकता हूं, लेकिन नहीं, क्योंकि तब खेल का मजा कम हो जाएगा।

अगले ही पल राजा विकासमोहन और महारानी ने कक्ष में प्रवेश किया -
फूचांग मित्र, फूचांग!
आओ मित्र विकास मोहन! फूचांग के कक्ष में स्वागत है!
मित्र! हमारी पुत्री राजकुमारी श्वेता...
हां मित्र! हम खुद तुम्हें यही बताने आने वाले थे।
फूचांग ने चाल खेली, कैसी जबरदस्त चाल
... वह मेरे पास आई और बोली --
फूचांग चाचा हमें भी तिलिस्मी ओलम्पाक भेज दो।
क्या कहती हो श्वेता बेटी! तुम्हें तो पता ही है कि वहां केवल दिव्यजवीर ही जा सकते हैं।
... नहीं मानी वह। मेरी एक ना सुनी उसने...
नहीं! हम भी वहां जाएंगे, जरूर जाएंगे वरना...
वरना क्या?
... उबल ही तो पड़ा मैं...
वरना हम आत्महत्या कर लेंगे। यह खंजर अभी अपनी छाती में उतार लेंगे!
नहीं ऐसा ना करना!
... और मुझ जैसा बलवान उस बच्ची के सामने भीख मांग बैठा, उस बच्ची के प्राणों की भीख...
सुनो बेटा! अपने माताश्री, पिताश्री से तो आज्ञा ले लो।
नहीं, आप अभी निर्णय लें, नहीं तो ...

...हार गया मैं महाबली फूचांग उस बच्ची से हार मान गया...
ठीक है पुत्री! हम बेबस ना होते तो कदापि तुम्हें वहां ना भेजते। चाहे हमारी जान क्यों ना चली जाती।
दरिन्दा कितना बड़ा चालबाज निकला।
अब तुम ही बताओ कि तुम मेरी जगह होते तो क्या उतार लेने देते उसे खंजर अपनी छाती में?
नहीं! मित्र कदापि नहीं किन्तु...
खुद को कोरा साबित कर लिया उसने दोनों की नजरों में।
...अब वह वापस कैसे आएगी?
यही तो दुख है मित्र कि अब मैं भी उसे वापस नहीं ला सकता। तिलिस्मी ओलम्पाक में गया मानव केवल तिलिस्म के टूटने के बाद ही वापस आ सकता है।
अब तो तिलिस्मी ओलम्पाक तोड़ने वाला विजेता ही उसे वापस ला सकता है।
दोनों टूटे हुए दिल और मरे हुए मन से वापस चल पड़े-
महाराज! उससे बोलो कि वह मुझे भी वहीं भेज दे, मेरी पुत्री के पास।
धीरज रखो रानी! हमें विश्वास है कि भोकाल जल्दी ही उस तिलिस्म को तोड़ देगा।
राजदरबार में-
महाराज! आपसे मिलने के लिए बहुत से देशों के राजदूत इंतजार कर रहे हैं।
उन्हें भेज दो।

शीघ्र ही अन्य देशों के राजदूत वहां पहुंचने लगे-
महाराज विकास मोहन को चूड़ागढ़ के राजा शमकशम का प्रणाम।
प्रणाम स्वीकार। कहो राजदूत, कैसे आना हुआ?
महाराज! हमारे देश की आधी आय का हिस्सा आपके खजाने में जमा करा दिया गया है। निवेदन यह है कि हमें कुछ और दूरदर्शन दर्पण दिए जाएं, क्योंकि हमारे महाराज प्रजा को भी यह खेल दिखाना चाहते हैं।
इसी तरह की फरमाइशों के साथ कई देशों के राजदूत वहां पहुंचे थे-
महाराज! हमारे महाराज ने इस जबरदस्त आयोजन की बधाई भेजी है।
महाराज! इस साल की संपूर्ण आय मिथिला नरेश ने खेल से अति प्रसन्न होकर आपको नजर की है।
इस अभूतपूर्व खेल के लिए लिबासगढ़ की संपूर्ण जनता ने आपको बधाई भेजी है।
विकासगढ़ का कोषागार छोटा पड़ने लगा वह धन समेटते-समेटते और छोटा पड़ने लगा राजा विकासमोहन का राजकुमारी श्वेता के खोने का दुख-
कोषाध्यक्ष! महल में दस और कोषागार बनाए जाएं। शीघ्र अति शीघ्र!
हो हो हो मित्र फूचांग धन्यवाद! हम बहुत प्रसन्न हुए तुमसे।
मूर्ख!
प्रिय बच्चो, चित्रकथा आपको कैसी लगी, यह जरूर लिखें: 'संजय गुप्ता: 1603 दरीबा कलां, दिल्ली-6'

समाप्त

प्रिय पाठको! आपके मनोरंजन के खज़ाने 'भोकाल' सीरीज में नित नयी घटनाओं के साथ 'राज कॉमिक्स' नयी-नयी कहानियां पेश करेगी। यह कहानियां अपने आप में संपूर्ण होंगी यानी कोई भी कॉमिक्स किसी दूसरे कॉमिक्स का पार्ट नहीं होगा। अब तक आप इस क्रम की दो कॉमिक्स पढ़ चुके हैं--

1 खौफनाक खेल
2 तिलिस्मी ओलम्पाक। और अब आपके इन प्रिय पात्रों की-

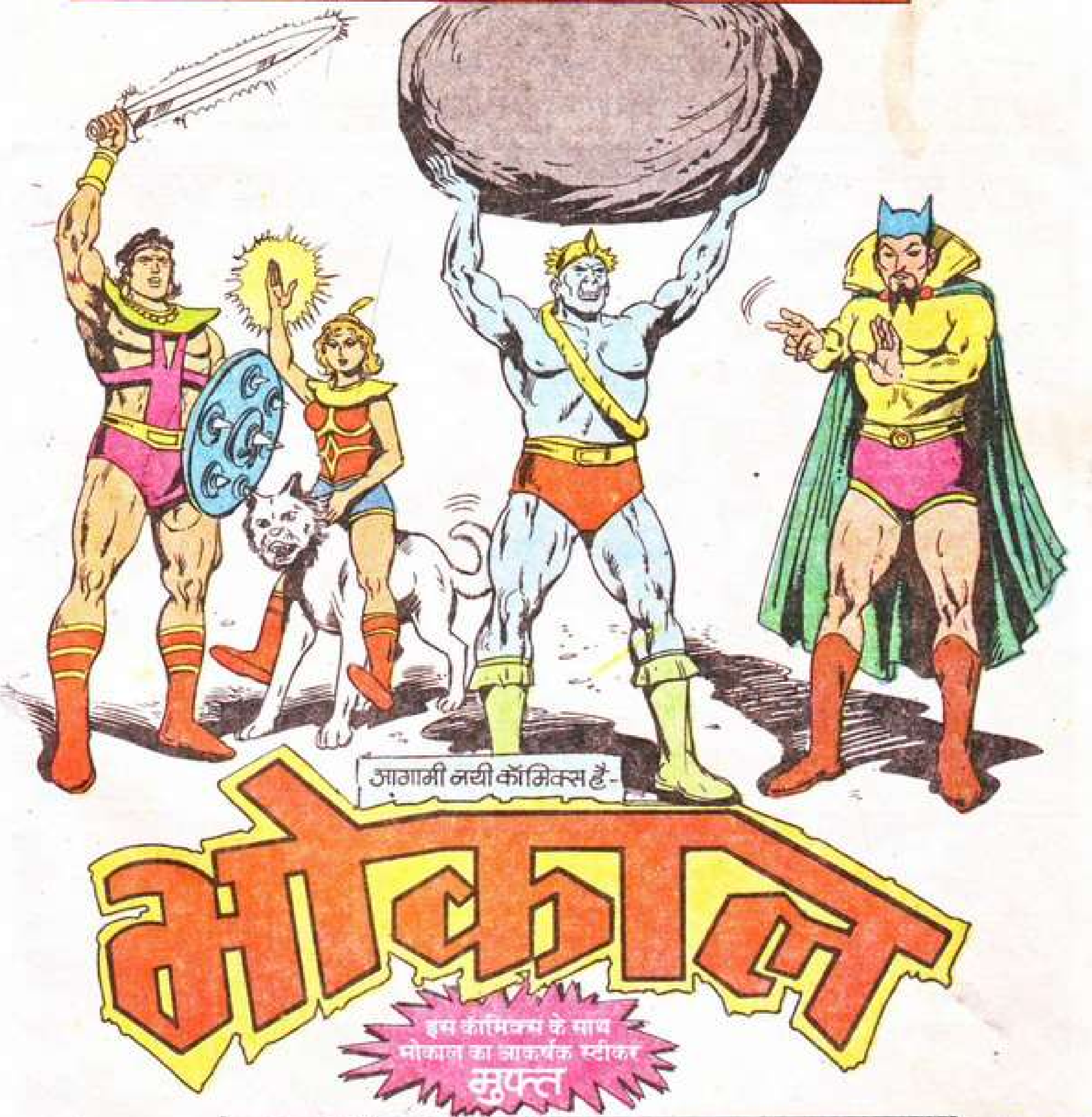

हमारा वादा है कि इस क्रम की सभी चित्रकथाएं आपका खूब मनोरंजन करेंगी।

राज कॉमिक्स
संख्या 305

भोकाल

1561

भौऽऽकाऽऽल

लेखक: संजय गुप्ता चित्रांकन: कदम स्टुडिओ सम्पादन: मनीष चंद्र गुप्त

आपका प्रिय पात्र भोकाल। कौन है यह? क्या है इसकी पिछली जिन्दगी? कैसे बन जाता है यह आलोप से भोकाल? अन्दर के पृष्ठों में आपके इन सब सवालों का जवाब है–एक हैरत अंगेज चित्रकथा के रूप में।

© RAJA POCKET BOOKS

परीलोक प्रसिद्ध है कि स्वर्ग समान होता है. किन्तु आज वहां नरक से भी भयंकर नज़ारा दिखाई पड़ रहा था–
आह! बचो भागो।
राक्षस आ गए।
राक्षसराज बोझ और भरकम ने अपनी सेना सहित परीलोक पर धावा बोल दिया था –
हा हा हा परीलोक की कोई परी नहीं बचनी चाहिए। सभी परियों को अपने साथ ले चलो।
ये परियां खाने में अति स्वादिष्ट होती हैं। हा हा हा।
परीलोक का राजा खजानदेव !
परीलोक में किसी ने आज तक हथियार नहीं उठाए, इसीलिए तुमने इतनी तबाही मचा दी. किन्तु शैतानो...
...अगर महागुरु भोकाल को इस तबाही की खबर मिल गई तो तुम सबकी खैर नहीं
ठठाकर हंस पड़े शैतान राक्षस, और –
हा हा हा बहुत बोल चुका। अब इसकी बोलती बंद कर दी जाए।
खच्च
नहीं ईईऽऽ

नन्हे युवराज का हृदय चीत्कार कर उठा-
पिताश्री ईई ssss पिताश्री ss आप हमें छोड़कर नहीं जा सकते। इस तरह नाराज ना होइए पिताश्री। उठिए, देखिए आपके श्वेत वस्त्र लाल होते जा रहे हैं। इन्हें साफ कीजिए।
पुत्र आलोप सुनो!...
मुश्किल से बोल पा रहे थे राजा स्वज्ञानदेव
... पुत्र हमारे बाद तुम्हें इन राक्षसों से परीलोक की तबाही का बदला लेना है। मिटा देना इन शैतानों को। दिखा देना कि शराफत और सच्चाई की तलवार कितनी मजबूत होती है। ऐसे हर शैतान को तुम्हें सिर्फ मौत देनी है पुत्र, सिर्फ मौत!
और आलोप को तो पता भी ना चला कि कब उसके पिताश्री उसे अकेला छोड़ चले-
मैं कसम खाता हूं पिताश्री! ऐसा ही होगा। किन्तु पहले आप राजवैद्य जी के घर चलें। जल्दी, पिताश्री!
तभी यह तमाशा देखकर आनंदित होता राक्षसराज भरकम बोला-
हा हा हा पिल्ला हमें खत्म करेगा। अबे यह मर चुका है। यह कहीं नहीं चलेगा तेरे साथ। हा हा हा
नहीं ई ई sss
पागल हो उठा बालक क्रोध से दरिन्दों की हंसी सुनकर...
मेरे पिताश्री नहीं मरे शैतान राक्षस, वह नहीं मरे।
किन्तु था तो बच्चा ही-
हा हा हा बाप के उपदेशों ने बच्चे को बरगला दिया।
छोड़ दे मुझे नीच, छोड़ दे, मैं तुझे जान से मार दूंगा।

शैतानी हंसी हंसे दोनों और-
हाहाहा छोड़ देते हैं ले बच्चे छोड़ दिया।
आह ऽऽऽ
हाहाहा अब नहीं बचेगा यह।
राक्षसराज बोझ! सभी परियां कैद की जा चुकी हैं। आज्ञा हो तो कूच करें।
चलो!
बच्चे को मरा जानकर...
...दोनों चल पड़े।
हा हाहा चलो आज जश्न होगा। कूच करो।
हाहाहा
किन्तु...
जिस दीपक को खुद ऊपरवाले ने रौशन किया हो...
आह!
...वह ऐसे नहीं बुझा करता।
फिर परीलोक का कोना-कोना उसके करुण रुदन से रो पड़ा-
पिताश्री ऽऽऽ ऊऊऽऊ
उसके नन्हें दिल में बदले की चिंगारियां सुलग उठीं-
बदला!

मां
अनाथ बच्चा खूब भटका।
माताश्री!
किन्तु ऐसा लगता था कि जैसे परीलोक में ऐसा कोई बचा ही नहीं था जो उसकी पुकार सुनता।
माताश्री! क्या आप भी हमें छोड़कर चली गईं।
माताश्री! कहां हो तुम?
कितनी ही देर तक रोता रहा वह।
किसी की बहुत ही हल्की आवाज ने उसकी सिसकियों का क्रम तोड़ा-
आलोप पुत्र! अंदर आओ!
पुत्र आलोप! अंदर आओ!
कौन है ये? कौन पुकार रहा है मुझे?

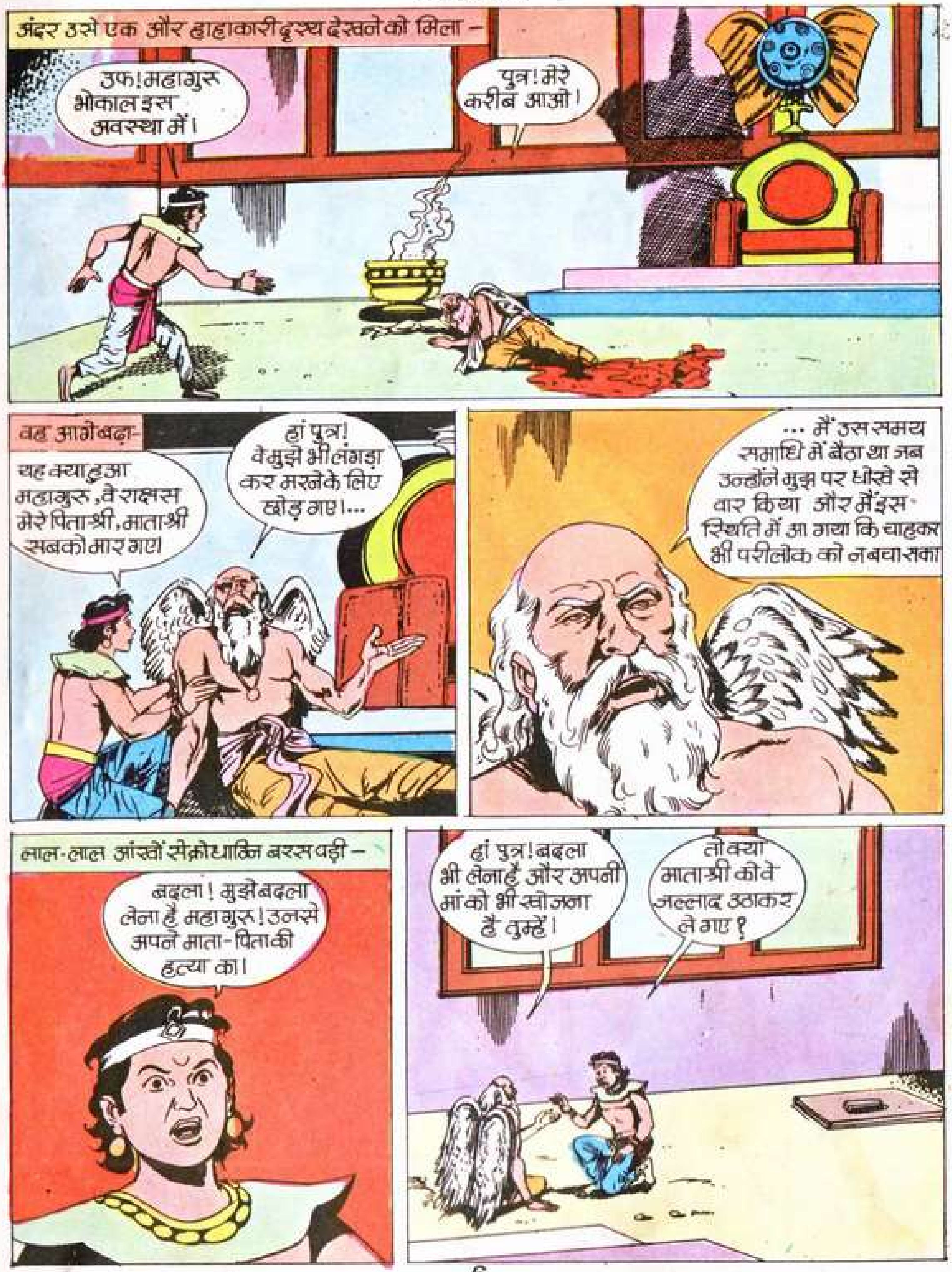
अंदर उसे एक और हाहाकारी दृश्य देखने को मिला –
उफ! महागुरू भोकाल इस अवस्था में।
पुत्र! मेरे करीब आओ!
वह आगे बढ़ा–
यह क्या हुआ महागुरू, वे राक्षस मेरे पिताश्री, माताश्री सबको मार गए!
हां पुत्र! वे मुझे भी लंगड़ा कर मरने के लिए छोड़ गए।...
... मैं उस समय समाधि में बैठा था जब उन्होंने मुझ पर धोखे से वार किया और मैं इस स्थिति में आ गया कि चाहकर भी परीलोक को न बचा सका
लाल-लाल आंखों से क्रोधाग्नि बरस पड़ी –
बदला! मुझे बदला लेना है, महागुरू! उनसे अपने माता-पिता की हत्या का।
तो क्या माताश्री को वे जल्लाद उठाकर ले गए?
हां पुत्र! बदला भी लेना है और अपनी मां को भी खोजना है तुम्हें।

हां पुत्र! सैकड़ों परियों के साथ वे तुम्हारी मां परीरानी ओसिका को भी पृथ्वीलोक ले गए।
पृथ्वीलोक! मुझे बताइये महागुरु कहां है यह लोक। मैं वहां भी ऐसी तबाही मचा दूंगा जैसी उन दरिंदों ने परीलोक में मचाई है!
पृथ्वीलोक बहुत बड़ा है पुत्र और वहां का हर प्राणी इन राक्षसों जैसा नहीं है। वहां जाकर तुम्हें इन्हें खोजना पड़ेगा।
मैं खोजूंगा महागुरु! आप बताइए वहां पहुंचा कैसे जाएगा?
पुत्र! वह पत्थर हटाओ।
अभी लीजिए महागुरु!
आलोप उस पत्थर पर झुका और –
हम्फ बहुत भारी है।
इतना वजनी
पत्थर तो कोई बड़ा ताकतवर ही उठा सकता था।
किन्तु बच्चे में जबरदस्त इच्छाशक्ति थी –
पुत्र और प्रयत्न करो तुम्हें बदला लेना है, बदला।
मैं इसे उठाकर रहूंगा हम्फ - हम्फ
किन्तु वह उसे हिला भी ना सका।
महागुरु भोकाल के होंठों पर थिरक उठी मुस्कान। एक घायल मुस्कान –
पुत्र! मेरा नाम पुकारो।

आलोपके होंठ फड़के-
भोऽऽकाऽऽल
अद्भुत परिवर्तन हुआ उसके स्वरूप में-
और-
वह आलोप से भोकाल बन गया।
अन्दर नजर आया-
दुधारी तलवार और ढाल!
तभी महागुरु भोकाल की आवाज वहां गूंजी-
पुत्र! इन्हें मेरे पास लेकर आओ।

आलोप के हाथ तलवार पर जम गए-
परीलोक में प्रथम बार किसी ने हथियार पकड़ा होगा!
और अगले ही क्षण तलवार व ढाल आलोप के हाथों में थीं-
किन्तु मुझे तलवार चलाना कौन सिखाएगा?
वह आगे बढ़ा।
पुत्र! यह तलवार मुझे दो।
लीजिए महागुरु!
महागुरु भोकाल ने तलवार का रुख आलोप की तरफ किया।
अपनी सीधी बांह आगे करो पुत्र!
जो आज्ञा महागुरु!
तलवार में से चिंगारियां निकलीं और-
चिर्र्र
भोकाल की कलाई में हमेशा-हमेशा के लिए वह निशान छप गया।
पुत्र, अब जब भी तुम मेरा नाम पुकारोगे। यह तलवार, ढाल व कवच और यह शक्तिवान स्वरूप तुम्हें मिल जाएगा। पुत्र आलोप! इस अजेय तलवार का धारक ख़ुद ब ख़ुद तलवारबाज बन जाता है।
फिर महागुरु भोकाल आलोप को उस अजेय तलवार व ढाल के बारे में सब कुछ बताते चले गए।

अंततः
पुत्र! अब तुम नेत्र बन्द करो और जब तुम नेत्र खोलोगे खुद को पृथ्वी पर पाओगे।
किन्तु आप महागुरु!
मेरी फिक्र तुम ना करो। मेरा समय पूरा हो चुका है और जब तुम मुझे पुकारोगे तब मेरी ही आत्मा तुममें आएगी।
और आज से तुम्हारा नाम होगा भोकाल।
महागुरु!
महागुरु के स्वर में गहरी पीड़ा उभर आई-
नेत्रबंद करो पुत्र! शीघ्र मेरा समय पूरा हो चुका है।
बालक ने जल्दी से अपने नेत्रबंद कर लिए।
और जब उसने अपनी आंखें खोलीं-
पृथ्वी!
नन्हा अनाथ बालक कितनी बड़ी दुनिया में आ गया था।
कहां ढूंढू मैं अपनी माताश्री को। उनके हत्यारों को। हे महागुरु भोकाल, मेरी मदद करो।
सामने नजर आई एक कुटिया -
यह किसकी कुटिया है?
वह तेज कदमों से कुटिया की तरफ चल पड़ा।

यह था महर्षि गाजोबाजो का आश्रम।
प्रणाम महर्षि!
आओ वत्स! कहो कौन हो? हमसे क्या चाहते हो?
महर्षि गाजोबाजो के बारे में जानने के लिए पढ़ें 'भोकाल' सीरीज के पूर्व कॉमिक्स 'खौफनाक खेल और 'तिलिस्मी ओलम्पाक'
भोकाल जब गाजोबाजो को अपनी पूरी दास्तान सुना चुका तब –
वत्स! हमें तुमसे पूरी हमदर्दी है। हम चाहेंगे तुम यहीं रहो। हम राक्षस बोझ और भरकम को खोजने में भी तुम्हारी मदद जरूर करेंगे।
धन्यवाद महर्षि!
सुकुमार भोकाल ने महर्षि गाजोबाजो की खूब सेवा का –
महर्षि गाजोबाजो ने भी उसे पुत्र समान स्नेह किया।
भोकाल! तुमने मरा पुत्र समान ही सेवा की है। तुम्हें इसका फल जरूर मिलेगा।
समय के साथ-साथ भोकाल हो रहा था जवान।
एक दिन जब महर्षि गाजोबाजो समाधि से उठे वे अत्यंत प्रसन्न थे –
पुत्र भोकाल! हमें तुम्हारे लोक में तबाही मचानेवाले राक्षसों का पता चल गया है।
सच महर्षि! सच!
खुशी भोकाल से भी संभाले नहीं संभल रही थी।
महर्षि! जल्दी बताइये कहां हैं वे। मेरी भुजाएं फड़क रही हैं उनसे बदला लेने के लिए।
वे पड़ोसी राज्य कोहरामपुर में आए हुए हैं तबाही मचाने।
इसी दिन के इंतजार में पृथ्वी पर दस वर्ष से सुलग रहा था वह और अब वह और नहीं रुक सकता था।

कोहरामपुर में आज वास्तविक कोहराम मचा हुआ था—
जितनी भी सुन्दर युवतियां हैं सब इकट्ठी करलो।
वाह! इनका नरम-नरम मांस खाकर मजा आ जाएगा।
बचाओ ऽऽ बचाओ ऽऽ
तभी उन राक्षसों के सामने आ खड़ा हुआ भोकाल—
ठहरो! अधर्मियो बस, अब और तबाही नहीं मचा सकते तुम!
हा हा हा हा हा हा
और दुष्ट राक्षस ने भोकाल को उछाल फेंका—
हो हो हो मच्छर हमें ललकार रहा है।
वह क्रोध में फुंफकार उठा—
भो ऽ का ऽ ल ऽ

शामत आ गई राक्षसों की-
यह महागुरू भोकाल की टांगें काटने के बदले।
आऽऽआऽऽ
गिन-गिनकर बदले ले रहा था भोकाल-
यह महागुरू भोकाल की हत्या के बदले।
हा आंयऽऽ
अपनी ज़िंदगी का सबसे कंपा देने वाला दृश्य था राक्षसों के सामने।
परीलोक में मचाई तबाही का बदला आज पूरा होगा।
आओ... सब... मिलकर इसकी हत्या कर दें...
भोकाल ने राक्षसों के बीच तबाही मचा दी। वह अकेला उन राक्षसों के साथ खेल रहा था- मौत का खेल।
मुझे अनाथ बनाने के लिए।
बदला!
बदला!
राक्षस त्राहि-त्राहि कर उठे।

अपनी जिंदगी की पहली लड़ाई जीत गया था भोकाल।
बोल। जुबान खोल। बता कहां हैं परीरानी ओसिका। मेरी मां। कहां छुपा रखा है उन्हें तुमने, जवाब दे।
अच्छे अच्छों की जुबान खुल जाती है मौत के सामने।
वह...वह राक्षसराज बोझ और भरकम की कैद में है।
बोझ और भरकम कहां है यह दोनों। बोल कहां है वह दोनों?
वे दोनों ओसाक ग्रह के देवता महान खजुरा के आदेश पर तभी से तिलिस्मी ओलम्पाक नामक जगह पर पहरेदारी के लिए नियुक्त हैं। जब वे परीलोक से वापस लौटे थे।
तिलिस्मी ओलम्पाक! यह कहां हुआ?
फंसकर रह गया फिर से बेचारा भोकाल राक्षस का जवाब सुनकर।
यह किसी को नहीं मालूम वह अत्यंत गुप्त जगह है और किसी दूसरे लोक में है।
तो तेरा काम तो खत्म हुआ तू तो...
...मर।
खच्च
आह SSS
अंतिम बलि चढ़ाकर भोकाल पलटा।

कोहरामपुर वासियों ने उसे कंधों पर उठा लिया-
हमारा रक्षक जिंदाबाद!
अरे! अरे!
भोकाल जिंदाबाद!
किन्तु भोकाल के दिमाग में अभी भी उठ रहा था भयानक तूफान-
मैं अभी भी वहीं का वहीं हूं। अब राक्षसराज बोझ और भरकम तक पहुंचने के लिए ढूंढना पड़ेगा तिलिस्मी ओलम्पाक को।
महर्षि गाजोबाजो को जरूर तिलिस्मी ओलम्पाक के बारे में मालूम होगा।
तभी वहां गूंज उठी एक मुनादी-
सुनो सुनो सुनो!
कोहरामपुर वासियों को विकासनगर के राजा विकासमोहन का निमंत्रण जो भी महाबली, महावीर, सर्वोत्तम पुरुष महाराजा द्वारा आयोजित खौफनाक खेल में भाग लेना चाहे उसका विकासनगर में स्वागत है।...
... सर्वोत्तम महावीर को महाराज विकासमोहन व महाबली फूचांग भेजेंगे तिलिस्मी ओलम्पाक, जिसके तिलिस्म तोड़नेवाले को मिलेगा बहुत बड़ा खजाना।

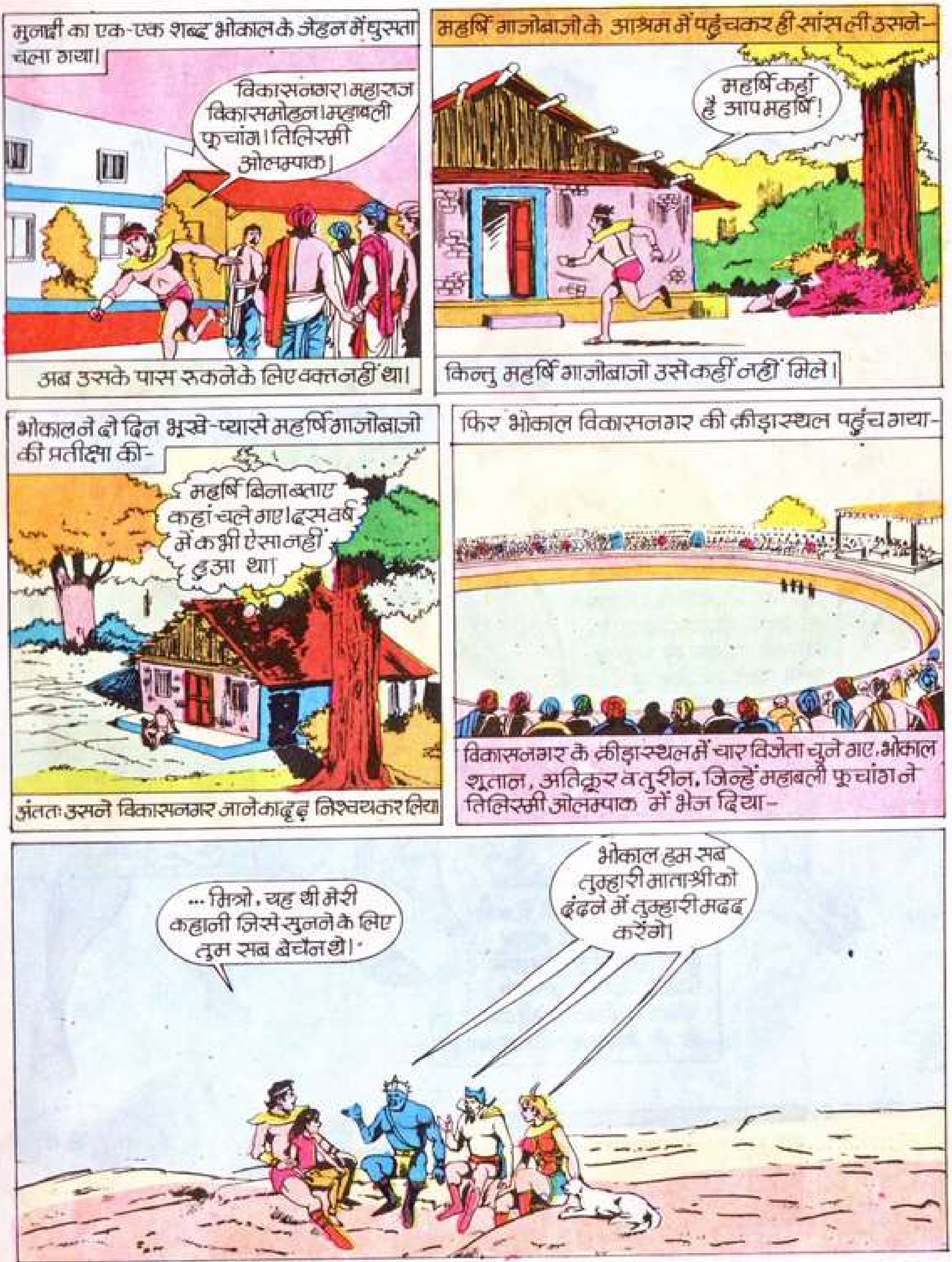
मुनद्दी का एक-एक शब्द भोकाल के जेहन में घुसता चला गया।
विकासनगर। महाराज विकासमोहन। महाबली फूचांग। तिलिस्मी ओलम्पाक।
अब उसके पास रुकने के लिए वक्त नहीं था।
महर्षि गाजोबाजो के आश्रम में पहुंचकर ही सांस ली उसने-
महर्षि कहां हैं आप महर्षि!
किन्तु महर्षि गाजोबाजो उसे कहीं नहीं मिले।
भोकाल ने दो दिन भूखे-प्यासे महर्षि गाजोबाजो की प्रतीक्षा की-
महर्षि बिना बताए कहां चले गए। दस वर्ष में कभी ऐसा नहीं हुआ था।
अंततः उसने विकासनगर जाने का दृढ़ निश्चय कर लिया
फिर भोकाल विकासनगर की क्रीड़ास्थल पहुंच गया-
विकासनगर के क्रीड़ास्थल में चार विजेता चुने गए. भोकाल शूतान, अतिक्रूर व तुरीन. जिन्हें महाबली फूचांग ने तिलिस्मी ओलम्पाक में भेज दिया-
...मित्रो, यह थी मेरी कहानी जिसे सुनने के लिए तुम सब बेचैन थे।
भोकाल हम सब तुम्हारी माताश्री को ढूंढने में तुम्हारी मदद करेंगे।

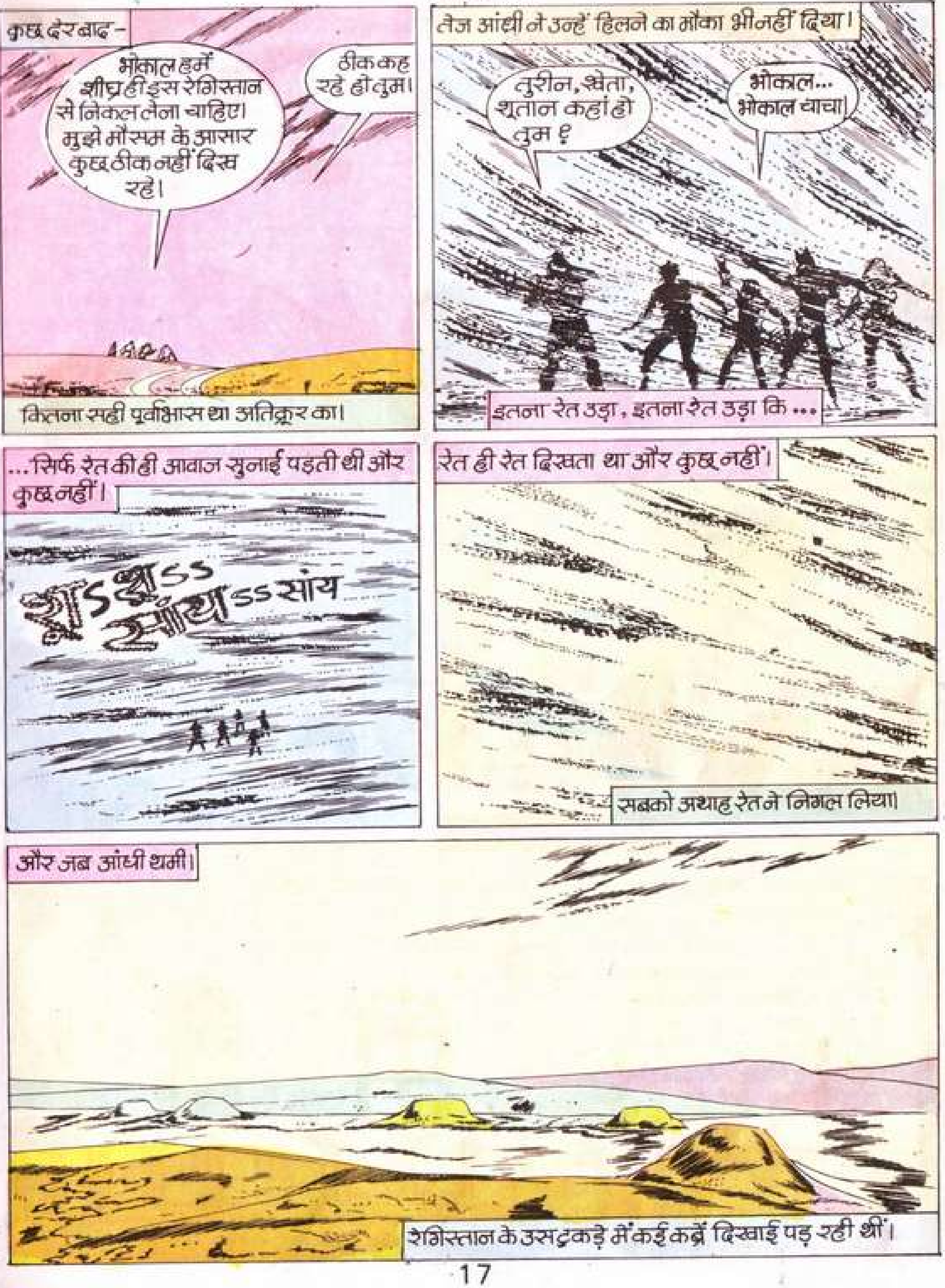
कुछ देर बाद -
भोकाल हमें शीघ्र ही इस रेगिस्तान से निकल लेना चाहिए। मुझे मौसम के आसार कुछ ठीक नहीं दिख रहे।
ठीक कह रहे हो तुम।
कितना सही पूर्वाभास था अतिक्रूर का।
तेज आंधी ने उन्हें हिलने का मौका भी नहीं दिया।
तुरीन, श्वेता, शैतान कहां हो तुम?
भोकाल... भोकाल चाचा!
इतना रेत उड़ा, इतना रेत उड़ा कि...
...सिर्फ रेत की ही आवाज सुनाई पड़ती थी और कुछ नहीं।
शूऽशूऽऽ सांयऽऽ सांय
रेत ही रेत दिखता था और कुछ नहीं।
सबको अथाह रेत ने निगल लिया।
और जब आंधी थमी।
रेगिस्तान के उस टुकड़े में कई कब्रें दिखाई पड़ रही थीं।

पृथ्वी पर—
यह क्या हुआ कहां गए वह सब?
क्या भोकाल मर गया?
नहीं! भोकाल कभी नहीं मर सकता।
यह था कोरीधकेल के राजा कोरिया का राजपरिवार।
विशालगढ़ का राजा विक्रमसिंह—
बांकेलाल! यह क्या हुआ हमारा प्यारा भोकाल कहां खो गया?
मुच्छड़, काश तेरी भी किसी रेगिस्तान में ऐसी ही कब्र बन जाए।
महाराज देखते जाइए भोकाल कब्र फाड़कर भी बाहर आ जाएगा।
पृथ्वी के सभी राजा जो इस शानदार खेल का मजा ले रहे थे—
उफ! अब इन्हें यहां से कौन निकालेगा?
सोयानगर का राजा पायासिंह।
भोकाल! भोकाल!
चौटपुर का राजा सूजादेव।
यह हमारे भोकाल चीखने से क्या होगा। वह तो भोकाल ही कुछ कर सकता है।
कायरगढ़ का राजा शेरदिल।
और इस खेल का दिमाग, इस जाल की रीढ़, इस क्रूरता का आयोजक महाबली फूचांग—
वाह, वाह! महान खजूरा ने भी तिलिस्मी ओलम्पाक की रक्षा के लिए क्या शानदार इंतजाम किए हुए हैं। आम आदमी तो क्या आएगा ये दिग्गज ही लोहे के चने चबाकर आगे बढ़ पा रहे हैं।

तभी-
भोकाल!
एक टीले को चीरता हुआ निकला भोकाल
बाहर निकलते ही उसे दूसरे साथियों की चिंता हुई।
वे जरूर मेरी तरह ऐसे ही किसी टीले में दफन होंगे।
मैं इन टीलों के नामोनिशां मिटा दूंगा।
भोकाल फुर्ती से टीलों की तरफ बढ़ा।
महाशक्तिशाली तलवार लहराई और -
रेत के उस पहाड़नुमा टीले से टकराई।
टीले का एक-एक कण बिखर गया और रह गया -
अतिक्रूर और राजकुमारी श्वेता।
ऐसे ही दूसरा टीला भी उड़ा दिया गया।
शैतान!
शैतान अब भी बाज नहीं आया -
यार! तुम लोग कहां से आ गए। मैं तो सोच रहा था कि यमराज मिलेगा तो उसे सम्मोहित करूंगा। जाओ यार, सब गुड़ गोबर कर दिया।
किंतु भोकाल को तो अभी चिंता थी तुरीन की...

...लेकिन सभी टीले बहाने के बाद भी जब...
तुरीन नहीं मिली। वह कहां गई?
बहुत देर तक भी जब वह ना मिली-
उफ! हमने अपने बहुत अच्छे साथी गंवा दिये।
पृथ्वी पर भी तुरीन व कपाला के खोने का गम मनाया जा रहा था-
उफ तुरीन! मैं तो तुम्हारी दिवानी थी।
मौतगढ़ की राजकुमारी चाल्ला।
उफ! राजवैद्य को बुलाओ मुझे दिल का दौरा पड़ा है।
भोपाल का राजा चोपाल।
मेरा क्या होगा। मैं तो कुंवारा रह जाऊंगा। मुझे तो तुरीन से शादी करनी थी।
गढ़चिरोली खुर्द का राजकुमार मजनू।
हाए तुरीन! तू कहां गई, तेरी याद में दिल रोता है।
बुराड़ी का राजा झाड़देव।
वाह! मजा आ गया कितने अच्छे-अच्छे मोड़ आ रहे हैं इस खेल में।
तिहाड़गढ़ का राजा भागोकैदीसिंह।
अरे, अरे! यह क्या? यह कैसे भयानक राक्षस इनकी तरफ बढ़ रहे हैं?
टोलामोला का राजा टुईयादेव।

दो बड़े भयानक राक्षस उनकी तरफ बढ़ रहे थे, लेकिन अरे यह तो वही हैं —
??
राक्षसराज बोझ और अरकम!
??
मोकाल का जिस्म क्रोध से भर उठा।
याद आ गया उसे अपने पिता की हत्या का खौफनाक मंजर—
फिर वह खुद को नहीं रोक पाया—
मोऽऽ काऽऽ लऽऽ
रक्त का बदला रक्त से ही लेना था उसे।

ओकाल राक्षसों का संहार करने के लिए बढ़ा-
दरिन्दो! आज तुम्हारा आखिरी दिन है।
किन्तु-
राक्षसों के हाथ लग गई थी मासूम श्वेता--
हा हा हा
न हीं ईsss ओकाल चाचा, बचाओ ss
उसे छोड़ दे कायर! मुझसे युध्द कर।
नहीं! पहले खेल खेलेंगे फिर युध्द करेंगे।
ओकाल बहुत मुश्किल से खुद को रोक पा रहा था।
क्रूरता की हद हो गई राक्षस ने उछाल फेंका उस बच्ची को--
लो भरकम, संभालो! लपका-लपकी खेलते हैं।
आss आss
राजकुमारी श्वेता जो फूलों की तरह पली थी।...
... आज किस बेदर्दी से उछाली जा रही थी।
हा हा हा मजा आ गया।
वाह, वाह, वाह! क्या शानदार खेल है।

भोकाल से यह निर्ममता नहीं सही गई।
जानवरो!
वार जबरदस्त था
किन्तु सही वक्त पर रुक गया वरना —
काटो! अरे, रुक क्यों गए? हां हां, काटो!
शक्
बहुत बड़ी हानि होने से बच गई।
खूब हंसे दानव उस बेबसी पर आसमान सिर पर उठा लिया उन्होंने, पागल हो गए वे —
हा हा हा हो हो हो हो हा हा हा
भोकाल राक्षसराज भरकम की तरफ दौड़ा —
अगर यह मजबूरी न होती तो तुम्हें अब तक यमलोक पहुंचा चुका होता।
हा हा हा
ऊं ऊंss ऊंss

तभी राक्षसराज भस्कम ने अपनी तलवार श्वेता की गर्दन पर टिका दी—
बस! अब यह खेल खत्म। अब हम दूसरा खेल खेलेंगे।
अच्छा दूसरा खेल जल्दी बताओ भाई, कौन सा दूसरा खेल।
शैतानी मुस्कराहट खेल गई दरिंदे के होंठों पर—
अब भोकाल अपनी ही तलवार से अपने अंग काटेगा, और अगर नहीं तो मैं इसबुलबुल की गर्दन काट दूंगा हा हा हा
जैसे वीभत्स दिमाग वैसे वीभत्स खेल।
चौंक उठे सब, चीख निकल पड़ी उनकी—
नहीं! भोकाल चाचा नहीं! मुझे मर जाने दो। आप इन से अपना बदला लेलो।
बच्ची के दिल में कितना दर्द था भोकाल के लिए।
तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे भोकाल! जैसा यह दरिन्दा कह रहा है।
मेरे रहते ऐसा कुछ नहीं होगा भोकाल!

भोकाल आगे बढ़ा –
नहीं, मैं इस बच्ची के लिए अपनी जान दे दूंगा। मुझे कोई नहीं रोक सकता।
यह क्या अनर्थ होने जा रहा था –
हा हा हा काटो पहले हाथ, फिर पैर, फिर सिर। हा हा हा
हा हा हा भाई भरकम! तुम्हारा खेल तो बहुत शानदार है।
नहीं चाचा! नहीं ईSSS
खचाक
आह!
पृथ्वी पर हर व्यक्ति सांस रोके यह अनर्थ देख रहा था –
नहीं
पोचीं का राजा चोचीं।
मुझे छोड़ दे शैतान, छोड़ दो मुझे भोकाल को रोकने दो।
नहीं अतिक्रूर! रुक जाओ। वह जो कर रहा है, ठीक कर रहा है।
मजरोला का राजा उड़न-खटोला –
ऐसा मत करो भोकाल! तुम्हें कुछ हो गया तो मैं अपनी जान दे दूंगा।
और विकासनगर में --
महाराज! कुछ कीजिए अगर भोकाल को कुछ हो गया तो हमारी श्वेता की रक्षा कौन करेगा?
हम तुरीन के खो जाने से पहले ही दुखी हैं प्रिये! हमें और दुखी ना करो।
मुझे और मदिरा पीनी पड़ेगी। सारा नशा हिरण हो गया।

दरिंदगी अपनी सभी सीमाएं पार कर चुकी थी-
वाह शाबाश! अब अपना दूसरा पैर भी कांट फैंको!
भोकाल ने अपनी दूसरी टांग की भी बलि दे दी-
हां, ऐसे अब काटो अपनी गर्दन!
किन्तु-
अगले ही पल किसी ने राक्षसराज भरकम को उछाल फेंका-
धड़ाम
धरती से टकराते ही दोनों का सम्मोहन टूटा।
जी हां सम्मोहन। यह सब था ही शूतान के शानदार सम्मोहन का कमाल-
खिली खिली हो गुपा हो हो
जिसकी आड़ में अतिक्रूर ने राक्षसराज भरकम को धूल चटा दी।
और भोकाल वह तो सही-सलामत खड़ा मुस्करा रहा था-
धन्यवाद शूतान! अब मेरी बारी है इनसे खेलने की। तुम दोनों बच्ची को लेकर पीछे हट जाओ।
धोखा!

टूट पड़ा भोकाल उन नीच हत्यारों पर—
इंसानियत के आगे हैवानियत नहीं टिका करती हत्यारो!
अपने ऊपर हुए एक-एक अन्याय का बदला लेने से रोकने के लिए अब कोई रुकावट भोकाल के सामने नहीं थी।
खचाक
आहऽऽ
आऽऽ आऽऽ
अभी नहीं। अभी तो तुमसे और भी कुछ काम है।
हाए! भैया बोझ, मैं मरा।
फिर भोकाल ने दोनों राक्षसों की टांगें भी काट दीं—
आऽऽऽ आऽऽऽ
जय महागुरु भोकाल!
वाह! लंगड़ा राक्षस। लंगड़ा राक्षस।
दोनों राक्षसों की चीख से गूंज उठा आकाश।

अब—
बोलो! परीलोक की रानी ओसिका, मेरी मां को कहां छिपा रखा है तुमने?
उछल ही तो पड़े दोनों बिना टांगों के ही।
भयंकर पीड़ा भी जैसे गायब हो गई—
... परीलोक की रानी ओसिका तुम्हारी मां! तुम्हारी...
हां, मेरी मां! बक हरामजादे कहां है वो?
लगता था आज उसकी मनचाही मुराद मिल ही जाएगी।
कठोर हो चला भोकाल का चेहरा चट्टान की तरह कठोर—
सुनो! यदि अगले क्षण तुम्हारी जुबान नहीं खुली तो मेरी तलवार और एक क्षण भी नहीं रुकेगी।
अब तो उसे बोलना ही था उसका मुंह खुलना ही था—
वो ऽऽऽ ओऽऽ वह जंगऽऽ आऽऽ
बशर्ते कि वह मुर्दा ना हो जाता।
और किस्मत को पता नहीं क्यों यही मंजूर था—
घिर्र घिर्र घिर्र
उफ!
??
एकबार फिर भटक गया भोकाल क्योंकि...

...अब उन दोनों में से कोई भी उसे उसकी मां परीरानी ओस्त्रिका के बारे में बताने के लिए जीवित नहीं था–
बोलो! मैं कहता हूं बोलो!
किन्तु मुर्दे कहां बोलते हैं!
अगले क्षण पागल नजर आने लगा वह–
मुझे बताओ। कहां है मेरी मां। मुझे अपनी मां के पास जाना है। बोलो बोलो, बताओ।
रो ही तो पड़ा वह ममता का मारा–
मां! तुम कहां हो? बू हू हू।
आंखें उनकी भी भीग गईं--
भोकाल चाचा मत रोओ।
मत रो मित्र!
मित्र! यह आखिरी रास्ता था मां तक पहुंचने का और... और वह भी आज समाप्त हो गया।
भोकाल चाचा! मैं भी परीरानी मां को ढूंढूंगी।
धैर्य रखो मित्र! रास्ते और भी बन जाएंगे। तुम हिम्मत ना छोड़ो।
मैं अतिक्रूर पुत्र कपालफोड़ तुम्हारी मां को ढुंढवाने में आकाश–पाताल एक कर दूंगा।
सत्य के साथी और...

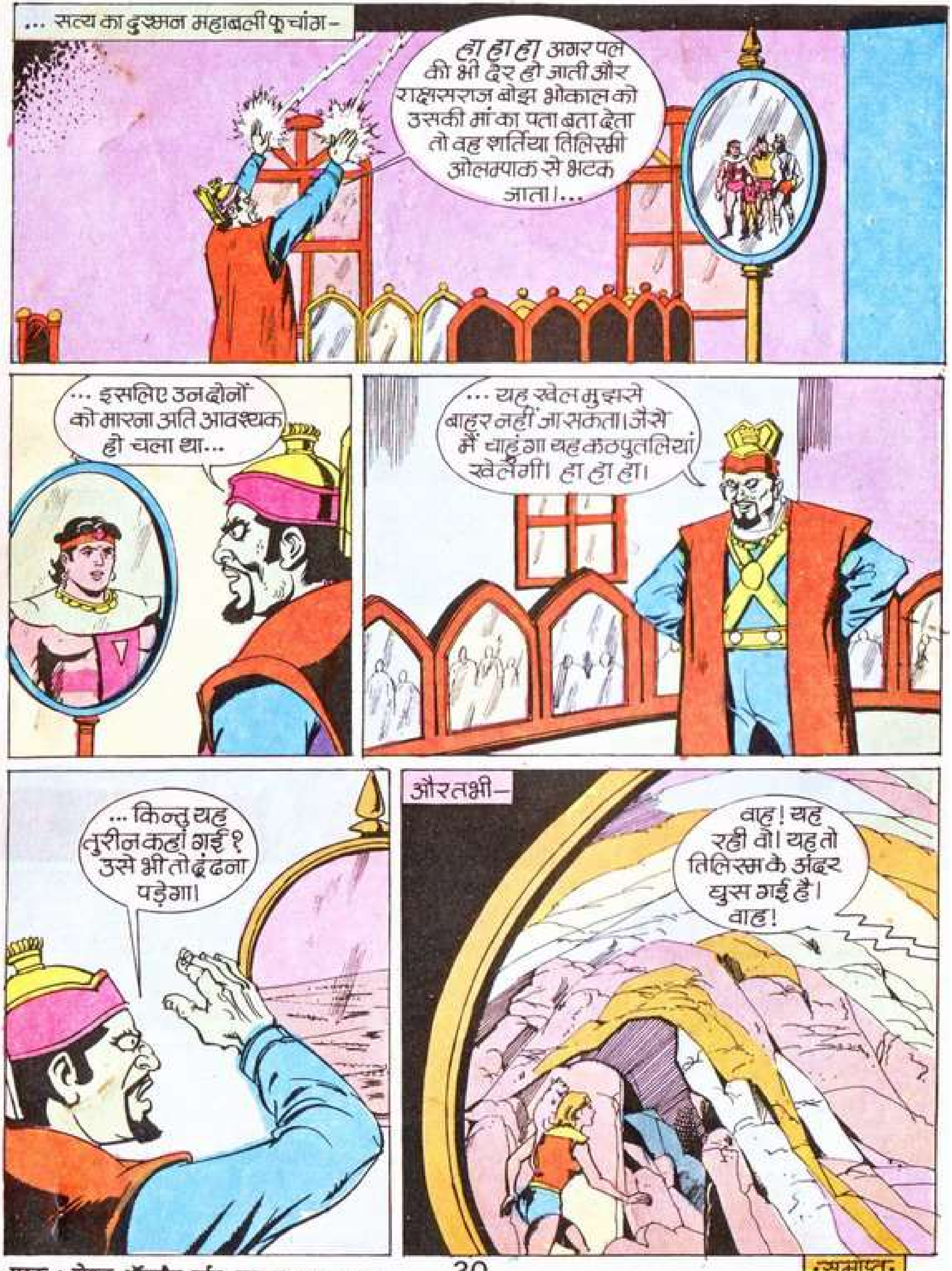
... सत्य का दुश्मन महाबली फूचांग-
हा हा हा अगर पल की भी देर हो जाती और राक्षसराज बोझ भोकाल को उसकी मां का पता बता देता तो वह शर्तिया तिलिस्मी ओलम्पाक से भटक जाता।...
... इसलिए उन दोनों को मारना अति आवश्यक हो चला था...
... यह खेल मुझसे बाहर नहीं जा सकता। जैसे मैं चाहूंगा यह कठपुतलियां खेलेंगी। हा हा हा।
... किन्तु यह तुरीन कहां गई? उसे भी तो ढूंढना पड़ेगा।
और तभी-
वाह! यह रही वो। यह तो तिलिस्म के अंदर घुस गई है। वाह!
-समाप्त-

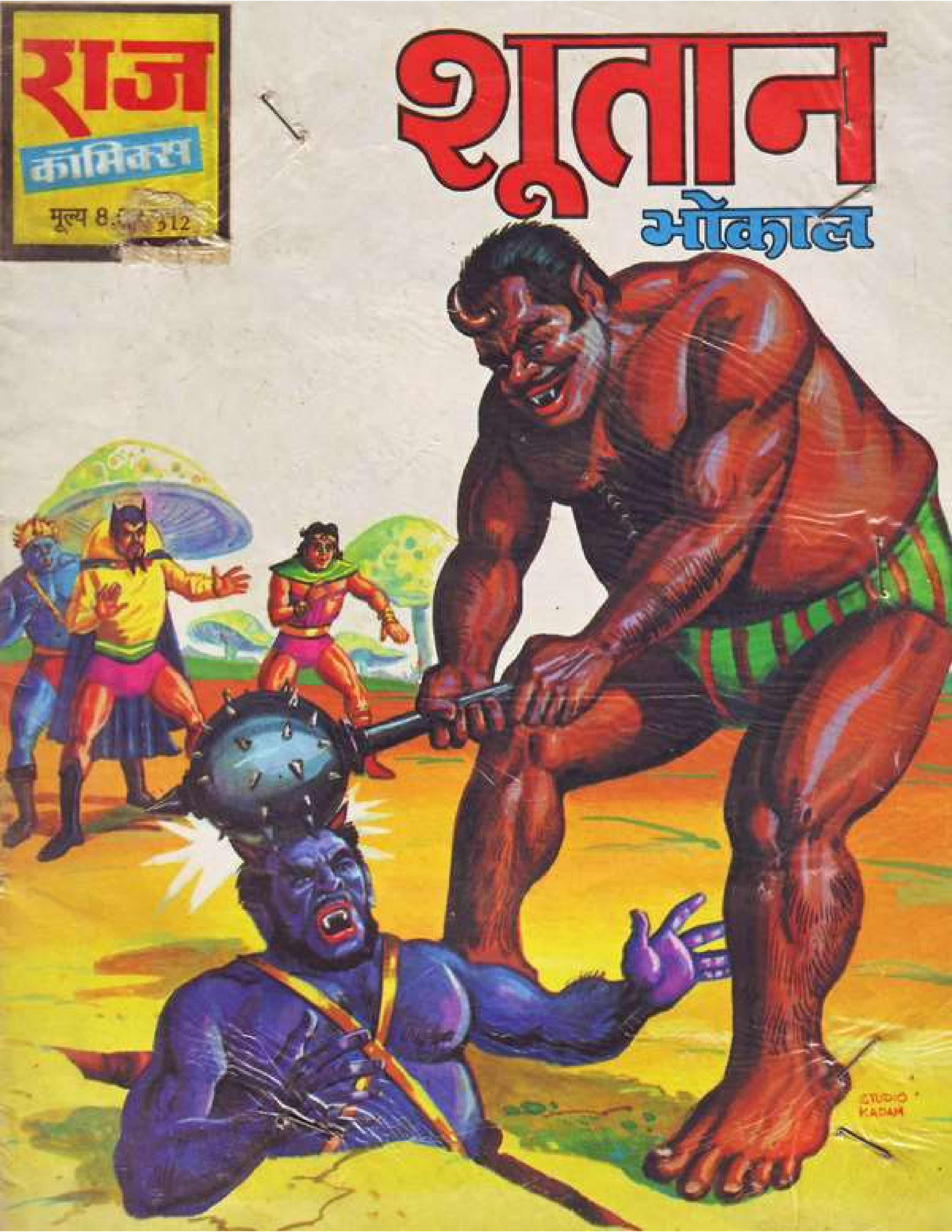
राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.
312
शूतान
भोकाल
STUDIO KADAM

1580

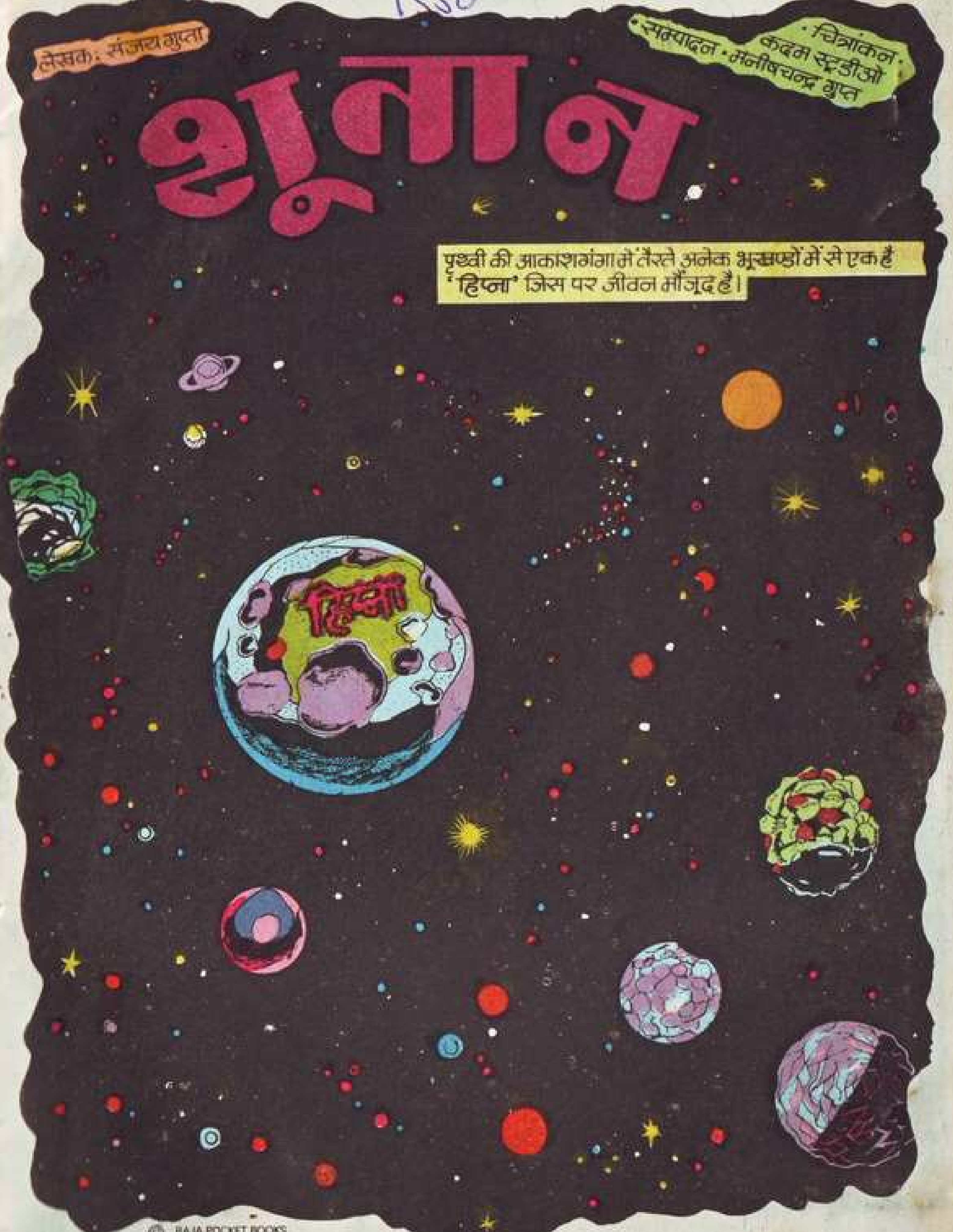
लेखक: संजय गुप्ता
• चित्रांकन •
कदम स्टूडीओ
• सम्पादन • मनीषचन्द्र गुप्त
शुतान
पृथ्वी की आकाशगंगा में तैरते अनेक भूखण्डों में से एक है 'हिप्ना' जिस पर जीवन मौजूद है।
हिप्ना
© RAJA POCKET BOOKS

हिप्ना का एक समृध्दशाली देश है प्रोका।
प्रोका का राजा टोस्कर बहुत न्यायप्रिय, प्रजा वत्सल राजा —
राजकोष की अच्छी स्थिति को देखते हुए इस वर्ष प्रजा से कोई भी लगान नहीं लिया जाएगा।
महाराज टोस्कर जिन्दाबाद!
टोस्कर का साला कास्कोर - महानीच बदमाश और गद्दार।
किस तरह खजाना लुटा रहा है मूर्ख राजा। अब इसका कोई प्रबन्ध करना ही होगा।
डाकोर - कास्कोर का एक मित्र राक्षस, क्रूर हत्यारा —
आओ मित्र कास्कोर, कैसे हो? बिल्कुल ठीक समय पर आये। आओ, भोजन करो।
यह भोजन तो तुम्हीं करो मित्र! किन्तु जल्दी, क्योंकि अब समय आ गया है कुछ कर गुजरने का।

तुम्हारे लिये मैं हर वक्त तैयार हूं मित्र।
भोजन को लात मारकर उठ खड़ा हुआ डाकोर मित्र के काम आने को।
प्रो का राजवैद्य मेस्मर, सम्मोहिनी विद्या का महान जादूगर —
प्रोका के राजमहल में उस वक्त खलबली मची हुई थी —
महाराज को कोई भयंकर बीमारी हो गई है।
राजवैद्य मेस्मर को बुलाओ।
इसका मतलब जहर काम कर गया है।
आनन-फानन में सारथि मेस्मर को लिवाने के लिए भेजा गया —
हाहाहा अब मेरे अच्छे दिन दूर नहीं।
और उस सारथि के पीछे निकल पड़ा कास्कोर भी
इधर राजवैद्य मेस्मर अपने पुत्रों को सम्मोहन की शिक्षा दे रहे थे —
पुत्रो, मानसिक शक्ति अपरम्पार है। इसकी दो अवस्थाएं हैं। एक चेतनमन व दूसरा अवचेतन।
बड़े पुत्र मीतान व जीतान बड़ी लगन से पिता से शिक्षा ग्रहण करते थे।

किंतु छोटा पुत्र शूतान सिर्फ शैतानी करता था।
ऊईss
ही ही ही
मेस्मर को क्रोध तो बहुत आया किंतु–
पुत्र शूतान! तुम्हें नादानियां छोड़ शिक्षा में ध्यान देना चाहिए।
मैं क्या करूं पिताजी, मेरा मन किसी एक काम में लगता ही नहीं।
पिताजी, मैं कल से जरूर पढ़ूंगा। अभी मैं खेलने जा रहा हूं। अपने दोस्त चेरु के साथ।
तभी राजा के सारथि ने वहां प्रवेश किया–
माननीय राजवैद्य जी, शीघ्र चलें, महाराज गंभीर रूप से बीमार हैं।
एक क्षण भी खराब किए बिना मेस्मर रथ पर सवार हो गया।
चलो सारथि! हमें शीघ्र अतिशीघ्र महाराज तक पहुंचा दो।
रथ तीव्र वेग से दौड़ा जा रहा था कि तभी–
उफ! धूल भरी आंधी!
किसी बड़ी दुर्घटना का संकेत था यह।

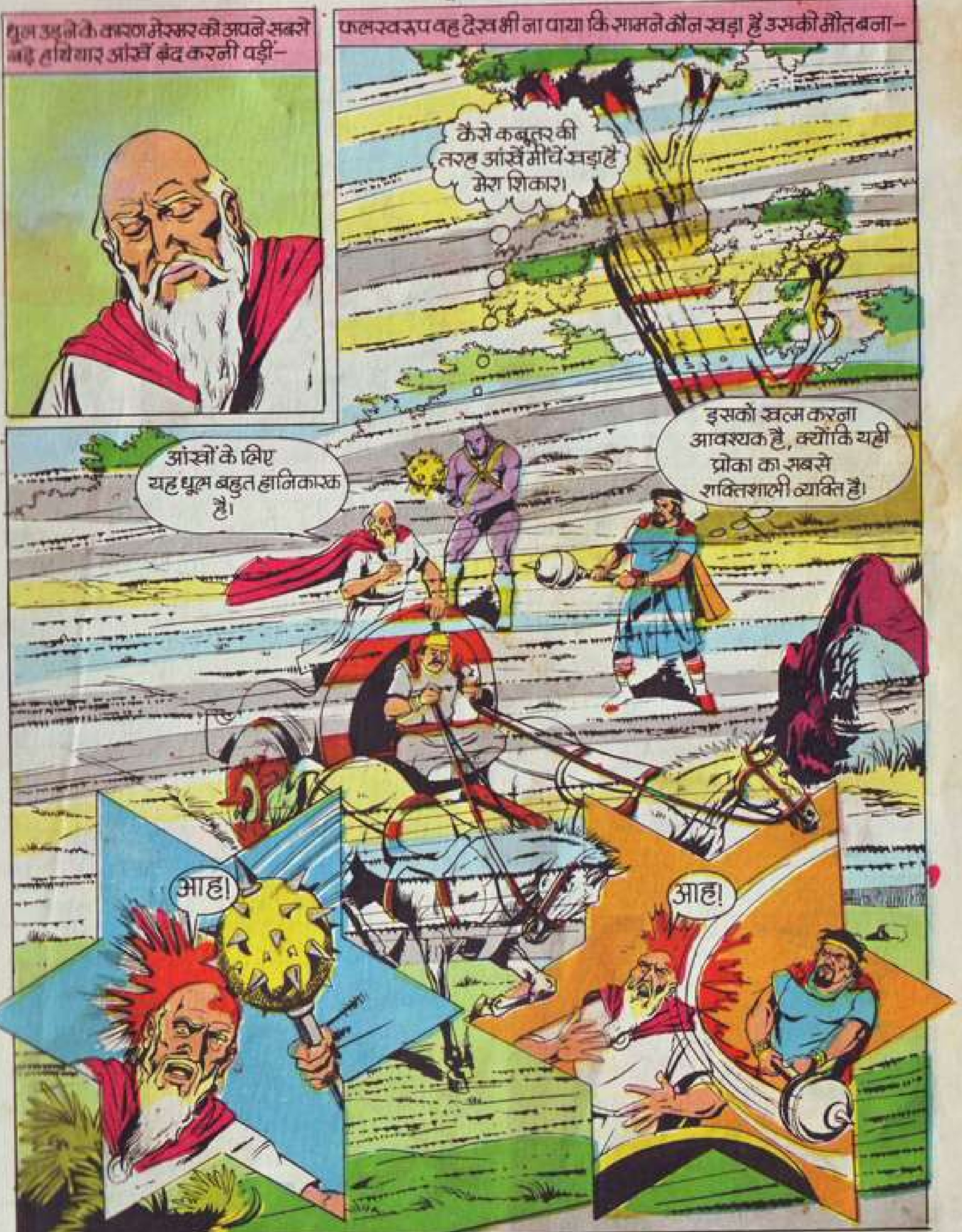
धूल उड़ने के कारण मेस्मर को अपने सबसे बड़े हथियार आंखें बंद करनी पड़ीं–
फलस्वरूप वह देख भी ना पाया कि सामने कौन खड़ा है उसकी मौत बना–
कैसे कबूतर की तरह आंखें मींचे खड़ा है मेरा शिकार।
आंखों के लिए यह धूल बहुत हानिकारक है।
इसको खत्म करना आवश्यक है, क्योंकि यही प्रोका का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति है।
आह!
आह!

और मेस्मर डाकोर की दरिंदगी का शिकार बना जमीन पर पड़ा था —
लो मित्र! तुम तो कहते थे कि यह बहुत शक्तिशाली है। मेरे तो यह कबूतर दो वार भी ना सह सका।
यह कबूतर नहीं है डाकोर! यह बाज है बाज, शक्तिशाली बाज!
अगर इसकी आंखों में धूल न उड़ाई जाती तो तुम ही क्या हिप्ना ग्रह का कोई सूरमा इसे धरती नहीं सुंघा सकता था।
जाओ मित्र! तुम अभी मेरी अद्भुतशक्ति 'अंगारों के नाच' से वाकिफ नहीं हो, इसलिए ऐसा कह रहे हो!
डाकोर के लिए वह खेल रहा होगा किंतु —
टीस्कर वह मेस्मर के निर्जीव शरीर तक से चिंतित था —
कुछ भी हो डाकोर, तुम्हें वादे के अनुसार इसका निर्जीव शरीर हमेशा अपने साथ रखना होगा। मैं इसकी मृत्यु के पश्चात भी इससे डरता हूं!
डाकोर सदा अपने वायदे पर कायम रहेगा मित्र!
मैं चलता हूं राजमहल महाराज के हालचाल देखने। तुम जाओ अपने अगले अभियान पर।
राक्षस चल पड़ा राक्षसी अभियान पर —
बड़े शरम की बात है इतने महान राक्षस से केवल एक बूढ़े की हत्या करवाई, वो भी धोखे से।
कुछ देर बाद उसके रथ ने मेस्मर की कुटिया की धरती रौंद डाली।
डाकोर का प्रिय खेल है खून बहाना।

कांप उठा बालक शूतान अब उसने पेड़ की खोखल से गरदन निकाल कर बाहर झांका —
मेस्मर के चूजों तुम्हारा अंत आ गया! डाकोर के हाथों।
आह!
चीख भी ना सका मीतान।
हिना के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति की कुटिया में इतना निर्मम हत्याकांड —
हाय
च च च... चिकनी चिकनी सूरतवाले प्यारे-प्यारे बच्चो॥
खत्म हुई दो जिन्दगियां।
डाकोर मुड़ा और चल पड़ा।
बस, अब लगी है भूख चलूं गुफा में, पाऊं हिरणों का मांस।
कितनी खुशी का अनुभव कर रहा था जलील लहू बहाकर।
और जिसका लहू धरती पर फैला हुआ था वह बालक शूतान जड़वत हो गया था।
डाकोर डाकोर डाकोर डाकोर
आंखों में तैर रही थी केवल एक सूरत, दिमाग में गूंज रहा था केवल एक नाम—डाकोर।
नन्हा नीचे झुका। अपने नन्हें हाथों से उसने एक तिनका उठाया और—
अभी उछल पड़ेंगे भइया मीतान!
जमीन और आसमान
... दोनों को रुला दिया नन्हे शूतान ने —
उछलते क्यों नहीं भइया? उछलो तुम्हारे कान में गुदगुदी हो रही है।
तब तक करता रहा वह यही हरकत

जब तक उसे विश्वास नहीं हो गया कि ...
मेरे भाई मर गए!
नन्हे मस्तिष्क पर गहरा असर पड़ा भाइयों की निर्मम हत्या का –
मैं बदला लूंगा डाकोर!
भागता चला गया वह डाकोर से टकराने को।
किन्तु नन्हे कदमों ने शीघ्र ही साथ छोड़ दिया।
डाकोर... डाकोर मैं म... आह ...
और छोड़ दिया साथ चेतना ने।
तभी बेहोश पड़े बालक के शरीर को घेर लिया उन अदृश्य किरणों ने –
उसका शरीर हवा में उठा और एक तरफ उड़ चला।
जब शुतान की आंखें खुलीं वह एक ओजस्वी वृद्ध के समक्ष खड़ा था –
यह मैं कहां आ गया? मुझे डाकोर चाहिए।
पुत्र शुतान! शांत हो जाओ।
जाने क्या सम्मोहन था उस नेत्रहीन की आवाज में।

शूतान एकदम शांत हो गया।
पुत्र मेरी बात गौर से सुनो! मैं हूं तुम्हारे पिता का गुरू पासेगुर।
चुपचाप सुन रहा था शूतान पासेगुर का हरेक शब्द बड़ी गौर से–
तुम अपने भाइयों की मौत का बदला उस भयानक राक्षस डाकोर से तभी ले सकोगे जब उसके समान शक्तिशाली बनोगे।
कहता चला गया पासेगुर–
मैं बनाऊंगा तुम्हें शक्तिशाली। मैं तुम्हें दूंगा शिक्षा मानसिक शक्ति बढ़ाने की।
पासेगुर का एक-एक शब्द उसके जेहन में घुलता जा रहा था।
बोलो, सीखोगे मुझसे सम्मोहन विद्या लोगे डाकोर से बदला?
सम्मोहन में बंध चुका था शूतान पासेगुर की आवाज के।
हां हां हां
मैं सम्मोहन सीखूंगा।
मैं बदला लूंगा डाकोर से।
मैं बदला लूंगा उस हत्यारे से।

तब बोला पासेगुर—
पुत्र सुनो, डाकोर तुम्हारे भाइयों का ही नहीं तुम्हारे पिता का भी हत्यारा है।
क्या कह रहे हो गुरूवर! क्या हुआ मेरे पिताजी को?
शूतान का नन्हा सा दिल धाड़-धाड़ बजने लगा।
राक्षस डाकोर ने उन पर भी हमला किया था और...
पासेगुर ने शूतान को मेस्मर के साथ घटी पूरी घटना सुना दी।
चीख उठा शूतान—
नहीं! यह सच नहीं हो सकता। यह झूठ है।
हां, यह पूरी तरह से सच नहीं है।
क्योंकि डाकोर का पहला वार पड़ते ही वह मोहनिद्रा की स्थिति में आ गया था। इस स्थिति में आने के बाद दर्द, भूख, प्यास पर काबू हो जाता है। डाकोर उसे मृत ही समझ रहा है, किन्तु वह जीवित है।
चैन की एक छोटी सी सांस ली शूतान ने—
फिर मैं उन्हें छुड़वाऊंगा।
जरूर, किन्तु शिक्षा पूरी होने के बाद।
और कुछ सोच-कर शूतान के मुख पर कठोरता आती चली गई।
फिर वह लगन से सम्मोहन विद्या ग्रहण करने में जुट गया।
एकाग्रचित होने की कोशिश करो पुत्र!

अवचेतन मन की शक्ति अपार है और गति निर्बाध है।
काल अपने पंख फैलाए हुए उड़ रहा था।
शूतान शिक्षा में निपुणता हासिल कर रहा था--
अब तुम्हें आत्म सम्मोहन की परीक्षा करनी है।
पन्द्रह वर्ष बाद –
पुत्र! आज तुम इस काबिल हो चुके हो कि डाकोर से बदला ले सको।
तो मुझे आज्ञा दीजिए गुरुवर, मैं डाकोर और कास्कोर को उनकी करनी की सजा देने जाऊं!
पासेगुर ने एक रहस्योद्घाटन किया–
पुत्र शूतान! अब डाकोर हिप्ना ग्रह पर नहीं है।
तो फिर कहां है वह शैतान?
वह महान खजूरा के निमंत्रण पर तिलिस्मी ओलम्पाक भेजा जा चुका है और वहीं हैं तुम्हारे पिता मेस्मर भी।
तो आप मुझे वहां भेज दें! मानसिक शक्ति से यह सम्भव है!
बेशक, किन्तु मैं तुम्हें वहां नहीं पृथ्वीलोक भेजूंगा। वहां तिलिस्मी ओलम्पाक का रास्ता तुम्हें खुद बनाना होगा।
ठीक है गुरुवर! आप ऐसा ही करें।

महान मानसिक संसार में खो गया और फिर—
और फिर धीरे-धीरे लुप्त हो गया शैतान—
अगले ही पल शैतान ने खुद को पाया एक नए संसार में—
ओह तो यह है पृथ्वीलोक।
पृथ्वीलोक जहां उसे ढूंढना है तिलिस्मी ओलमपाक जाने का रास्ता
वह एक राहगीर के पास पहुंचा—
यह कौन सा नगर है बन्धु?
परदेसी हो क्या भाई! यह विकासनगर है। मस्तकलंदर राजा विकासमोहन का राज है यहां।
बन्धु! मैं जादूगर हूं। क्या इस नगर में मुझे कोई काम मिल सकता है?
हो हो हा जादूगर हो भइया तो जादूगर भी कोई काम करते हैं भला।
उस राहगीर से कुछ और जानकारियां लेकर शैतान आगे बढ़ चला।
एक मेले में पहुंचकर उसके कदम थमे।
जादूगर जमालपाशा हाए हाए।
जादूगर जमालपाशा बाहर आओ।
क्या चक्कर है यहां पर।
हमारे पैसे वापस करो।

जानने के लिए वह शामियाने में प्रविष्ट हो गया
क्या बात है चाचा! बाहर लोगों की भीड़ चिल्ला रही है और आप यहां सिर पर हाथ धरे बैठे हैं।
क्या बताऊं बेटा, मेरी जादू की छड़ी जिसके जादू के जोर से मैं अंगारों पर चलने का जादू दिखाता था वह छड़ी गायब हो गई अभी।
मार डालो मार डालो चोर है जादूगर नहीं
अब तुम्हीं बताओ, उस छड़ी के बिना अगर मैं अंगारों पर चला तो भुन नहीं जाऊंगा क्या?
कह तो तुम ठीक रहे हो, किंतु अब इस भीड़ का क्या करोगे?
बहुत बड़ी समस्या थी वह।
जिसे सुलझाया शूतान ने—
मैं करूंगा यह काम। मैं चलूंगा अंगारों पर।
नहीं! तुम पागल हो क्या?
किन्तु, जमालपाशा किसे पागल समझ रहा था!
सम्मोहिनी विद्या के महान जादूगर को—
!!
आत्मसम्मोहन से मोहनिद्रा की अवस्था में आने के बाद दर्द का अहसास नहीं होता।
वाह!
वाह!
अदभुत
अंगारों पर चलने के बाद शूतान उछला कांटों के पलंग पर—
मैं चाहूं तो पूरी भीड़ को सम्मोहित करके खुद एक तरफ खड़े होकर भी इन्हें ऐसा महसूस करा सकता हूं कि जैसे मैं कांटों के पलंग पर ही बैठा हूं।...
... किन्तु, मेरे लिए यह कार्य भी आसान है।
उफ! बिना किसी जादुई छड़ी के यह सब कैसे कर रहा है। यह तो मुझसे भी बड़ा जादूगर हुआ।
ऐसे अदभुत खेल विकासनगर की जनता ने ना कभी देखे थे, ना कभी सुने थे।

खेल खत्म हुआ–
वाह भाई, वाह!
क्या खेल दिखाया!
तबियत प्रसन्न हो गई।
जादूगर जमालपाशा लपककर पहुंचा शुतान के पास–
बेटा! तूने आज इस बूढ़े को बचा लिया। इज्जत रख ली आज मेरी तूने।
यही मेरा फर्ज था चाचा!
जादूगर जमालपाशा की खुशी का ठिकाना न था–
कौन हो तुम पुत्र! किस नगर के हो बताओगे?
मैं शुतान, पुत्र मेस्मर हिप्ना ग्रह वासी हूं!
फिर शुतान जमालपाशा को सारी व्यथाकथा सुनाता चला गया।
सुनकर तुरन्त बोला जमालपाशा–
तिलिस्मी ओलम्पाक, ओह! बेटा, तुम बहुत सही वक्त पर सही जगह पहुंचे हो।
कैसे चाचा?
यहां के राजा विकासमोहन के मित्र महाबली फूचांग कुछ चुने हुए लोगों को तिलिस्मी ओलम्पाक भेजने वाले हैं।
सच चाचा!
खुशी चमक उठी शुतान के चेहरे पर।
हां सच, और कल ही वह विकासनगर क्रीड़ा-स्थल पर तिलिस्मी ओलम्पाक भेजने के लिए सर्वश्रेष्ठ युवकों का चयन करने वाला है।
मैं वहां जरूर जाऊंगा चाचा! उसे मेरा चयन करना ही होगा।
दोनों की ही अत्यंत खुशी थी कि वे एक-दूसरे के काम आए।

अगले दिन विकासनगर क्रीड़ास्थल पर शूतान का तिलिस्मी ओलम्पाक जाने के लिए चयन हो गया—
चाचा! मैं बहुत खुश हूँ।
बेटा! जब भी वापस आओ अपने चाचा से जरूर मिलना।
फिर विजेताओं को भेज दिया गया तिलिस्मी ओलम्पाक—
विकासनगर क्रीड़ास्थल में हुए विजेताओं के चयन की शानदार दास्तान को जानने के लिए पढ़ें भोकाल सीरीज कामिक्स "खौफनाक खेल"
भोकाल, शैला व अलिकूर को अपनी कहानी सुनाने के बाद शूतान चुप हो गया—
शूतान! मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारे पिता तुम्हें जरूर मिलेंगे।
हाँ दोस्त! उस शैतान डाकोर से जल्दी ही हमारा सामना होगा।
शूतान चाचा! मैं भी उस राक्षस के एक पत्थर मारूंगी।

दूरदर्शन दर्पणों पर शूतान की मार्मिक कहानी सुनने के बाद पृथ्वी के सभी राज्यों में शूतान के प्रति सहानुभूति की लहर दौड़ गई–
उफ! यह खुद इतना दुखी है और हमें कैसे हंसाता रहता था।
यह था गंजा गढ़ का राजा टकलाकपाल।
परेशानी यह है कि शक्ल से कभी इतना दुखी नहीं लगा यह।
यह था सूरसगढ़ का राजा परेशान लालीसिंह।
शक्ल तो ऐसी है कोई देख ले तो रोटी नसीब ना हो।
यह थी झांसी की रानी खांसी।
खाजमोला का राजा सतमोला–
एक गोली और दो हाजमे की। कहीं डाकोर और शूतान की शानदार लड़ाई के समय मेरा पेट न खराब हो जाए।
कमलानगर का राजा कमाल-सिंह–
इस खेल को देखने के लिए मैं दो रात सोया भी नहीं।
शिकारपुर के राजा बावलदेव–
हम तो अपनी बावली को कह देंगे कि जैसे ही डाकोर दिखे हमें जगा दे।
शक्तिनगर का राजा लकवासिंह–
बहुत खूब टक्कर होगी शूतान और डाकोर की।
रूपनगर की राजकुमारी सूपर्णखां–
कितना सुन्दर नौजवान है शूतान!
प्रेमनगर की रानी ताड़का–
मैं तो इससे प्रेम करने लगी हूं, अरे, अरे, यह क्या?

भोकाल! वह देखो आकाश में कैसी रोशनी छा रही है।
बहुत विचित्र दृश्य है।
हां. क्या है यह?
मुझे तो लगता है कोई आफत आने वाली है।
बहुत जबरदस्त आफत थी वह।
आसमान में नाच रहे थे अंगारे-
भोकाल! यह तो जलते हुए अंगारे हैं।
कहीं ये बरसने तो नहीं लगेंगे।
जैसे वे अतिक्रूर के ही बोलने का इंतजार कर रहे थे।
बरस पड़े अंगारे मूसलाधार बारिश की तरह-
श्वेता!
शूतान ने श्वेता को अपनी आड़ में ले लिया-
मेरा क्या बिगाड़ेंगे ये अंगारे।
शूतान आत्मसम्मोहन की उस स्थिति में आ गया था जिसमें दर्द का अहसास नहीं होता।

किंतु, ओलिकर उन अंगारों की तीव्र वेदना सहने के लिए मजबूर था-
उफ! मोटी चमड़ी भी कब तक यह पीड़ा सहेगी!
और भोकाल-
असहनीय पीड़ा से बचने के लिए कुछ करना ही होगा।
भोऽऽकाऽऽलऽऽ
रूप परिवर्तन हो गया उसका।
और इस तरह तीनों उस भयंकर मुसीबत का सामना कर रहे थे-
शीघ्र ही कुछ ना किया गया तो यह मुसीबत हमें निगल जाएगी!
मेरा शरीर बुरी तरह जल रहा है।
किंतु, यह तो केवल एक शुरुआत थी।

उठा वहां एक भयंकर अट्टहास-
ओह, तो यह है डाकोर और उसका अंगारों का नाच
खुदागंज का राजा अल्लाहू।
का राजा
उफ! मुसीबत पर मुसीबत।
हा हा हा हा
पंजाब का राजा पंजाबी-
वाह क्या रोमांचक खेल चल रहा है।
क्या मुसीबत है ?
डाकोर मेरा दुश्मन!
कौन है यह ?
? ?
खेतगढ़ का राजा स्वरूप तवारसिंह-
ये राक्षस इनकी गोभी खोद देगा

डाकोर ने अपनी गदा घुमाई—
डाकोर की गदा का वार बड़े-बड़े सूरमा नहीं सह पाते।
अंगारों की बारिश तब तक थम चुकी थी।
भोकाल भी ना बच सका डाकोर की गदा के प्रचण्ड वार से—
हा हा हा
और भोकाल अंगारे चाटने पर विवश हो गया
उफ!
भोकाल आगे बढ़ा किन्तु, चीख उठा शूतान—
नहीं भोकाल! नहीं! यह मेरा शिकार है। तुम पीछे हट जाओ!
भोकाल पीछे हट गया।
शूतान ने श्वेता को भोकाल के सुरक्षित हाथों में सौंप दिया—
तुम इसे संभालो भोकाल और शूतान की सम्मोहन कला का अद्भुत दृश्य देखो!
शूतान ने हाथ ऊपर उठाए—
खूबा खबा भोबला

डाकोर को ऐसा लगा जैसे सामने से उससे भी बड़ा शक्तिशाली राक्षस चला आ रहा है-
हाय! यह पचालू कहां से आ गया?
हे हा हा हा
शूतान के सम्मोहन का कमाल डाकोर को ऐसा राक्षस दिख रहा था जो वहां था ही नहीं।
इसे देखकर तो मेरी जान ही निकल जाती है।
हा हा हा आज आया है हाथ में। अब नहीं बचेगा तू।
डाकोर की डर के मारे हालत खराब थी।
उसके हाथ से उसकी गदा भी छूट गई---
उफ! मैं इसका मुकाबला भी नहीं कर सकता।
ही हा ही खड़ा हो।
पचालू ने अपनी गदा घुमाई-
हाय!
क्या अद्भुत युद्ध विद्या थी शूतान की। डाकोर जैसा शैतान जमीन से जा लगा था।
जबकि असल में हो यह रहा था -
नाना ना... मुझे मत मारो पचालू।
मैं तुझे बुरी तरह तड़पाकर मारूंगा नीच।
चाचा! इसे कौन दिख रहा है? यह चीख क्यों रहा है?
यह शूतान चाचा का जादू है बेटा।
तो बता मेस्मर का ताबूत कहां है?
वो तिलिस्मी ओलम्पाक में बंद है जहां अब मैं भी नहीं जा सकता
शूतान जो पूछना चाह रहा था डाकोर वही बक रहा था।

उसको लगा कि पचालू ने बहुत जोर से उस पर गदा का वार किया है —
तो ले फिर मर।
आह! मरा!!
डकोर की हृदय गति रुक गई।
और डकोर —
मर गया नीच।
कमाल का जादू है। बिना हथियार के बंदे की जान ले ली।
उसने खुद को मरता हुआ समझा और वह सचमुच मर गया।
शूतान की सम्मोहन शक्ति का सब लोहा मान गए।
मधुबन का राजा मार्कंडेयसिंह —
वाह, क्या शानदार बदला लिया है शूतान ने।
वाह! शूतान चाचा!
बाकू का राजा राकू —
पचालू-पचालू करता हुआ मर गया, जबकि वहां कोई पचालू कचालू था ही नहीं।
तेजगढ़ का राजा धीरदेव —
आएं रुकावट के लिए खेद है, यह क्या मतलब हुआ?
रुकावट के लिए खेद है!
यह है विकासनगर विज्ञापन प्रसारण सेवा का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र
हमेशा इस्तेमाल करें मोहिनी स्वास्थ्य घुट्टी आपके बच्चों के बेहतरीन स्वास्थ्य के लिए।
आ हा मीठी मीठी

उस विज्ञापन के फलस्वरूप मोहिनी बुट्टी की बिक्री हर देश में फैल गई –
महाराज हमारी मोहिनी बुट्टी की मांग पूरे विश्व में हो रही है।
वाह फिर तो मोहिनी तेल, मोहिनी दर्द निवारक, मोहिनी रूप निखार व अन्य चीजों के भी विज्ञापन आने चाहिए।
महाराज! हमें यह जबरदस्त मांग पूरी करने के लिए और कारखाने बनवाने पड़ेंगे।
महाबली फूचांग के पास वह संदेश पहुंचा –
महाराज! विकास-मोहन चाहते हैं कि महाबली दूरदर्शन पर अन्य चीजों के भी विज्ञापन दें।
हां, हां, जरूर देंगे।
खूब खजाने भर ले विकासमोहन! तिलिस्मी ओलम्पाक मेरे हाथ आते ही तेरे खजाने समेत उड़ जाऊंगा यहां से। हा हा हा।
अब तुरीन को देखूं वह क्या कर रही है तिलिस्मी ओलम्पाक में।
तुरीन और कपाला दोनों बढ़े चले जा रहे थे तिलिस्मी ओलम्पाक में –
म्याऊं ऽऽ
पता नहीं कितनी लम्बी सुरंग है। यह तो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही है।

किंतु कपाला भी शायद तुरीन के इन्हीं शब्दों का इंतजार कर रही थी।
आह! उफ!
म्याऊं
और अब वे तेजी से फिसले जा रहे थे --
उफ! यह क्या मुसीबत आ पड़ी।
तब फैली तुरीन की आंखें जब --
उसने देखा वह खौफनाक दृश्य --
ओह! कपाला बचो।
कपाला मौत के मुंह में चली गई।
इससे पहले कि वह मकर दानव अपना जबड़ा बंद करता, तुरीन उछली और --
तू मेरी कपाला को हजम नहीं कर सकता दानव!
शक्ति में पुरुषों की बराबरी कर रही थी तुरीन।
मगरमच्छ का जबड़ा चीर दिया उस बिजली की बेटी ने --
खर्रर्र
और कपाला को सुरक्षित निकाल लिया उसने मौत के मुंह में हाथ डालकर --
चुम्म
किन्तु तालाब में एक मकर दानव थोड़े ही था।

तो पूरा मकरदानवों से भरा पड़ा था—
ऊंह
इतने मकरदानवों का सामना एक ही तरह संभव था—
चल कपाला!
कपाला का आकार बढ़ने लगा—
तुरीन उछलकर कपाला पर सवार हो गई और—
चल उड़ कपाला!
मकरदानवों का शिकार धोखा दे गया उन्हें।
तुरीन ने वार किया—
चीख भी ना निकलेगी अब तुम्हारी।
तोड़ दिया मकरदानवों ने।
कुछ ही देर बाद तालाब में एक भी जीवित मकरदानव नहीं दिखाई पड़ रहा था—
हो सकता है कुछ अभी पानी के अंदर हों। किन्तु इस तरह कब तक टंगे रहेंगे।
तभी उसके दिमाग में एक बिजली सी कौंध गई।

और उसने विद्युत प्रहार किया--
अगर इस तालाब का सारा पानी सुखा दिया जाए तो ?
तालाब खाली हो गया और दिखने लगा तल-
वाह! तालाब के तल में एक और रास्ता।
तुरीन उतर गई एक और सुरंग में-
देखते हैं यह रास्ता कहां ले जाएगा।
कपाला अपने पूर्व रूप में आ गई थी।
महाबली फूचांग-
शाबास तुरीन! तुमने तिलिस्म की पहली बाधा पार करली है।
फूचांग ने दूरदर्शन आईने का दृश्य बदला-
अब देखता हूं भोकाल, शैतान व अतिक्रूर क्या कर रहे हैं ?
भोकाल, शैतान, अतिक्रूर व श्वेता खड़े थे एक खौफनाक मुसीबत के सामने-
उफ! यह क्या बला है ?
घबराओ मत मैं देखता हूं इसे।
जबरदस्त
ऐसी क्या जबरदस्त बला थी वह!

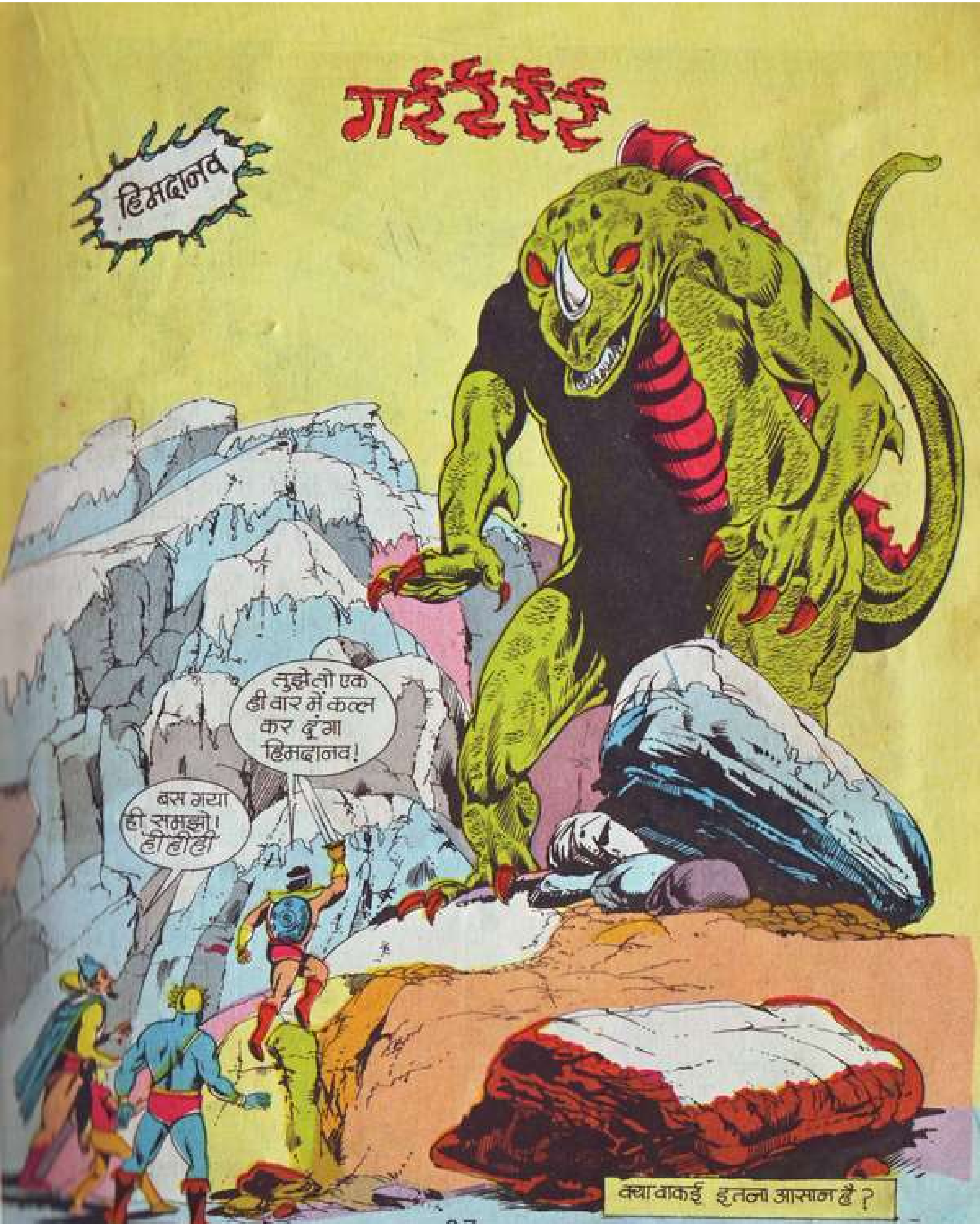
हिमदानव
तुझे तो एक ही वार में कत्ल कर दूंगा हिमदानव!
बस गया ही समझो। ही ही ही
क्या वाकई इतना आसान है?

हिमदानव ने हिमशिला उठाई और-
उफ!
किसी भी पल हिमशिला भोकाल को रौंद देती-
... कि बीच में आ गया शूतान-
भोकाल बचो!
हृदय जमा दिया उस अगले पल ने।
हिमशिला की चपेट में आ गया शूतान -
आह ss
शिला से सिर टकराने से भोकाल भी अपने होश खो बैठा।
अतिक्रूर ने श्वेता को उठाया और -
पहले मुझे इस बच्ची को सुरक्षित जगह पहुंचाना है फिर निबटूंगा इस राक्षस से।
भोकाल चाचा! शूतान चाचा!
अतिक्रूर आगे और हिमदानव पीछे -
मुझे छोड़ दो मेरे दोनों चाचा वहीं रह गए।
जल्दी ही कुछ करना होगा। फिर उन दोनों की खबर भी लेनी है।
बर्फ से बने उस पुल की तरफ।
जो कि उनका वजन सह पाने के काबिल नहीं लग रहा था-
बस, यह पुल पार कर जाऊं।
किन्तु अपनी जान की कीमत तो उनमें से किसी की नजर में नहीं थी।

पुल पार कर गया अतिक्रूर-
हिमदानव ने पैर आगे बढ़ाए-
यह भी अगर पुल पार कर गया तो
बढ़ा तो वह तेजी से आ रहा था-
तभी कौंधा अतिक्रूर के दिमाग में एक जबरदस्त विचार-
मेरी ठोकर यह पुल हरगिज नहीं सह सकता।
और हिमदानव के पैरों के नीचे से पुल खिसक गया-
अपा धर्र

आ गिरा हिमदानव सैकड़ों फिट गहरी खाई में-
धर्र
आ
जहां पर सिर्फ मौत की आखिरी आवाज ही गूंजती है।
लम्बी सांस ली चैन की अतिक्रूर ने-
चलो जान छूटी हिमदानव से। अब भोकाल, शूतान. ... अरे यह श्वेता बेहोश हो गई।
नन्ही बच्ची अपने दोनों चाचाओं के लिए चीखते-चीखते होश खो बैठी।
अब... अब मैं उस तरफ कैसे जाऊं भोकाल और शूतान की खोज खबर लेने।
फंस कर रहा गया अतिक्रूर।
उधर भोकाल को कुछ पल बाद आया होश-
उफ! मैं बेहोश हो गया था... शूतान! शूतान का क्या हुआ होगा?
और शूतान का ख्याल आते ही उसकी नजर गई हिमशिला पर
वह फुर्ति से उठा और-
नहीं शूतान, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मेरी खातिर तुम अपनी जान नहीं दे सकते।
भोकाल के असीम बाहुबल के सामने उस शिला ने कब तक टिके रहना था।
अंततः वह दूर तक लुढ़कती चली गई और-
हाय! शूतान कहां गया। उसका तो यहां नामों निशान नहीं है। जबकि मैंने खुद उसे हिमशिला की चपेट में आते देखा था।
पूरी माथापच्ची करने के पश्चात-

फिर उसे चिन्ता हुई श्वेता व अतिक्रूर की -
बर्फ पर बने इन निशानों के पीछे चलता हुआ मैं उन तक पहुंच जाऊंगा।
शूतान को खोकर भोकाल चला श्वेता व अतिक्रूर को ढूंढने।
इस तरह वह शीघ्र ही अतिक्रूर व श्वेता के सामने खड़ा था-
अतिक्रूर, तुम ठीक हो? श्वेता ठीक है?
भोकाल चाचा!
हां मित्र! हम ठीक हैं और हिमदानव मर चुका है।
भोकाल ने अपनी ढाल उठाई और खाई के पार उड़ चला-
मैं वहीं आ रहा हूं मित्र!
अगले ही पल वह अतिक्रूर के पास पहुंच गया।
ओह! भोकाल चाचा, आप को देखकर मैं कितनी खुश हूं, लेकिन शूतान चाचा कहां रह गए?
शूतान वह.. ..वह गायब हो गया अतिक्रूर!
शूतान गायब, पर कहां?
फिर दोनों ने एक-दूसरे के साथ घटी घटनाएं सुनीं।
महाबली फूं चांग-
शूतान हाहा हा वह भी पहुंच गया तिलिस्म के अंदर सही-सलामत। हाहाहा।
• समाप्त •
यह कॉमिक्स कैसी लगी? अपनी अमूल्य राय से जरूर अवगत कराएं।
• संजय गुप्ता, 1603, दरीबा कलां, दिल्ली-110006.

राज कॉमिक्स

संख्या 321

अतिक्रूर

भोकाल

भोकाल सीरीज

1687

अतिक्रूर

लेखक: संजय गुप्ता सम्पादन: मनीषचंद्र गुप्त। चित्र: दिलीप कदम, जयप्रकाश जगताप

भुजंग देश के गांव भोजपुर के श्मशान की वह अतिव्यस्त रात। एक के पीछे एक लाशें श्मशान में पहुंच रही हैं। श्मशान का चांडाल कपालफोड़ व उसका दस वर्षीय पुत्र अतिक्रूर दोनों अतिव्यस्त हैं।

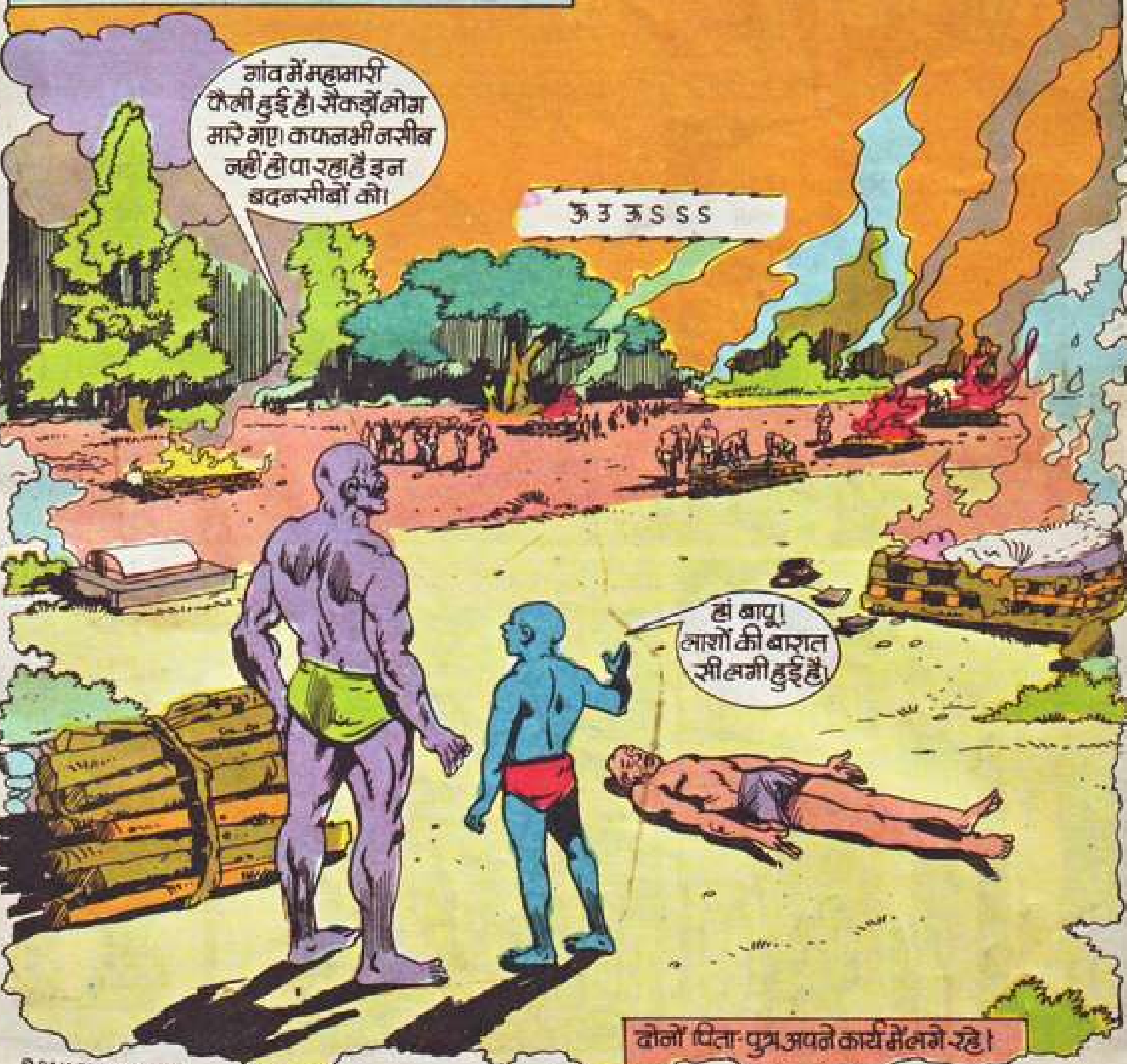

© RAJA POCKET BOOKS

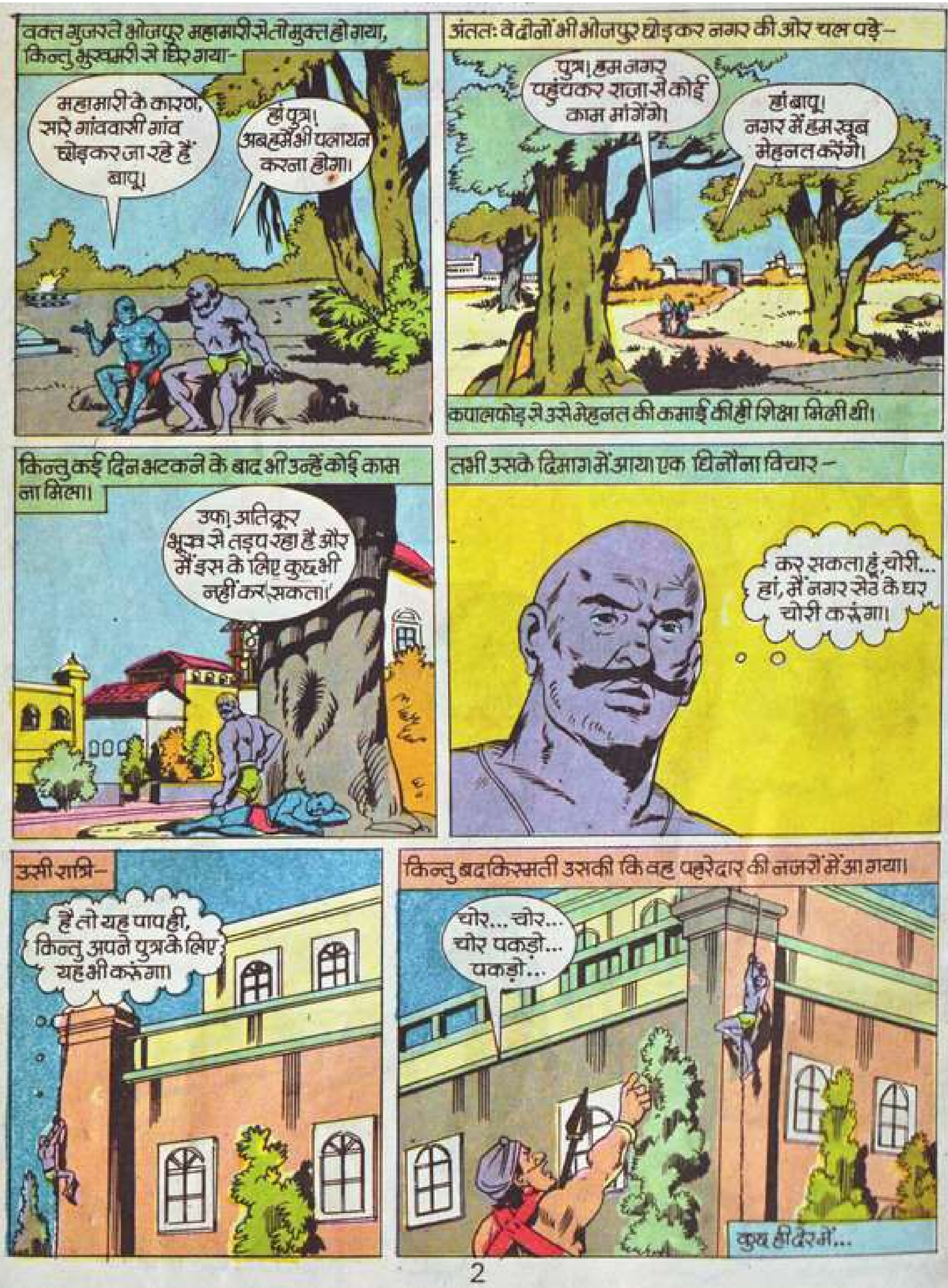

वक्त गुजरते भोजपुर महामारी से तो मुक्त हो गया, किन्तु भुखमरी से घिर गया–
महामारी के कारण, सारे गांववासी गांव छोड़कर जा रहे हैं बापू।
हां पुत्र। अब हमें भी पलायन करना होगा।
अंततः वे दोनों भी भोजपुर छोड़कर नगर की ओर चल पड़े–
पुत्र। हम नगर पहुंचकर राजा से कोई काम मांगेंगे।
हां बापू। नगर में हम खूब मेहनत करेंगे।
कपालकोड़ से उसे मेहनत की कमाई की ही शिक्षा मिली थी।
किन्तु कई दिन भटकने के बाद भी उन्हें कोई काम ना मिला।
उफ्। अतिक्रूर भूख से तड़प रहा है और मैं इस के लिए कुछ भी नहीं कर सकता।
तभी उसके दिमाग में आया एक घिनौना विचार–
कर सकता हूं, चोरी... हां, मैं नगर सेठ के घर चोरी करूंगा।
उसी रात्रि–
हैं तो यह पाप ही, किन्तु अपने पुत्र के लिए यह भी करूंगा।
किन्तु बदकिस्मती उसकी कि वह पहरेदार की नजरों में आ गया।
चोर... चोर... चोर पकड़ो... पकड़ो...
कुछ ही देर में...

... वह नगरवासियों के शिकंजे में फंसा हुआ था-
नहीं, मुझे छोड़ दो।
सुबह इसे राजदरबार में ले चलो। महाराज इसका फैसला करेंगे।
भुजंग देश में चोर हे प्रभु।
उसे बंदीगृह भेज दिया गया।
अगली सुबह कपालफोड़ लाया गया राजदरबार में-
महाराज न्यायप्रियसिंह की जय। यह चांडाल नगर सेठ के घर चोरी करता पकड़ा गया है।
क्रोध से उबल पड़ा राजा न्यायप्रिय-
भुजंग देश में चोरी। इसे चौराहे पर खड़ा करके कोड़ों से पीटा जाए।
महाराज! मेरी तो सुनिये।
उसकी एक न सुनी गई-
एक चोर की कोई सुनवाई नहीं होती। ले जाओ सेनानायक, इसे हमारे सामने से।
चल चोर चांडाल।
बहुत कड़े कानून थे राजा न्यायप्रिय के।
कपालफोड़ को खड़ा किया गया नगर चौराहे पर।
सुनो, सुनो, नगरवासियो! 'यह चांडाल कल चोरी करता पकड़ा गया है। इसे महाराज ने कोड़ों की सजा सुनाई है।
चोर
मारो मारो
चोर चोर
बापू और चोर, नहीं ये नहीं हो सकता।
अतिक्रूर कैसे मान ले कि उसका मेहनतकश बापू चोर हो गया है।

सेनानायक ने कोड़ा उठाया-
अब इसकी चीख गूंजेगी।
किन्तु-
चीख गूंजी सेनानायक की-
हाएऽऽ
अपने बाप को अतिक्रूर कहां पिटता हुआ देख सकता था।
पुत्र! यह क्या किया तूने?
मैंने ठीक किया। यह मार क्यों रहा था तुम्हें?
अपमान की आग में जलता सेनानायक...
...दहाड़ा-
पकड़ लो पिल्ले को। इसे भी मजा चखाऊंगा मैं।
बरस पड़ा फिर सेनानायक कपालफोड़ पर-
सड़ाक
सड़ाक
नहीं! नहीं! मत मार बापू को मैं तेरा खून पी जाऊंगा सेनानायक!
और फिर छूट निकला अतिक्रूर-
मेरे बापू को मारता है नीच! मैं तुझे नहीं छोडूंगा।
ज्वाला धधक रही थी अतिक्रूर के दिल में।

सेनानायक के शरीर में उस शक्तिशाली बालक का सामना करने लायक ताकत नहीं थी—
अब तुझे मज़ा चखाऊंगा मैं।
टूट पड़ा अतिक्रूर सेनानायक पर—
मेरा बापू चोर नहीं हो सकता कमीने।
अरे, बचाओ ऽऽ बचाओ मुझे इस पिल्ले से।
स्तब्ध खड़े सैनिक जबतक उसतक पहुंचे—
हाए, मार डाला। दम निकाल दिया मर जाने ने। अब बचेंगे नहीं दोनों।
छोड़ो, छोड़ो मुझे।
सेनानायक के सीने में ज्वालामुखी धधक रहा था।
दोनों को बांध दिया गया—
जिस्म पर चढ़ी खाल ना उतार दी तो नाम शैतानसिंह नहीं।
फिर उसके हाथ नहीं रुके—
सड़ाक
सड़ाक
लहूलुहान हो गए पिता-पुत्र।

किन्तु, उफ ना निकली दोनों के मुख से -
पक्के हुए चोर हैं दोनों। नमक भर दो सालों के जख्मों में, तब तो चीखेंगे ही।
दोनों के जख्मों में नमक छिड़क दिया गया -
नहीं, यह जुल्म ना कर सेनानायक। मेरे बच्चे को बख्श दे।
कुछ देर बाद दोनों के बंधन खोल उन्हें तड़पता छोड़ गया सेनानायक -
उफ। पुत्र अतीक, मुझे माफ कर दे। ना मैं चोरी करने जाता, ना तेरी यह हालत होती।
प्यार से अतीक पुकारता है कपालफोड़ अतिक्रूर को।
बेहोशी की हालत में भी चीख उठा अतिक्रूर -
नहीं बापू, तुम और चोरी।
हां बेटा! मैं तुम्हें भूख से तड़पता ना देख सका था।
बच्चे की अंतरात्मा बुरी तरह कांप उठी -
उसका विश्वास चूर-चूर हो गया --
बापू। तुम मुझे जीवन भर सिखाते रहे मेहनत की रोटी खाने के लिए और तुम खुद ही चोरी करने चल पड़े।
पुत्र!
मत कहो मुझे पुत्र! मर गया अतिक्रूर आज से अपने बापू के लिए।
नहीं, पुत्र!
पिता की शिक्षा कितना गहरा असर करे हुए थी पुत्र के मन पर

वह खड़ा हो गया –
मैं जा रहा हूं बापू, मेहनत की रोटी ही खा सकता हूं मैं, और ना मिली वह रोटी तो भूखा भी मर सकता हूं।
नहीं!
नहीं रोक सका कपालफोड़ अतिक्रूर को –
वाह! पुत्र शाबास! गर्व है मुझे तुझ पर और तेरे स्वाभिमान पर।
अपने रिसते हुए जख्म लिए बहुत दूर निकल गया अतिक्रूर।
तब जागा कपालफोड़ के अंदर सोया चांडाल –
राजा न्यायप्रिय! तेरे कारण मुझे चोर बनना पड़ा भरे नगर में और अपने पुत्र के सामने अपमानित होना पड़ा। मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा।
और उसी रात्रि –
न्यायप्रिय, तूने न्याय का खून किया मैं तेरा खून करूंगा।
किन्तु कोई और भी इसी उद्देश्य से महल में मौजूद है –
गजोक्ष तुझे मारकर भुजंगदेश का राजा बनेगा न्यायप्रिय।
नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते।
मैं पहरेदारों को बुलाता हूं।
वे सब बाहर बेहोश पड़े हैं।
अब आई कपालफोड़ की समझ में कि वह इतनी आसानी से वहां तक कैसे पहुंच गया।

गजोख ने न्यायप्रिय पर वार किया –
आह!
खचाक
ले अब मर!
एक ही वार में वह यमलोक पहुंच गया।
यह देख कपालफोड़ पलटा –
मेरा काम तो उसने कर दिया। अब मैं चलूं।
उफ!
आहट सुन गजोख पलटा और –
वाह! ऐसे ही किसी शिकार की तो जरूरत थी मुझे।
सही निशाने पर लगा खंजर –
राजा के हत्यारे, कहां भाग रहा था?
आह!
गहरे षड़यंत्र में फंसने जा रहा था कपालफोड़।
गजोख ने अपना रूप बदला –
अब मैं राजकुमार विश्वप्रिय के रूप में आ जाता हूं जो मेरी कैद में है!
कपालफोड़ राजकुमार विश्वप्रिय उर्फ गजोख पर टूट पड़ा –
मैं तेरी योजना सफल नहीं होने दूंगा नीच!
उफ!

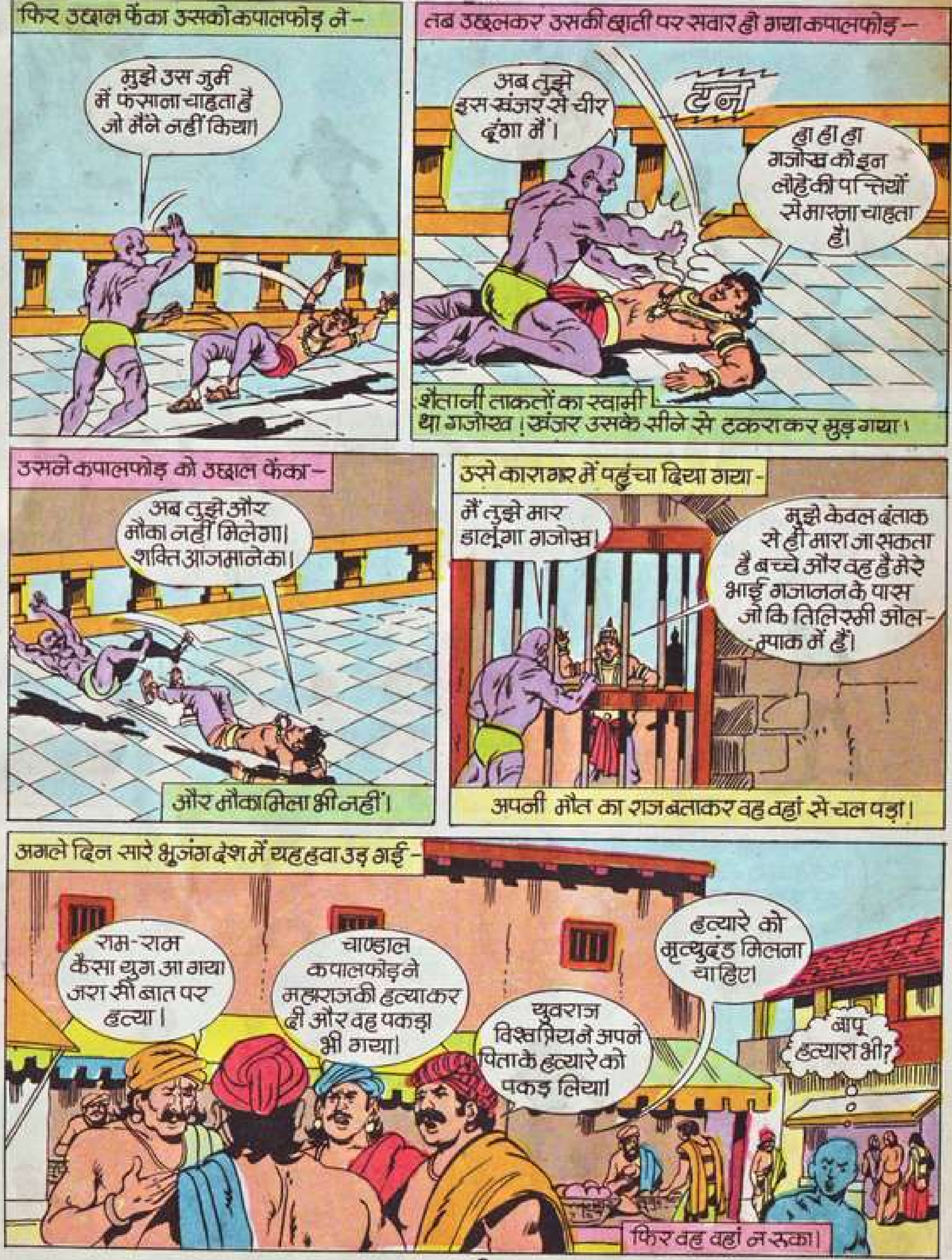

फिर उछाल फेंका उसको कपालफोड़ ने -
मुझे उस जुर्म में फंसाना चाहता है जो मैंने नहीं किया।
तब उछलकर उसकी छाती पर सवार हो गया कपालफोड़ -
अब तुझे इस खंजर से चीर दूंगा मैं।
टन
हा हा हा गजोख को इन लोहे की पत्तियों से मारना चाहता है।
शैतानी ताकतों का स्वामी था गजोख ! खंजर उसके सीने से टकराकर मुड़ गया।
उसने कपालफोड़ को उछाल फेंका -
अब तुझे और मौका नहीं मिलेगा। शक्ति आजमाने का।
और मौका मिला भी नहीं।
उसे कारागार में पहुंचा दिया गया -
मैं तुझे मार डालूंगा गजोख।
मुझे केवल बलाक से ही मारा जा सकता है बच्चे और वह है मेरे भाई गजानन के पास जो कि तिलिस्मी ओल-म्पाक में है।
अपनी मौत का राज बताकर वह वहां से चल पड़ा।
अगले दिन सारे भुजंग देश में यह हवा उड़ गई -
राम-राम कैसा युग आ गया जरा सी बात पर हत्या।
चाण्डाल कपालफोड़ ने महाराज की हत्या कर दी और वह पकड़ा भी गया।
युवराज विश्वप्रिय ने अपने पिता के हत्यारे को पकड़ लिया।
हत्यारे को मृत्युदंड मिलना चाहिए।
बापू हत्यारा भी?
फिर वह वहां न रुका।

पिता के कुकृत्य से क्षुब्ध अतिक्रूर श्मशान पहुंचा-
मैं यह पाप का बोझ लिए नहीं जी सकता।
अतिक्रूर यह नहीं जानता था कि आत्महत्या खुद एक बड़ा पाप है।
चिता की अग्नि में समा गया अतिक्रूर-
चटख
चटख
किन्तु लपलपाती अग्नि का उस पर कोई असर न पड़ा।
और खुद को उसने पाया एकदम नयी जगह-
ओह! श्मशान भूमियों के प्रभु मशानराज!
आओ पुत्र अतिक्रूर! मैं हूं मशानराज। तुमने बहुत ईमानदारी से श्मशान में सेवा की है।
पुत्र! तुम्हारा पिता हत्यारा नहीं है। उसे फंसाया गया है।
क्या सच मशान-राज?
हां और अपने पिता को बेगुनाह साबित करने के लिए तुम्हें शक्तिशाली बनायेगा कालकोपड़ा।

अगले ही पल अतिक्रूर के पास प्रकट हुआ कालकोपड़ा-
यह तुम्हें सभी युद्ध विद्याएं सिखाएगा। तुम्हारे शरीर को फौलाद का बनाएगा।
फिर कालकोपड़ा उसे लेकर चल पड़ा।
कालकोपड़ा अतिक्रूर को ले चला अपने आश्रम फुकलवन की ओर-
पुत्र अतिक्रूर! मन लगाकर सीखोगे तो लक्ष्य जल्दी मिलेगा।
गुरुवर! मैं आपकी हर आज्ञा का पालन करूंगा।
तभी-
धड़ाम्म
एक बलवान युवक वहां भागता हुआ पहुंचा-
गुरुवर! क्षमा कीजिएगा। मैं इस पेड़ को उखाड़ रहा था कि यह हाथों से निकलकर उछल पड़ा।
शिष्य! अपनी पकड़ मजबूत बनाओ।
यह सुन अतिक्रूर हैरान हो रहा था।
अभी वे आगे बढ़े ही थे कि-
गुरुवर क्या भूकम्प आ गया?
नहीं पुत्र, यह भी जरूर किसी शिष्य की शरारत है।
धम्म धम्म धम्म
जल्दी ही दृश्य साफ हो गया-
पुत्र! अपना मुष्टि प्रहार मजबूत करने के लिए यह स्थान उचित नहीं है।
गुरुवर! अपने आश्रम की लौह शिला तो टूट गई है, इसलिए मैं आज यहां आ गया।

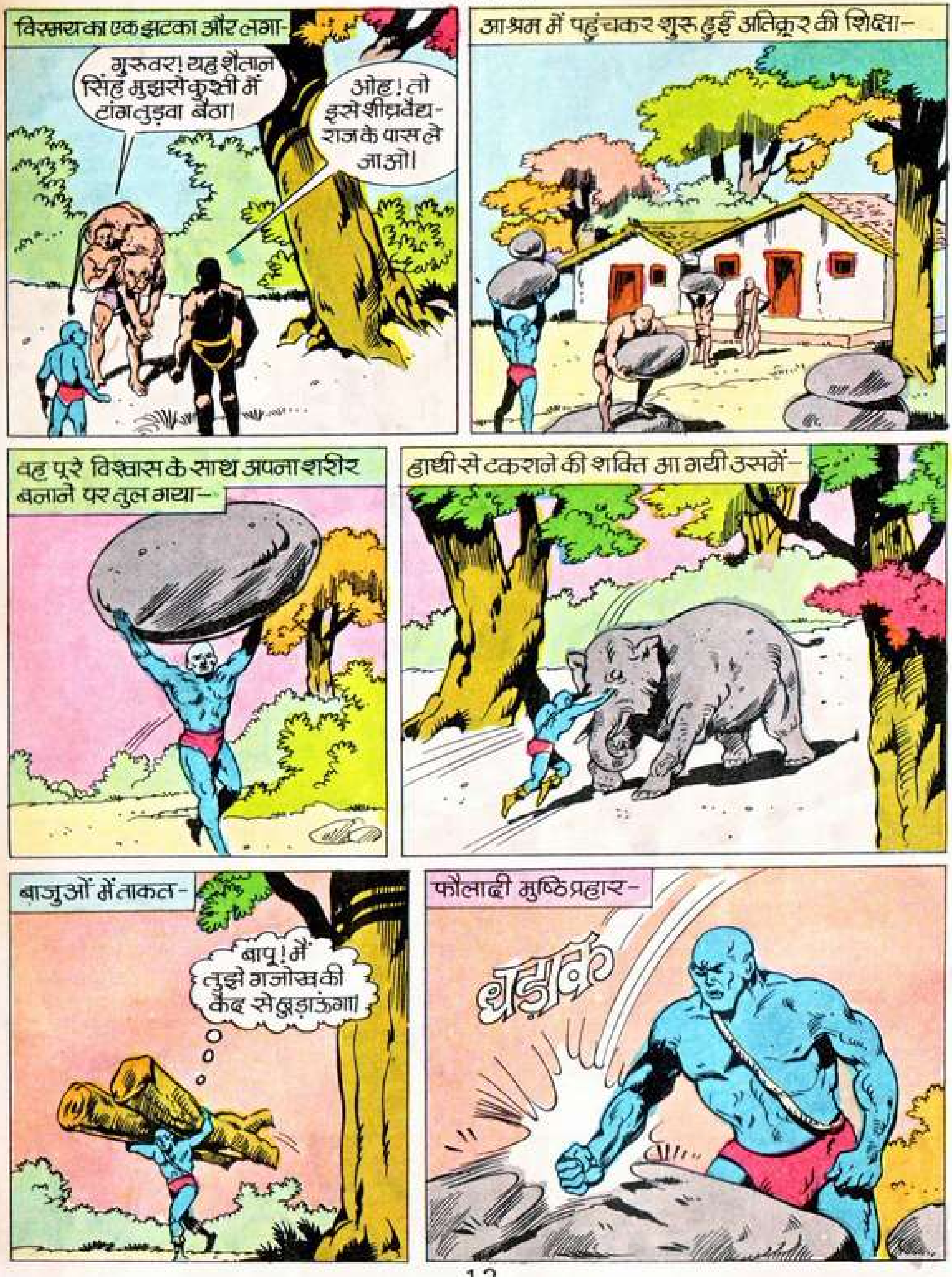
विस्मय का एक झटका और लगा-
गुरुवर! यह शैतान सिंह मुझसे कुश्ती में टांग तुड़वा बैठा।
ओह! तो इसे शीघ्र वैद्य-राज के पास ले जाओ।
आश्रम में पहुंचकर शुरू हुई अतिक्रूर की शिक्षा-
वह पूरे विश्वास के साथ अपना शरीर बनाने पर तुल गया-
हाथी से टकराने की शक्ति आ गयी उसमें-
बाजुओं में ताकत-
बापू! मैं तुझे गजोख की कैद से छुड़ाऊंगा।
फौलादी मुष्ठि प्रहार-
धड़ाक

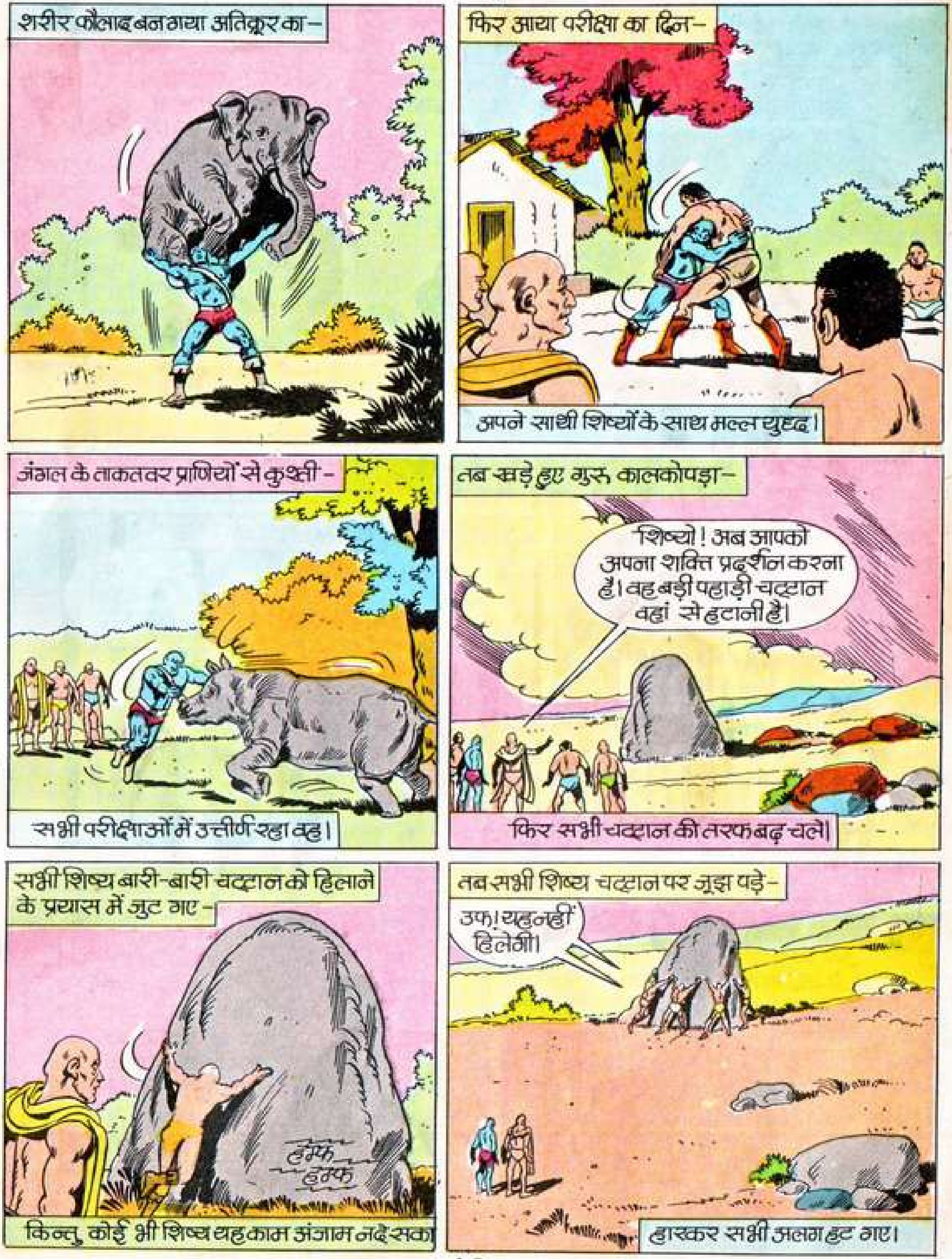
शरीर फौलाद बन गया अतिक्रूर का –
फिर आया परीक्षा का दिन –
अपने साथी शिष्यों के साथ मल्ल युद्ध।
जंगल के ताकतवर प्राणियों से कुश्ती –
सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण रहा वह।
तब खड़े हुए गुरु कालकोपड़ा –
शिष्यो! अब आपको अपना शक्ति प्रदर्शन करना है। वह बड़ी पहाड़ी चट्टान वहां से हटानी है।
फिर सभी चट्टान की तरफ बढ़ चले।
सभी शिष्य बारी-बारी चट्टान को हिलाने के प्रयास में जुट गए –
हुम्फ
हुम्फ
किन्तु, कोई भी शिष्य यह काम अंजाम न दे सका
तब सभी शिष्य चट्टान पर जूझ पड़े –
उफ! यह नहीं हिलेगी।
हारकर सभी अलग हट गए।

तब कालकोपड़ा के कहने पर अतिक्रूर आगे बढ़ा
जय गुरु कालकोपड़ा!
और-
अगले ही पल चट्टान दूर तक लुढ़कती चली गई-
शाबास अतिक्रूर!
धन्यवाद गुरुवर!
फिर एक दिन-
अतिक्रूर! अब तुम भुजंगदेश जा सकते हो। तुम्हारी शिक्षा पूर्ण हुई।
जो आज्ञा गुरुदेव!
कालकोपड़ा को प्रणाम कर वह वहां से कूच कर गया।
अगले दिन भुजंगदेश के कारागार में -
कपालफोड़! तुम्हारा पुत्र तुमसे मिलने आया है।
बहुत ही अश्रुपूर्ण था पिता-पुत्र का मिलन-
पुत्र! मैं हत्यारा नहीं हूं पुत्र! मुझे बचा लो, ये मुझे इसी कालकोठरी में सड़ा देंगे।
हां बापू, मैं बचाऊंगा तुझे।
फिर वह उसे गजोख के बारे में सब बताता चला गया।
अब केवल दंताक ही मुझे गजोख की कैद से मुक्त करा सकता है।
मैं लाऊंगा दंताक तिलिस्मी ओलम्पाक से बापू!
अतिक्रूर पिता से विदा लेकर चल पड़ा तिलिस्मी ओलम्पाक की खोज में..
... विकासनगर की ओर-
राजा विकासमोहन ने फूचांग के साथ मिलकर एक खौफनाक खेल का आयोजन किया है जिनके विजेताओं को वह तिलिस्मी ओलम्पाक भेजेगा।
तिलिस्मी ओलम्पाक के लिए वह चुन लिया गया और...

वह पहुंच गया तिलिस्मी ओलम्पाक में -
दोस्त भोकाल! दंताक की खोज में मैं यहां आया हूं।
तुम्हें दंताक और गजानन जरूर मिलेंगे दोस्त!
हां अतीक चाचा, आपके बापू जरूर मुक्त होंगे।
भोकाल सीरीज के चार शानदार कामिक्स, खौफनाक खेल, तिलिस्मी ओलम्पाक, भोकाल व शैतान जरूर पढ़ें।
तभी कुछ देखकर चीख उठी श्वेता-
अतीक चाचा! वह देखो, कैसे विचित्र बादल चले आ रहे हैं।
हांए! यह क्या है?
अगले ही क्षणों में वह बादल उनके ऊपर पहुंचकर स्थिर हो गये।
क्या बला है यह?
तिलिस्मी चक्कर है।
बादल के छल्ले नीचे उतरे और -
उफ! यह तो हमें कैद कर रहे हैं।
उफ! यह क्या? यह क्या हो रहा है मुझे।
कुछ पल बाद जब वे छल्ले विलीन हुए -
भोकाल! मैं अतिक्रूर पुत्र कपालफोड़ तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।
अतिक्रूर! भोकाल के हाथों से अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता।
दोनों परममित्र एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन बन चुके थे।

बेचारी श्वेता यह परिवर्तन देख बुरी तरह सहम गई थी-
यह क्या हुआ मेरे दोनों चाचाओं को?
भिड़ गए दोनों जान के दुश्मन-
अतिक्रूर के बाहुबल के आगे नहीं टिक सकता तू!
भोकाल विश्व का सबसे बलवान पुरुष है।
उछाल फेंका अतिक्रूर ने भोकाल को-
हा हा हा
नहीं! भोकाल चाचा उफ!
उफ!
दो महाबलियों की टक्कर थी वह-
उसके खड़े होते ही अतिक्रूर का प्रचण्ड घूंसा टकराया चेहरे पर-
अतिक्रूर के बल का स्वाद चख रहा था भोकाल-
भोकाल, तुझे रसातल में मिला दूंगा।
अतिक्रूर की शक्ति के आगे लड़खड़ाते...
...भोकाल के दिमाग में कौंधा एक विचार-
आलोप अतिक्रूर से टक्कर नहीं ले सकता, किन्तु भोकाल के सामने यह चींटी साबित होगा।
और--

वह बन गया...
भोऽऽकाऽऽलऽ
...भोकाल

और अब वह तलवार लिए खड़ा था अतिक्रूर के सामने-
अतिक्रूर, तेरा समय पूरा हो गया है।
अतिक्रूर के भी हाथ लग गया एक हथियार-
हा हा हा क्यों कांटें चुभ गये।
उफ!
किन्तु अगले ही क्षण-
पेड़-पौधों से इस शक्तिशाली तलवार का क्या सामना।
लेकिन वह अतिक्रूर क्या जो ऐसे हार मान ले-
हुम्म! जय गुरुदेव कालकोपड़ा।
धरती का टुकड़ा उठाए वह बढ़ा भोकाल की ओर
इसके नीचे दबाकर मारूंगा तुझे।
परन्तु धरती का वह टुकड़ा भी छिन्न-भिन्न हो गया-
कड़ड़

और तभी गूंज उठा वहां एक भयंकर अट्टहास जिसने उन दोनों को जाम कर दिया -
हा हा हा हा हू
कौन हंस रहा है ?
??
सामने आओ!
और प्रकट हुआ गजानन -
हा हा हाहा हू, दंताक की मंत्रशक्ति में बंधे दोनों कैसे एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे।
दंताक से निकली किरणें टकराईं भोकाल व अतिक्रूर से -
अब तुम दोनों एक-दूसरे से बहुत लड़ लिए। अब तुम मुझसे लड़ोगे। हाहाहाहा हू
और -
जब दोनों को वाकई होश आया -
मित्र! मैं शर्मिन्दा हूं, मैं तुमसे लड़ा।
दोस्त! गलती मेरी भी थी, किन्तु अभी तो हमें इस दैत्य से दंताक प्राप्त करना है।

दोनों गजानन पर टूट पड़े –
दंताक की शक्ति से तुम शीघ्र परिचित हो जाओगे।
अतिक्रूर जैसे बलवान और भोकाल जैसे शक्तिवान को उछाल फेंका दंताक ने –
हाहा हाहा हू
अतिक्रूर ने वापिस गजानन पर छलांग लगा दी किन्तु
वह टकराया दंताक से फलस्वरूप –
वह अटक गया उन कंटीली झाड़ियों में –
उफ! मैं इन कांटों में उलझ गया।
और भोकाल पर किया उसने अपनी प्रलयंकारी सूंड का प्रहार –
पल भर को भोकाल लड़खड़ाया और –
छपाक
उफ।
... उठा लिया गजानन ने विध्वंसक दंताक।

चीखें उबल पड़ीं अतिक्रूर और श्वेता के मुंह से—
हाहा हाहा हू
थड़ाक
नहीं SSSS
नहीं ईईई SSSS
दंताक जा घुसा भोकाल के पेट में।
अतिक्रूर क्रोध में पागल हो उठा।
उफ!
मेरे दोस्त को मार दिया तूने!
कड़ड़
कड़ाड़
अतिक्रूर अपने नाम के अनुरूप अतिक्रूर बन गया था।
नीच, तूने भोकाल को मार दिया।
बेदम हो गया गजानन अतिक्रूर के इस विध्वंसक रूप के सामने—
नहीं! मेरे सींग ना तोड़ो मैं मर जाऊंगा।
जरूर तोड़ूंगा। दोस्त की हत्या का बदला जो लेना है तुझसे।

चीख उठा गजानन-
नहीं, वह बच सकता है।
कैसे ?
हाथ रुक गए अतिक्रूर के।
गजानन भोकाल के उपचार में लग गया-
तुम इसके पेट से दांत बाहर निकालो।
गजानन ने अपना टूटा हुआ दांत उठाया...
... और उसे घिसने लगा-
मृत संजीवनी की ये पत्तियां और मेरे दांत का लेप इसका जख्म भर देगा।
लेप तैयार करके...
वह लेप भोकाल के जख्म पर लगाया--
कुछ ही देर में इसे होश आ जाएगा
मेरे भोकाल चाचा!
लेकिन वह कुछ देर कई युगों के समान बीती उनकी-
आह!
इसे होश आ रहा है।
चाचा, उठो चाचा!
हां, और तुम बच गए समझो!

अगले ही पल वह उठ खड़ा हुआ—
कहां है गजानन! मैं तुझे अभी यमलोक पहुंचाता हूं।
नहीं भोकाल! रुको, मैं इसे अभयदान दे चुका हूं।
फिर अतिक्रूर ने उसे सारी घटना बता दी।
अतः
अब यहां से जितनी दूर भाग सकते हो भाग जाओ दोबारा कभी नजर न आना।
हाहा हाहा हू
कभी नजर न आऊंगा।
पृथ्वीलोक। देश आमने सामने का राजा आगेपीछे—
वाह! अतिक्रूर को दंताक मिल गया। अब आएगा मजा खेल का।
मठाड़ का राजा कचोड़ा—
शूतान कहां है? जाने क्या कर रहा है वह तिलिस्म में?
शूतान तिलिस्म में प्रविष्ट होने के बाद एक लम्बी सुरंग में चला जा रहा था—
चलते-चलते पगला गया मैं, वही रास्ता, ऐसी ही दीवारें। समझ में नहीं आता क्या करूं, चलूं या यहीं बैठ जाऊं।
तभी अचानक—
वाह! बंद हो गई सुरंग। बस चलना अब खत्म। हाए यह क्या है? यह मूरत कैसी?
उसे दीवार पर कुछ दिखा।

उसकी निगाहें कहीं जम गईं और –
यह... यह तो हरकत में आने लगी. किन्तु यह जीवित तो नहीं है ?
किसी कमज़ोर दिलवाले के छक्के छुड़ाने के लिए काफी था वह दृश्य जब ...
–वह मूरत दीवार से निकलकर शैतान की तरफ बढ़ी –
भागूं, यह जीवित नहीं है। इस पर मेरा सम्मोहन नहीं चलेगा। उफ! कहां ला मारा मुझे।
घण्टों उस सुरंग में भागने के बाद भी –
उफ! यह पीछा नहीं छोड़ेगा शायद।
अब तो उसके कदम और सांसें उसका साथ देने को इन्कार करने लगी थीं।
तभी सामने कुछ देख कर चेहरा खिल उठा उसका।
वाह! अग्निकुण्ड। यह पहलवान इस अग्नि में प्रवेश नहीं कर पायेगा।
पलभर में शैतान उस धधकती हुई ज्वाला में समा गया।
वाह! वाकई वह शैतान अग्नि के पास पहुंचकर रुक गया।
शैतान पर अग्नि का असर क्यों नहीं हुआ यह जानने के लिए पढ़ें 'शैतान'
किन्तु –
शैतान से तो बच गया, लेकिन यह अग्नि कुंड कब खत्म होगा? उफ!
आसमान से गिरा और अग्नि में अटक गया शैतान।

पृथ्वी लोक पर इस खेल का पूरा आनन्द लिया जा रहा था।
विकासनगर--
महाराज चंद्रनगर के राजा चांद का कहना है कि उनके दूरदर्शन दर्पण पर तस्वीर साफ नहीं आ रही है।
ओह! तो उन्हें नयी तकनीक से बना आनूठा दूर-दर्शन दर्पण दिया जाए जिसमें...
... नए तरह का उभरा हुआ शीशा लगा हुआ है जिसमें तस्वीर भी साफ आती है और दृश्य भी ज्यादा बड़ा दिखता है।
महाराज! अपने नये दूरदर्शन दर्पण वाइडकान का क्या मूल्य रखना है जिसमें तस्वीर के अंदर तस्वीर दिखती है।
यानी एक साथ दो तस्वीरें उसका मूल्य दो हजार स्वर्ण मुद्राएं रखा जाए।
ज्यों-ज्यों खौफनाक खेल में रोमांच बढ़ता जा रहा था, विकास मोहन का खजाना भी बढ़ रहा था ...
... और व्यस्तता भी --
ओह रानी मोहिनी! दिनभर दरबार में गुजर गया। अब हम दूरदर्शन दर्पण पर पूरे दिन के चुने हुए दृश्य देखेंगे।
जरूर महाराज। आज अतिक्रूर व भोकाल की गजानन से लड़ाई व शूतान को तिलिस्म में दिखाया गया।
अगले दिन तिलिस्मी ओलम्पाक में--
मुझे लगता है श्वेता को बुखार है।
चाचा! हमें खिलौना चाहिए। हमें खिलौने ला दो (सुबुक-सुबुक) हम खेलेंगे।
बेटा, तू रो मत। देख हम तेरे लिए खिलौना बन जाते हैं। मैं घोड़ा और भोकाल हाथी।
दोनों बीमार बच्ची को बहलाने में लगे हुए थे।

उनकी फरियाद सुनी महाबली फूचांग ने -
यह खिलौनों से भरा बोरा भेजता हूं तिलिस्मी ओलम्पाक में श्वेता के लिए।
ज़िप
नहीं! मुझे असली खिलौने चाहिए!
असली खिलौने पहुंच गए --
अरे, यह क्या? यह खिलौने यहां कैसे आ गए?
वाह! खिलौने!
विचित्र खिलौने!
श्वेता खुशी से उछलकर खिलौनों की ओर दौड़ी। उसे रोकने दौड़े भोकाल व अतिक्रूर
नहीं, रुको, श्वेता!
खिलौने! खिलौने!
इन खिलौनों को मत पकड़ना!
यकायक खिलौनों का आकार बढ़ने लगा और --
ओह, मेरे प्रभु!
यह क्या बला है लियोटाज?
हम हैं लियोटाज
बड़ा भयंकर नृत्य कर रहे थे वे दैत्याकार खिलौने 'लियोटाज'

फिर एकाएक उनकी तरफ भागे वे लियोटाज
श्वेता के भी पीछे पड़े थे तीन शैतान --
भोकाल चाचा और अतीक चाचा को तो इन्होंने पकड़ लिया। मैं इनकी पकड़ में नहीं आऊंगी।
गड्ढे के पास पहुंचकर श्वेता ने उछाल भरी --
वह सुरक्षित दूसरी तरफ पहुंच गई -
गड्ढा हो गया पार।
लियोटाज वह जा पड़ा सीधा गड्ढे के अंदर-
खरड़ड़
और उसके पीछे गया दूसरा भी -
वो मारा पापड़ वाले ने!
करड़ड़

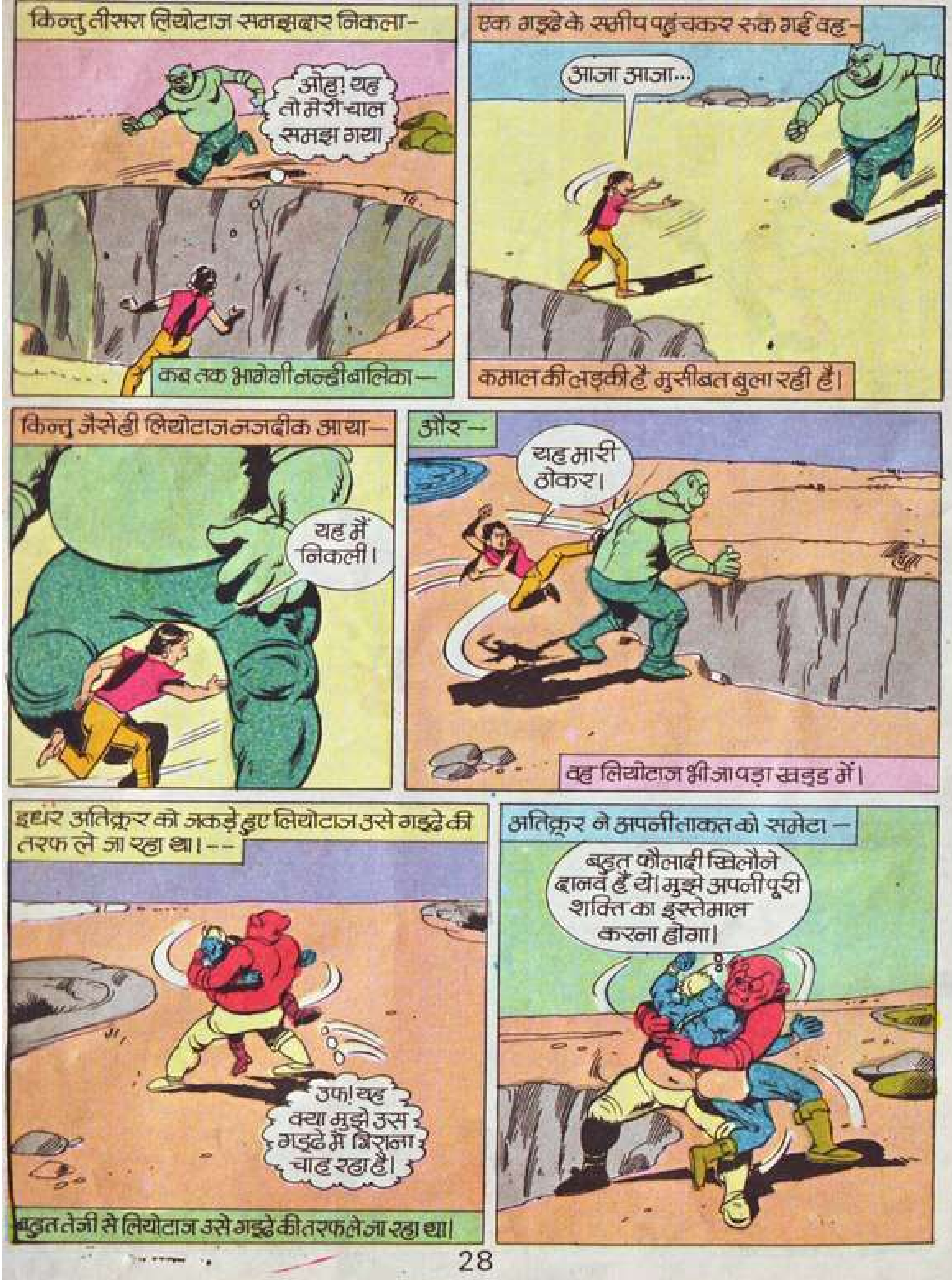
किन्तु तीसरा लियोटाज समझदार निकला–
ओह! यह तो मेरी चाल समझ गया
कब तक भागेगी नन्ही बालिका –
एक गड्ढे के समीप पहुंचकर रुक गई वह –
आजा आजा...
कमाल की लड़की है मुसीबत बुला रही है।
किन्तु जैसे ही लियोटाज नजदीक आया–
यह मैं निकली।
और –
यह मारी ठोकर।
वह लियोटाज भी आ पड़ा खड्ड में।
इधर अतिक्रूर को जकड़े हुए लियोटाज उसे गड्ढे की तरफ ले जा रहा था।--
उफ! यह क्या मुझे उस गड्ढे में गिराना चाह रहा है।
बहुत तेजी से लियोटाज उसे गड्ढे की तरफ ले जा रहा था।
अतिक्रूर ने अपनी ताकत को समेटा –
बहुत फौलादी खिलौने दानव हैं ये। मुझे अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल करना होगा।

और अगले ही पल--
छिन्न-भिन्न हो गया वह फौलादी लियोटाज।
किन्तु वह खुद को गड्ढे में गिरने से ना बचा सका-
उडप
और भोकाल, वह भी आखरी लियोटाज से जूझ रहा था।
भोकाल की शक्ति के सामने वह लियोटाज न टिक सका -
टुकड़े-टुकड़े हवा में उड़ गए उसके।

'प्रिय पाठको! पूर्व चित्रकथा 'शैतान' के बारे में आपके हजारों पत्र मिलें। जिन्हें पढ़कर बहुत खुशी हुई। आपको चित्रकथा पसंद आई, धन्यवाद। प्रस्तुत 'चित्रकथा 'अतिक्रूर' के बारे में भी ऐसे ही अपनी अमूल्य राय से जरूर परिचित कराएं। —• संजय गुप्ता, 1603-दरीबा कलां, दिल्ली-110006.

समाप्त

मुद्रक : जापान आर्ट प्रैस

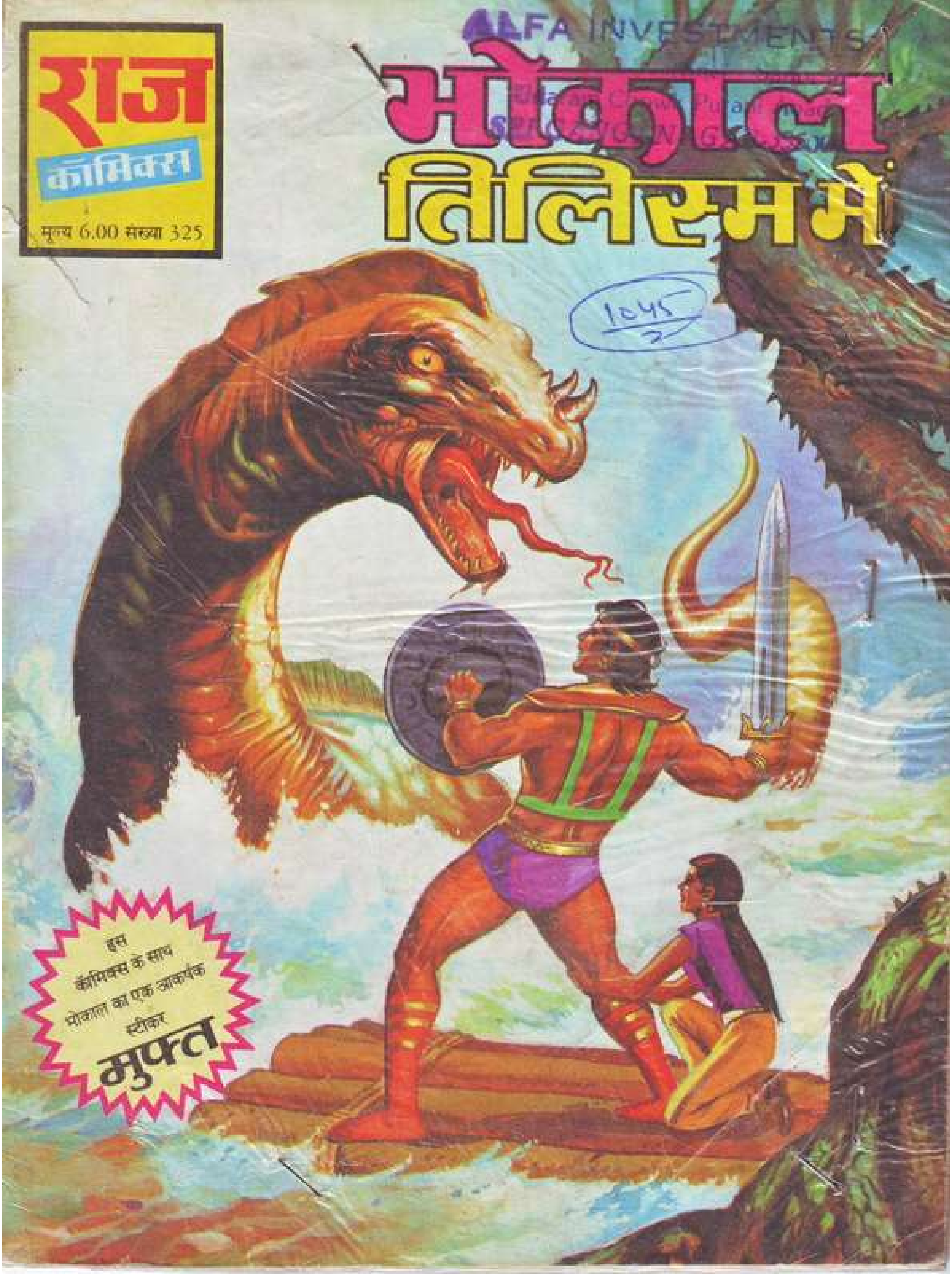
राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 325
भोकाल
तिलिस्म में
इस
कॉमिक्स के साथ
भोकाल का एक आकर्षक
स्टीकर
मुफ्त

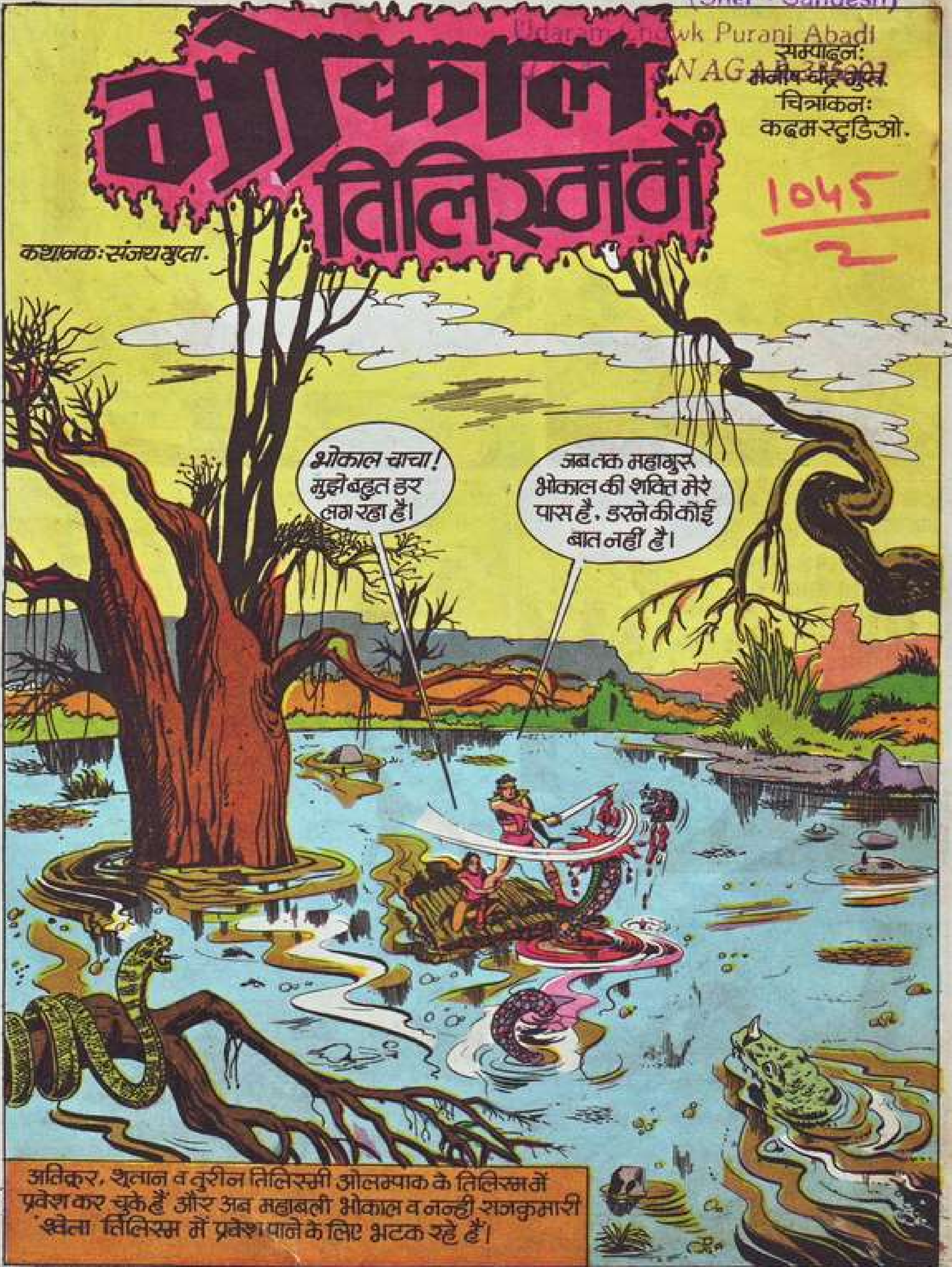
भोकाल तिलिस्म में
सम्पादन: मनीष चन्द्र गुप्त
चित्रांकन: कदम स्टूडिओ.
कथानक: संजय गुप्ता.
भोकाल चाचा! मुझे बहुत डर लग रहा है।
जब तक महागुरु भोकाल की शक्ति मेरे पास है, डरने की कोई बात नहीं है।
अतिक्रूर, शलान व तुरीन तिलिस्मी ओलम्पाक के तिलिस्म में प्रवेश कर चुके हैं और अब महाबली भोकाल व नन्ही राजकुमारी श्वेता तिलिस्म में प्रवेश पाने के लिए भटक रहे हैं।

इस दलदली नदी में भोकाल का सामना हुआ भयंकर जलचरों से –
भोकाल चाचा! बचाओऽऽ
श्वेता की चीख सुनकर भोकाल तेजी से पलटा –
उफ! कैसी जालिम नदी है।
खचाक
हाथ के वापस नदी में गिरने के साथ ही हवा में लहराया एक भयानक चेहरा –
कितने अजीबो-गरीब व शैतान जीव भरे पड़े हैं इस नदी में!
छुईई
किन्तु तभी उस तेज आवाज ने शान्त कर दिया उन सभी शैतानी जीवों को –
यह आवाज कैसी?
किर्र
किर्र
उसके साथ ही नजर आया वह तीव्र वेग जलयान –
ओह! यह कौन आ रहा है?
कर्कश... मेरा नाम है कर्कश! इसी दलदल में डुबो दूंगा तुझे मैं। हा हा हा।

कर्कश ध्वनि करता जलयान बिल्कुल भोकाल के बेड़े के नजदीक आ पहुंचा -
यह चला मेरी करकश का वार!
ही ही ही भोकाल चाचा! आपका चेहरा ही ही ही गंदा हो गया।
अच्छा, अभी मजा चखाता हूं इस शैतान को।
भोकाल ने तलवार घुमाई -
ये गई कीचड़।
अबे, अबे क्या करता है? रुक-रुक जा, पागल हो गया है क्या?
और कीचड़ में नहा गया कर्कश।
ही ही ही चाचा, मजा आ गया। शाबास!
सड़ा दिया बदमाश ने। अब इस वर्ष तो नहाना ही पड़ेगा।
धुप्प
क्रोध में भर उठा कर्कश द्रुत गति से आगे बढ़ा और -
जलयान के टकराते ही बेड़ा टूट गया और भोकाल उछल कर जलयान की ओर लपका -

जलयान पर लटके भोकाल के हाथों पर कर्कश ने किया कस्कशा का वार-
हाहाहा
अब तू नहीं बचेगा। इसी दलदल में डूब मरेगा भोकाल!
और वह छुई-मुई उस पेड़ से टकराकर चकनाचूर हो जाएगी। हो हो हो
नहीं, श्वेता!
समय बहुत कम था भोकाल के पास। श्वेता को मौत के मुंह में जाते देख उसके शरीर में बला की फुर्ती आ गई-
उसे कुछ नहीं होने दूंगा दरिंदे!
तलवार के एक भरपूर वार ने कस्कशा को दलदल की तरफ उछाल फेंका।
तेरा अन्त कुछ जल्दी ही आ गया है?
उफ!
भोकाल ने उस विशाल से दिखने वाले भारी भरकम दानव को यूं उठा लिया जैसे कोई आलू की बोरी हो-
तुझे तेरी ही खोदी हुई मौत दूंगा कमीने।
नहीं!
और उछाल फेंका उसे अगले ही क्षण भोकाल ने-
जा मर।

पवन वेग से भोकाल जा पहुंचा श्वेता के करीब -
आओ श्वेता, जल्दी करो!
ओह! चाचा मैं तो समझी थी कि बस अब मरी!
फिर जलयान तेजी से आगे बढ़ने लगा -
किन्तु भोकाल चाचा! हम जा किधर रहे हैं ?
किसी नई मुसीबत की तलाश में।
बिल्कुल ठीक कहा था भोकाल ने -
अरे, अरे, वह क्या है ?
करीब जाकर पता चलेगा।
जैसे ही वे उस इन्द्रधनुषी रंगों के परदे के समीप पहुंचे -
चाचा बचाओ ऽऽ
और गायब हो गई श्वेता उस इन्द्रधनुषी चक्रव्यूह में...
चीख उठा भोकाल -
श्वेता! घबराना मत! मैं आ रहा हूं!
और जलयान के देखते ही देखते दोनों अदृश्य हो गए -
मैं ही यहां खड़ा क्या कर रहा हूं? मेरा काम तो खत्म, चलूं वापस ओलम्पाक राज के पास।

इधर अतिक्रूर तिलिस्म के अन्दर भटक रहा था -
हाए! भोजन प्राप्त करने का वह जादुई थैला तो रह गया। भोकाल के पास और मुझे लग रही है अब जोर की भूख!
भूख सताती भी तो बहुत है अतिक्रूर को।
चूहे खूब उछलकूद मचा रहे थे उसके पेट में।
और यहां तो कोई चूहा भी नहीं दिखाई पड़ रहा। जिससे अपनी कुछ तो भूख मिटाऊं।
तभी हर्ष की लहर दौड़ गई उसके होंठों पर कुछ देख कर -
हीई-रण आहा! हिरण! अब इसी से अपनी भूख शांत करूंगा!
हीई-रण
दौड़ पड़ा अतिक्रूर हिरण की ओर -
वाह! मेरा शिकार खुद मेरी तरफ भागा आ रहा है।
किन्तु भूख से अंधा हुआ वह हिरण की ओर दौड़ रहा था और वह हिरण उस की ओर।
क्योंकि भूख के मारे को जो हिरण दिखाई दे रहा था वह था हिरण्याक -
वाह! मेरा शिकार खुद मेरी तरफ भागा आ रहा है।
और जब हुई दोनों की टक्कर -
हाएं, हिरण कहां गया?
राक्षसराज हिरण्याक तुझे हिरण नजर आ रहा है मूर्ख!
तब होश में आया अतिक्रूर।

संभल गया वह
कोई बात नहीं बेटे सींकड़ी पहलवान! पहले तुझ से निपट लूं फिर ढूंढूंगा अपने प्यारे हिरण को! मुझसे डरकर यहीं-कहीं छिप गया होगा।
यह तो बहुत ताकत-वर है मेरी जबरदस्त टक्कर से हिला तक नहीं यह।
हिरण्याक जो अतिक्रूर के असीम बल से परिचित हो गया था।
यह तिलिस्मी धुआं काम आएगा यहां।
ओह! यह क्या बदमाशी है?
अतिक्रूर घिर गया उस तिलिस्मी धुएं में।
धुएं ने शीघ्र ही अपना असर दिखाया।
ओह! उफ! यह मुझे क्या हो रहा है? ऐसा लग रहा है जैसे मैं कुछ नहीं कर सकता। हिल भी नहीं पा रहा हूं मैं।
टूट पड़ा हिरण्याक अतिक्रूर पर -
हा हा हा अब आएगा असली मजा।
उफ! पंगु बना दिया इसने मुझे। मेरी सारी शक्ति खींच ली उस जादुई धुएं ने।
अट्टहास लगाया हिरण्याक ने -
वाह! वाह! वो मारा, उठ-उठ बेटे! शाबाश खड़ा हो जा मुन्ने! हा हा हा
अतिक्रूर के लिए उठ पाना भी असम्भव प्रतीत हो रहा था।
पूरा दम लगाकर वह किसी तरह खड़ा होने में सफल हो पाया
जरा बताइयो बेटा, हिरण को किस तरह मारता तू? चींटी तो मारने लायक तू है नहीं।
कड़ाक

अतिक्रूर के दिमाग में चलने लगी आंधियां-
यह... यह इस तरह तो मुझे जरूर मार देगा। कुछ जल्दी ही नहीं किया गया तो आज मेरा खेल खत्म।
बड़ी मुश्किलों से वह फिर खड़ा हुआ।
उफ! यह मुझे मारने आ रहा है और मैं हिल भी नहीं पा रहा।
च च च हिरण के सींगों से मारा जाएगा हिरण का शिकारी।
मौत उसके नजरों के सामने थी।
चीख गूंज उठी फिज़ा में -
सही वक्त पर इसका ध्यान आ गया मुझे।
आह
दंताक ने चीर दिया था हिरण्याक का मस्तक।
और हिरण्याक के मरते ही टूट गया उसके तिलिस्मी धुएं का असर भी -
वाह! मैं फिर सामान्य हो गया। मेरी ताकत लौट आई।
ढिशुम
खुशी से उछला फिर रहा था अतिक्रूर-
हा हा हा मैं... मैं बलवान हूं। मैं बलवान हूं।
तभी एक जानी-पहचानी सी चीख ने उसके कदम जड़ कर दिए।
ईई इ
श्वेता की चीख श्वेता की चीख है यह तो...

और दौड़ पड़ा वह चीख की दिशा में।
वह वह... जरूर किसी मुसीबत में है। उसे मेरी जरूरत है।
मैं आ रहा हूं श्वेता!
अब वह अपनी भूख भी भूल चुका था।
उधर आग की सुरंग में बढ़ता जा रहा था शैतान।
न जाने कितनी लम्बी है यह सुरंग। पता नहीं कहां से शुरू हो रही है और कहां खत्म होगी?
शीघ्र ही जवाब मिल गया शैतान को।
अगनल से शुरू हो रही है यह सुरंग की अग्नि और अगनल पर ही खत्म होगी यह।
यानि तुम्हें मारना जरूरी है, इस अग्नि को खत्म करने के लिए।
अगनल ने दिखाया अपना विकराल रूप-
शैतान फंस गया मुसीबत में।
उफ! इसके तेज के कारण मैं अपनी एकाग्रता खोता जा रहा हूं।
और एकाग्रता खोने का अर्थ था उस भयंकर अग्नि में जलकर राख हो जाना।

शूतान ने अगनल की आंखों में आंखें डाल दीं।
उफ! यह बहुत मुश्किल है, पर यह बहुत जरूरी भी है।
तू पहला शख्स है जो अगनल के इतना करीब पहुंच गया है।
अगनल ने दिखाया अपना प्रबल वेग-
अब तू और नहीं टिक पाएगा मेरे सामने।
लपलपाती हुई आग शूतान को भस्म करने के लिए बढ़ी।
किन्तु यह देखकर तो लगता है कि शूतान ने अगनल को अपने सम्मोहन में जकड़ लिया है।
हा हा हा अब आएगा खेल का मजा।
अब तू और नहीं टिक पाएगा मेरे सामने।
क्योंकि अब शूतान हिला तक नहीं था और नहीं हिला था अगनल भी...
उसे तो ऐसा लग रहा था जैसे उसकी और शूतान की जबरदस्त टक्कर हो रही है। जबकि असल में तो वह शूतान के जबरदस्त सम्मोहन के असर में बंधा एक तरफ खड़ा था।
कैसी स्थिति हो गई बेचारे की।
यह मेरी अग्नि का भयंकरतम रूप है, जिसके आगे तू नहीं टिक पाएगा।
और इस तरह हो रहा था दोनों का वह टकराव जो कि अगनल महसूस कर रहा था सम्मोहित अवस्था में।
यह मेरी अग्नि का भयंकरतम रूप है जिसके आगे तू नहीं टिक पाएगा।
तभी अगनल चौंक उठा, शूतान के हाथों से निकलते उस बर्फ के हमले को देखा।
उफ! यह क्या बर्फ? यह कैसा हमला किया इसने?
हां, अब बच कर दिखा बर्फ के इस तूफान से।

बौखला उठा अगनल उस बर्फ के घेरे में आकर-
हाहाहा कहो कैसी रही अगनल?
उफ!
अगनल को अपनी जिंदगी की पहली ही लड़ाई भारी पड़ रही थी-
आज तेरा अस्तित्व ही समाप्त कर दूंगा दानव!
आह!
वह बुरी तरह तड़प रहा था।
और उसकी यह स्थिति देख कर मजा लूट रहा था शैतान, क्योंकि असल में तो नजारा यह था-
वाह, भई वाह! क्या शानदार नजारा है।
आह
और फिर-
आह! नहीं, नहीं। रुको, मुझे मत मारो, मेरी सांसें रुक रही हैं।
नहीं, तुझे मरना ही होगा।
विलीन होता चला गया अगनल शैतान की बर्फ में
क्योंकि तभी मैं जिन्दा रह सकूंगा।
और अगनल की सांसों के तार टूटते ही गायब हो गई सुरंग की अग्नि भी।
मर गया शैतान मेरे सम्मोहन में फंस कर।
फिर आगे बढ़ चला शैतान।

किन्तु आगे बढ़ते उसके कदमों को थाम लिया उस चीख ने-
यह तो नन्ही-मुन्नी श्वेता की चीख है।
ई ई ईSS ईSS
फिर कदमों में जैसे पर उग गए उसके।
मैं आ रहा हूं श्वेता! मैं आ रहा हूं तेरे पास।
नटखट बिल्ली कपाला भागी चली जा रही थी।
कपाला, कपाला, रुको कपाला!
म्याऊं म्याऊं
तिलिस्म के अन्दर खेल रही थीं दोनों।
किन्तु भयानक जोखिमों से भरे उस तिलिस्म में भला कोई खेल खेला जा सकता है।
संकटा के होते तिलिस्मी ओलम्पाक में ऊधम!
ईS ईSSS
बिल्ली राक्षसी संकटा की पूंछ ने कपाला को बंदिनी बना लिया।
कपाला ने तीखे दांतों से दबोच ली संकटा की पूंछ-
इ ई शैतान!
संकटा ने उछाल फेंका कपाला को।
गुफा की कठोर चट्टान से टकराने जा रही थी कपाला...

...कि तुरीन के हाथों ने उसे सुरक्षित लपक लिया।
कपाला पर उठने वाले हाथों को मैं तोड़ दूंगी।
यह तो मेरी पूंछ का कमाल था। हाथों का कमाल दिखाना तो अभी बाकी है।
कपाला चढ़ गई तुरीन के कंधे पर और तुरीन चढ़ दौड़ी संकटा पर।
अब तुझे अफसोस होगा संकटा, अपनी पूंछ के कमाल पर।
SSSS
संकटा पर विद्युत प्रहार किया तुरीन ने...
... किन्तु संकटा ने काट डाला उसके वार को।
संकटा के लिए यह बचकाना वार है।
और यकायक संकटा ने अपने पर फैलाए और-
अपने लम्बे नाखूनों से तुझे चीर डालूंगी मैं।
अप्रत्याशित हमले से संभल ना सकी तुरीन।
ही ही ही
उफ!
संकटा ने दबोच लिया तुरीन को।
कपालाऽऽऽ
संकटा का संकट मंडरा रहा था तुरीन पर।

तुरीन की आवाज ने कपाला के अन्दर किया यह परिवर्तन-
म्याऊं
घर्र्र
और अब नटखट कपाला किसी से कमजोर नजर नहीं आ रही थी-
उसने तुरीन की तरफ देखा जिसकी हार निश्चित थी अगर...
कपाला एक क्षण भी और रुक जाती तो-
ओह! कपाला शुक्रिया! इसे खत्म कर दो तुम।
उफ!
और अब कपाला ने दबोच लिया था संकटा को।
शाबास कपाला!
संकटा की गर्दन की ओर बढ़े उसके तीखे दांत।
और गुफा संकटा की आखिरी चीख से गूंज उठी-
आईऽऽ ईऽऽऽऽ
कुछ ही क्षण बाद वे दोनों गुफा में आगे बढ़ रहे थे।
कपाला! अगर तुम वक्त पर ना आती तो आज मेरा अंतिम दिन होता।
तुम भी तो अगर समय पर ना आई होती तो मेरा भी आज आखिरी दिन होता।

तभी एक चीख दोनों के कानों में गूंजी जिसे तुरीन और कपाला दोनों ने ही पहचाना।
ईईई
श्वेता की चीख। वह यहां पर है।
श्वेता की चीख
कपाला ने आवाज की दिशा में दौड़ लगा दी–
मैं आ रही हूं प्यारी श्वेता!
और मुख्य नायक महाबली भोकाल ढूंढता फिर रहा था तिलिस्मी ओलम्पाक में श्वेता को।
पता नहीं कहां गई। वह किसी मुसीबत में ना फंस गई हो।
और तभी गूंजी वह चीख की आवाज।
ईऽऽईऽऽईऽऽऽ
श्वेता! श्वेता! तुझे क्या हुआ बच्ची... मैं... आ रहा हूं।
किन्तु जब वह सुरंग खत्म हुई–
हाएं! मैं तो फिर वहीं पहुंच गया।
अब वह दूसरी सुरंग में प्रविष्ट हो गया।
जरूर यह वह सुरंग है जहां से श्वेता की चीख की आवाज आई थी।

किन्तु ढाक के वही तीन पात –
फिर वही यह क्या माया जाल है?
हा हा हा
तभी गूंज उठा एक भयंकर अट्टहास।
और प्रकट हुआ उस अट्टहास का मालिक।
जब तक मखनातीस से पार नहीं पा लेगा बच्चे, ये सभी सुरंगें तुझे यहीं ले आएंगी।
तो फिर पहले तेरा ही अन्त करूंगा मैं मखनातीस।
भोकाल मखनातीस की तरफ लपका।
किन्तु जैसे ही उसने तलवार निकाली –
हाएं! यह क्या? मेरी तलवार कहां चली?
हा हा हा यही तो कमाल है बच्चे!
अब यह चिपक जाएगी मेरे शरीर से। तू हो जाएगा निहत्था और मैं करूंगा अपनी तलवार से तेरे टुकड़े!
तलवार से बचने के लिए भोकाल ने निकाली ढाल...
हा हा हा! इस अदनी सी ढाल से बचेगा! पर यह तेरे पास रहेगी कहां?
... और ढाल भी भोकाल के हाथ से निकल गई –
उफ! यह भी गई!
हो हा हा तेरी ढाल भी गई, तलवार भी गई, अब तू बचेगा नहीं
किन्तु मखनातीस की हंसी थम गई तब...

जबकि भोकाल ने उठा ली वह भारी चट्टान-
तलवार व ढाल के अलावा मेरे असीम बल का तू कुछ नहीं बिगाड़ सकता शैतान!
वाह! यह तो कमाल का बलशाली है।
उछाल फेंकी वह चट्टान भोकाल ने मखनातीस पर-
जय महागुरु भोकाल!
वाह! क्या शक्ति है!
लेकिन मखनातीस की तलवार के आगे टिक ना सकी वह चट्टान-
छोटे-छोटे-छोटे छोटे ऐसे ही छोटे-छोटे टुकड़े कर दूंगा अभी तेरे भी पहलवान!
और तलवार सीधी कर द्रुत गति से भागा वह भोकाल की ओर-
भाग-भाग बच्चे! भाग, भागता क्यों नहीं! मर जाएगा, अब बचेगा नहीं तू।
अगले ही पल उसकी तलवार का फल भोकाल के हाथों में कसा हुआ था-
वाह, भई! बड़ी फुर्ती दिखाई, पर कब तक रोकोगे इसे। हुम्म!
उफ! हाथ कटने से पहले ही कुछ करना होगा।

और खटाक के उच्च स्वर के साथ टूट गई मखनातीस की तलवार–
मेरी तलवार! मेरी तलवार तोड़ दी तूने। अब मैं लड़ूंगा कैसे बता?
खटाक
लड़ेगा नहीं, अब तू पिटेगा।
फिर उठा लिया भोकाल ने मखनातीस को और उछाल फेंका–
मुझे शीघ्रता से श्वेता के पास पहुंचना है।
और उसके लिए तेरा जल्दी मरना अति आवश्यक है, क्योंकि उसके बाद ही इन सुरंगों का तिलिस्म टूट सकता है।
भोकाल ने मखनातीस की छाती पर चिपकी अपनी तलवार खींची–
ला लुटेरे, मेरी तलवारें वापिस कर।
घोंप दी फिर वही तलवार उसने मखनातीस की छाती में ही–
खेल खत्म मखनातीस तेरा।
घच
अंतिम हिचकी ली मखनातीस ने।
अपनी तलवार व ढाल दोनों प्राप्त कर चल दिया भोकाल।
देखूं कहीं फिर से यह सुरंग मुझे यहीं ना पहुंचा दे।
किन्तु अब की सुरंग ने उसे जरूर पहुंचा देना था श्वेता के पास।

चारों तकरीबन साथ-साथ ही पहुंचे उस विशाल सोने के महल के सामने।
भोकाल, शूतान, अतिक्रूर और यह सोने का महल कैसा?
हम चारों तो मिल गए और अब श्वेता को खोजना है।
अरे बाप रे! सोने का महल।
सोने का महल वाह!

ारों पहुंचे एक-दूसरे के करीब और एक ही सवाल
िकला चारों के ही मुंह से-
क्या तुमने भी सुनी थी श्वेता की चीख ?
और इससे पहले कोई जवाब देता, फिर गूंज उठी वही चीख
ई ईऽऽऽ ईऽऽऽ
वह फिर चीखी। ढूंढो उसे।
चीख उनके करीब से ही आई थी।
ौर दहल गए वह दृश्य देखकर चारों के ही हृदय-
ई ई
तेरे को मरना ही होगा छोकरी! तिलिस्मी ओलम्पाक के निर्माता महान खजूरा के स्वर्ण महल में घुसने की कोशिश की थी तूने।
यह दहकते हुए स्वर्ण दानव तो इसे मार डालेंगे।
ओह! भगवान।

भोकाल की आवाज ने उन्हें होश दिलाया-
आओ बचाए उसे।
हां!
हां!
चारों लपके उन स्वर्ण दानवों की ओर।
चौंककर पलटे वे स्वर्ण दानव।
वाह! और शिकार आ गए। कितने वर्षों बाद आज हम सबको लड़ने का मौका मिलेगा।
और फिर भिड़ गए वे सभी-
अरे.हमारे लिए भी छोड़ना एक आधको।
मार डालो।
छोड़ना नहीं।
भोकाल ने उछाल फेंका अपने प्रतिद्वन्दी स्वर्ण दानव को।
अभी देखते हैं कौन किसको मारता है।
अतिक्रूर ने भी धकेल दिया अपने प्रतिस्पर्धी को-
अरे! हम मारेंगे और ये मरेंगे।

तूरीन के हाथ से निकलती किरणें आकाश में तड़पती बिजली की तरह पड़ी स्वर्ण दानवों पर-
इन्हें अपने से दूर तो रख सकती हूं, लेकिन इनका खात्मा कैसे होगा।
एक स्वर्ण दानव शैतान की तरफ बढ़ रहा था-
होजा! होजा सम्मोहित अबे, हो गया क्या?
और बुरी तरह उछल पड़ा शैतान दर्द की अधिकता के कारण-
अरे! नहीं हुआ रे, नहीं हुआ। मार डाला जालिम ने। हाए! इनकी तो आंखें ही नहीं हैं। सम्मोहित क्या खाक होता?
भाग लिया शैतान सिर छुपाने को
अरे, रे, कहां भागा। रुक-रुक ...
मुझे मरना है क्या रुककर पगला कहीं का।
और आ छिपा झाड़ियों में।
कुछ स्वर्ण दानवों ने भोकाल को दबोचने की कोशिश की-
अगर ये तीनों मुझे दबोच लेते तो मेरी लाश पर सोने का कफन चढ़ जाता।
दंताक से तोड़ डाली अतिक्रूर ने एक स्वर्ण दानव की खोपड़ी।
वो मारा!

किन्तु अगले ही पल उस दृश्य ने आंखें आश्चर्य से चौड़ी कर दीं अतिक्रूर की -
हाएं! इसका सिर तो दोबारा बन गया।
हा हा हा तुम हमें कभी खत्म नहीं कर सकते।
तो क्या अब हमारा अंत निकट है?
सन्न रह गया था अतिक्रूर।
जिसका फायदा उठाया स्वर्णदानवों ने -
ओलम्पाक राज कितना खुश होंगे तुम्हें मरता देख।
इन्हें ज्यादा देर नहीं रोक सकूंगा मैं।
स्वर्णदानवों के व्यूह में फंस गया था अतिक्रूर।
और फंसी हुई थी तुरीन भी उस स्वर्णवर्षा में -
उफ! कब तक रोक सकूंगी इन्हें मैं।
इतना सोना ये स्वर्णदानव बरबाद कर रहे हैं। नीच कहीं के, मुझे नहीं दे सकते क्या?
मुकाबला जोरदार था भोकाल का भी -
स्वर्णदानवों का यह हमला अब तक का सबसे जबरदस्त हमला साबित हुआ।
एकाएक भोकाल ने किया एक जबरदस्त वार -
जा नहा के आ। फिर लड़ूंगा तुझ से।

और स्वर्ण दानव जा पड़ा उस खूबसूरत से पानी के फौहारे में-
आ बेटे. आजा बाहर अब तो पूरा तर हो गया तू।
किन्तु अब पानी में डुबकी लगा चुका वह स्वर्ण दानव बदल चुका था एक निर्जीव पुतले में-
वो मारा! मिल गया रास्ता इन्हें खत्म करने का।
खुशी से उछल पड़ा भोकाल।
उसके बाद तो हर स्वर्ण दानव को उस फौहारे के नजदीक लाना था उनका लक्ष्य।
नई ताकत और फुर्ती आ गई इस बात से कि ये मर भी सकते हैं।
अतिक्रूर ने भी पूरी जांबाजी से अपने प्रति द्वन्दी को पहुंचाया उस पानी की मौत में।
हा हा हा हम ही जीतेंगे।
भोकाल भी गिन-गिन कर स्वर्ण दानवों को उस फौहारे में डालता गया-
ग्यारहवां और ये गया बारहवां भी।
तीनों की अभूतपूर्व बहादुरी के कारण तिलिस्म की यह बाधा भी पार हो गई थी।

खिल उठे सभी के चेहरे एक दूसरे को सही-सलामत देख कर-
भोकाल चाचा! अगर आपको उनकी मौत का रहस्य न पता चलता तो आज छुट्टी हो जानी थी हम सबकी!
जीत हमारी हुई!
मैंने तो पहले ही कहा था कि हम जीतेंगे।
मेरी तो जरूरत ही नहीं पड़ी तुम्हें।
और शैतान के इस वाक्य पर...
सारे ठठाकर हंस पड़े।
हा हा हा
ही ही
हो हो हो
तब अतिक्रूर बोला-
लाओ भाई, वह जादुई थैला निकालो भोकाल! मुझे तो भूख लगी है, बहुत जोर से।
और शैतान-
हां, मुझे भी एक करेला चाहिए आंखों में रस डालना है करेले का।
और इन सब हंसी-मजाक के पीछे...

... छुपी हुई थी सबके दिल में अपनी-अपनी आग-
अपनी मां परी रानी ओसिका का पता मैं अब तक नहीं पा सका हूं।
अपना-अपना लक्ष्य-
जल्द से जल्द यह तिलिस्म तोड़ना है मुझे। जिसमें कैद अपने पिता मेस्मर को छुड़ाना है मुझे।
अपनी-अपनी राह-
दंताक तो मुझे मिल चुका है। बस अपने मित्रों की सहायता कर इस तिलिस्म के टूटने के बाद शीघ्र अपने पिता कपालफोड़ को उस शैतान गजोख की कैद से छुड़ाना है।
अपने-अपने भेद-
फूचांग इस तिलिस्म के टूटते ही अपने पिता के पास पहुंचकर तेरा भेद खोलना है मुझे।
और अपने-अपने रहस्य- सबसे बड़ा रहस्य तुरीन, क्योंकि सिर्फ यही एक किरदार है, जिसके बारे में अब तक कोई भी नहीं जानता कि यह कौन है? और कहां से आई है और क्या चाहती है?
बदला

पृथ्वी पर इस भयानक खेल का पृथ्वी वासी भरपूर आनन्द उठा रहे थे -
वाह! ऐसा तिलिस्मी खेल पहले कभी नहीं देखा।
यह हैं बहादुरगढ़ के राजा मूंछपछाड़ सिंह।
धोबी घाट के राजा धोबीसिंह।
अब तो बस भोकाल ने यह तिलिस्म तोड़ ही दिया समझो।
सलीमगढ़ के राजा सलमान खान -
वाह! क्या खूबसूरती से भोकाल ने स्वर्णदानवों का खात्मा किया। काश! मैं भी उसके साथ होता तिलिस्मी ओलम्पाक में।
बर्मा का राजा कर्मा -
कर्मा पगले, तू क्यों नहीं गया इनके साथ। तिलिस्म टूटने पर कितना बड़ा खजाना लगता तेरे हाथ, इस खजाने से भी बड़ा।
बस्तर का राजा कनस्तर -
इतना बड़ा सोने का महल, सोने के दानव। इतने बड़े खजाने को भरने के लिए तो बहुत सारे कनस्तर चाहिए होंगे।
आबू का राजकुमार बाबू -
राजकुमार बाबू! पड़ोसी राजा पंकजसिंह ने हमारे राज्य पर आक्रमण कर दिया है। महाराज का आदेश है, आप रणक्षेत्र में हाजिर हों।
दफा हो जाओ यहां से देखते नहीं, हम दूरदर्शन दर्पण देखने में व्यस्त हैं।

उधर विकासनगर में राजा विकासमोहन, रानी मोहिनी, सेनापति प्रवीनसिंह और महामंत्री चन्द्रमणि भी दूरदर्शन पर आंखें गड़ाए बैठे थे–
भोकाल मेरी बच्ची की हर कदम पर रक्षा कर रहा है।
और तुरीन क्या कुछ कम है किसी से। सबसे ज्यादा बहादुरी तो वही दिखा रही है।
काश मैं भी अतिक्रूर की तरह बलवान होता।
सेनापति प्रवीन सिंह सोमरस में अपनी शक्ल देखी है कभी... अतिक्रूर बनेंगे ये। ही ही ही।
महाबली फूचांग खौफनाक खेल का रचयिता, इन सभी वीरों को तिलिस्मी ओलम्पाक में फंसाने वाला ओसाक ग्रह का विद्रोही जो ओसाक के राजा खाबोच की हत्या कर वहां का राजा बन बैठा और अब पृथ्वी पर राजा विकासमोहन का मेहमान बनकर किसी खास मकसद के लिए तिलिस्म तुड़वाना चाहता है इन महावीरों के हाथों–
हो हा हा सोने के महल के बिल्कुल नजदीक पहुंच गए हैं सब। बस एक बार महल में घुस जाएं तो तिलिस्म टूट गया समझो।

अतिक्रूर को चाहिए था दंताक जो उसे मिल गया।
शैतान को चाहिए अपना बाप मेस्मर जो उसे महल के अन्दर मिल जाएगा।
भोकाल को भी अपनी मां परी रानी ओसिका का पता मिल जाएगा महल के अन्दर।
किन्तु यह तुरीन, यह बहुत रहस्यमयी युवती है। है कौन यह! इसको क्या चाहिए इस तिलिस्म में?
महाबली फूचांग की जिंदगी का सबसे बड़ा रहस्य बनी हुई थी तुरीन।
और मुझे मिलेगा एक बहुत बड़ा खजाना जो कि मैं इनमें से किसी को नहीं दूंगा और उस खजाने में होगा ओसाक ग्रह के राज-घराने का वह जादुई ताज जो महान खजूरा राजकुमारी सोफिया को पहनाना चाहते थे।

तिलिस्म टूटते ही इन वीरों से मैं वह खजाना छीन लाऊंगा। वह ताज भी जिसे धारण करने के बाद मेरा मुकाबला कोई ना कर सकेगा...
...चाहे इसके लिए मुझे इन सभी को क्यों ना मौत के घाट उतारना पड़े।
और फिर फूचांग के होंठों पर कूदने लगी एक शैतान मुस्कान
तभी बुरी तरह चौंक उठा महाबली फूचांग-
अरे नहीं! यह-यह यहां कैसे? यह नहीं हो सकता। जरूर यह मेरी आंखों का धोखा है।
किन्तु इस सबसे बेखबर भोकाल, तुरीन, अतिक्रूर, शुतान और श्वेता लजीज भोजन का आनन्द ले रहे थे-
वाह! इस जादुई थैले से निकला खाना तो बहुत ही स्वादिष्ट होता है।
अब यह थैला तुम ही रखना, कहीं हम फिर बिछुड़ गये तो तुम भूख से फिर किसी राक्षस को हिरण समझ लोगे। हा हा हा
ही ही ही हा हा हा
•समाप्त•

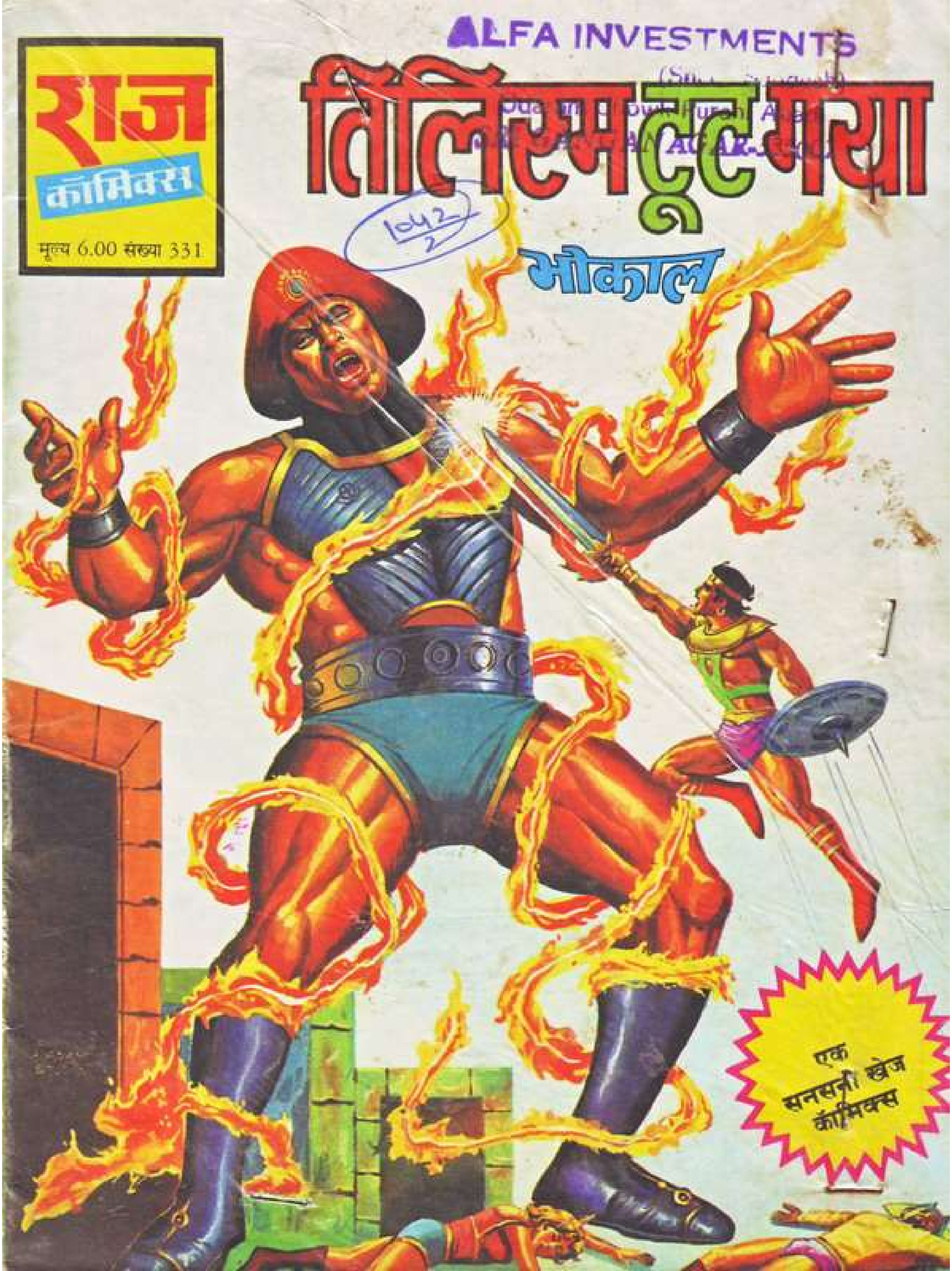
ALFA INVESTMENTS
राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 331
तिलिस्म टूट गया
भोकाल
एक
सनसनी खेज
कॉमिक्स

A GOYAL
ALFA INVESTMENT

भोकाल सीरीज

तिलिस्म टूट गया

• कथानक : संजय गुप्ता • सम्पादन : मनीषचंद्र गुप्त • चित्रांकन : कदम स्टूडियो •

तिलिस्मी ओलम्पाक के सोने के महल के सामने खड़े शैतान, अतिक्रूर, तुरीन और भोकाल ने आज दिलों में ठान ली थी कि तिलिस्म तोड़ कर रहेंगे।

© RAJA POCKET BOOKS

पांचों सोने के महल की तरफ बढ़े-
यही है तिलिस्मी ओलम्पाक का मुख्य द्वार जिसमें अब हम प्रवेश करेंगे।
तिलिस्मी ओलम्पाक में प्रवेश पाना कितना आसान लग रहा था...
...किन्तु इतना आसान है नहीं।
क्योंकि अगले ही क्षण चारों तरफ नजर आने लगे सैकड़ों हजारों भयंकर नाग।
हिस्स
हिस्स
ओह! इतने सांप।
एक और नई मुसीबत
यानि अभी और बाधाएं बाकी हैं।
टूट पड़ो इन पर। खत्म कर दो इन्हें।

हिस्स
दरिंदो! काट डालूंगा तुम्हें।
भरपूर शक्ति से तलवार घुमाई भोकाल ने---
दूर जाकर गिरा कटा हुआ सिर उस भयंकर नाग का–
ऐसे ही पल भर में खत्म कर दूंगा तुम सबको!
किन्तु अगले ही क्षण भोकाल का दावा झूठा पड़ता दिखाई दिया!
उफ! यह तो अभी भी जीवित है।
अतिक्रूर ने भी बंताक को एक खूंखार से दिखते नाग के खुले हुए जबड़े में घोंप दिया।
खचाक
किन्तु जबड़ा छिन्न-भिन्न हो जाने के बाद भी उस ढीठ नाग ने अतिक्रूर को जकड़ लिया--
उफ! यह कोई साधारण नाग नहीं है।

तूरीन की विध्वंसक किरणों ने बुरी तरह झुलसा दिए कई नागों के फन–
मुझ से नहीं बच पाओगे शैतानो!
किन्तु आश्चर्य की सीमा ना रही उसके भी तब जबकि–
उफ! ये..ये क्या मरे नहीं?
बहुत तेजी से लपककर उन नागों ने तूरीन को जकड़ लिया अपने मजबूत बंधनों में –
जब हथियारों का जोर ही न चला उन नागों पर तो आंखों का ही क्या जोर चलता।
मैं क्या करता, पूंछों से लपेट लिया कम्बख्तों ने मुझे।
तब जबकि चारों ही महाबलशाली महावीर जकड़े जा चुके थे उन शैतान नागों के बंधन में –

धरती का सीना चीरकर उस भयानक जीव ने जन्म लिया -
आ घर्रर हर्रर हिस्स
नहीं ई ई ई
ओह! नागदैत्य!
नागदैत्य श्वेता को गटकने के लिए झुका -
नहीं! मुंह पीछे कर शैतान. इस बच्ची को छूना भी मत।
और यह आवाज सुनकर...
... भी विचार नहीं बदला नाग दैत्य ने -
आ ध ई र
नहीं ई ई ऽऽ चाचा बचाओ।
रुक जा नीच!
दैत्य उसे मौत के द्वार की तरफ ले जा रहा था।

अपना सम्पूर्ण बल लगा दिया दोनों महाबली योद्धाओं ने -
तू घबराना नहीं श्वेता! हम आ रहे हैं।
शैतान दैत्य! अब मेरे क्रोध से तुझे कोई ना बचा सकेगा।
बिना एक भी पल गंवाए टूट पड़े दोनों नागदैत्य पर-श्वेता को शिकार बनाने आता नागदैत्य ही खूंखार शिकारियों के हाथों पड़ गया।
ये ले स्वाद चख, पहले भोकाल की इस ठोकर का।
और अतिक्रूर के इस प्रचण्ड घूंसे का स्वाद कैसा है ?
दांत बहुत कुलमुला रहे थे ना कुछ खाने को, अब यह घूंसे खाकर जवाब दे देंगे तेरे सभी दांत।

श्वेता को आज़ाद कराने के लिए अतिक्रूर ने तो नागदैत्य की भुजा ही उखाड़ दी।
पहले तो इस बच्ची को आज़ाद कराऊं, फिर सबक सिखाऊंगा तुझे!
जा बिटिया! तू कपाला के साथ खेल! इसे हम देख लेंगे!
दर्द से चिल्लाते नागदैत्य ने अपने दुश्मनों की तरफ देखा—

तबाही मचा दी दैत्य ने-
आ र्र्र्र्ई
क्रोध में पागल हो गया है यह!
अरे बाप रे! नाराज हो गया भाई!
और इससे पहले कि नागदैत्य कुछ कर पाता-
भोकाल की तलवार व अतिक्रूर का दंताक उसके मस्तक में प्रविष्ट हो गया!
आ र्र्र्ई
अगले ही पल नागदैत्य जा पड़ा धरती पर-
वो मारा!
और नागदैत्य के मरते ही सभी नाग हो गये गायब-
वाह! हम आजाद हो गये!

और अभी एक पल भी ना गुजरा था कि -
बस, अब इससे आगे नहीं जा सकोगे तुम लोग।
ओलम्पाकिया तुम्हें खत्म कर देगा।
अब ओलम्पकराज ने मुझे भेजा है तुम सबको मिट्टी का पुतला बना देने के लिए।
तीव्र रोशनी से बंद होती आंखों को भरपूर यत्न के बाद खोलकर सबने ओलम्पाकिया को देखा-
मेरे शरीर से निकलती यह रोशनी धीरे-धीरे तुम सबको पुतलों में परिवर्तित कर देगी।
भोकाल की तलवार आर-पार हो गई ओलम्पाकिया के शरीर के -
हा-हा-हा-इन खिलौनों का मुझ पर कोई असर नहीं होगा।
किन्तु उसका कुछ बिगाड़ ना सकी वह तलवार।
तुरीन की शक्तिशाली किरणें भी कुछ न बिगाड़ सकीं उसका -
मुझ पर सब कुछ बेअसर है।
अतिक्रूर का असीम बल भी व्यर्थ चला गया।

इतने तीव्र प्रकाश के आगे शुतान के नेत्र भी शांत ही रहे–
इसके तेज को ना काट सकेगी मेरी सम्मोहन शक्ति।
और देखते ही देखते सभी मिट्टी के पुतलों में बदलने लगे–
भोकाल! यह हमारे शरीरों को क्या हो रहा है?
मैं हिल भी नहीं पा रहा।
हम पुतले बनते जा रहे हैं।
बेबसी से अपने शरीर को मिट्टी में तब्दील होते देख रहे थे वे–
अब हमें कोई नहीं बचा सकता।
और उस बेबसी पर ठहाका लगा रहा था वह... वह जो हो गया था कामयाब–
हा हा हा
बन गए सभी निर्जीव पुतले और अब इनकी कहानी खत्म!
कामयाबी पर हंसते-हंसते हुए उसके शरीर में हुआ परिवर्तन–
ओलम्पक राज खुश होगा, शाबाशी देगा। ये छ: थे और मैं अकेला। हा हा हा।
उन पुतलों के करीब पहुंचा वह –
एक बात तो है, बहुत बहादुरी दिखाई तुम लोगों ने, क्योंकि ओलम्पक राज की सेना का आखिरी सिपाही हूं मैं। मेरे बाद तो बस ओलम्पक राज को खुद ही आना पड़ता तुम को रोकने के लिए।

खुशी से झूमता हुआ शैतान की तरफ बढ़ा वह –
और ओलम्पकराज से तो खैर तुम बच ही नहीं सकते थे... है... हाए यह क्या...
बुरी तरह चौंक उठा था ओलम्पाकिया... और उसका कारण था शैतान की आंखें –
इसकी आंखें मुझे घूर क्यों रही हैं! क्या है इन आंखों में मुझे बांध रही हैं ये आंखें!
और कुछ कर पाने से पहले बंध गया ओलम्पाकिया उन आंखों के सम्मोहन में।
हां हुजूर, गुलाम से भूल हुई जो आपको पुतला बनाया...
लीजिए, मैं अभी अपना जादू वापस ले लेता हूं।
वापस ले लिया ओलम्पाकिया ने अपना जादू...
और वे सभी एक बार फिर जीवित हो उठे –
हम... हम ठीक हो गए।
हां, हम सभी सामान्य हो गए।
कैसे हुआ यह?
तभी गायब हो गया ओलम्पाकिया –
सफल होकर भी शैतान के सम्मोहन के आगे असफल हो गया था वह।

शैतान ने रहस्य खोला इस चमत्कार का—
जब मैंने देखा कि उसके प्रबल तेज के आगे हम कुछ नहीं कर पाएंगे तो मैं चिरनिद्रा अवस्था में आ गया और उसके जादू का पूरा प्रभाव अपने शरीर पर होने से बचा गया ...
...जिसके कारण मेरा मस्तिष्क व मेरी आंखें दोनों सामान्य रहीं और जब उसका तेज खत्म हुआ, वह मेरे करीब पहुंचा तो मेरे सम्मोहन ने उसे बांध लिया फिर जो मेरे मस्तिष्क ने उसे आदेश दिया उसका उसने पालन किया।
शैतान ने हम सबको दूसरा जीवन दिया है।
अब जाने यह ऑलम्प कराज किस रूप में हमारे सामने आएगा।
फिर वे सोने के महल की ओर बढ़ चले।
किन्तु—
महल के द्वार के पास ही पांचों को रुक जाना पड़ा।
उनके सामने खड़ा था...
ऑलम्प कराज के रहते इस महल में प्रवेश नहीं कर पाओगे बच्चो!
और सुनो, अब तुम्हारा यह सफर मैं समाप्त कर दूंगा, तुम सब को समाप्त करके।

बढ़-चढ़ कर बोलते ओलम्पकराज की तरफ पहले बढ़ा शैतान —
आ शैतान! देखूं तुझ में कितनी शक्ति है।
ओलम्पकराज ने तत्काल किया वार —
तुझे तो कतई मौका नहीं दूंगा मैं।
किरणें टकराईं शैतान के सीने से —
उफ!
और किरणों ने जकड़ लिया शैतान को —
आह! उफ! मेरी आंखें भी जकड़ ली इन किरणों ने।
ये मेरे शरीर की सारी शक्ति चूस रही हैं। मैं आजाद नहीं हो पा रहा हूं इनसे।
सन्नाटा खिंच गया सभी के चेहरों पर —
??
!!
??
अतिक्रूर आगे बढ़ा और वह विशाल पेड़ उखाड़ लिया उसने —
ओलम्पकराज
मैं नहीं छोड़ूंगा तुझे।
हा हा हा मच्छर!
मेरे असीम बल से परिचित नहीं है तू।

मुस्कराते हुए अतिक्रूर पर भी किया उसने किरणों का वार —
यानि बलशाली मच्छर को मारना है मुझे।
आह!
उफ! भोकाल! बचाओ। मैं सह नहीं सकता इसे। मर जाऊंगा मैं।
उछली तुरीन और —
घरूम
नीच शैतान!
तुरीन की उन विध्वंसक किरणों का ओलम्पकराज पर तो कोई असर न हुआ, किन्तु ओलम्प कराज की शक्ति को वह ना पचा सकी —
उफ! नहीं! यह असहनीय है।
क्रोध से पगला उठा भोकाल।
भोकाल की तलवार से नहीं बच सकेगा तू।
ओलम्पकराज ने किया उस पर भी किरणों का वार —
ले तू भी चख ले स्वाद!
आह!

ओलम्प कराज के गूंजते हुए ठहाकों के बीच बहुत मुश्किल से खड़ा हो सका भोकाल—
हा हा हा
हाथ झुके ओलम्प कराज के भोकाल पर वार करने को और फिर किया उन्होंने किरणों का प्रहार—
अब तू भी अपने साथियों वाली स्थिति में पहुंच जाएगा।
किन्तु इस बार वह नहीं हुआ जो होता रहा था।
एक तरफ से आती किरणें तलवार में समा गईं और तलवार से निकलकर...
... वह किरणें जब ओलम्प कराज के शरीर से टकराईं—
ओह! मैं मरा। यह किरणें मुझे जला रही हैं।
यह कैसे हो गया? कहां से आ रही हैं ये किरणें?
अपनी ढाल के साथ उड़ा भोकाल और—
आह!
आखिरी चीख निकली ओलम्प कराज के मुख से।
कटे हुए वृक्ष की तरह गिरा ओलम्प कराज का निर्जीव शरीर धरती पर—
धड़ाम
खत्म हुई तिलिस्म की आखिरी बाधा, किन्तु, किसकी सहायता से...

असहाय से पड़े अपने मित्रों के शरीरों के नजदीक पहुंचा वह–
अतिक्रूर, शूतान, खड़े होओ मित्र !
हममें बहुत कमजोरी आगई मित्र।
हमारी सारी शक्ति क्षीण हो चुकी है।
दीदी! उठो दीदी!
म्यांऊ!
कुछ ही पलों के बाद वे सभी स्वस्थ हो सोने के महल के द्वार पर खड़े थे –
हमने जो ताबीज पहने हुए हैं उनके कारण हम इस महल में प्रवेश कर सकते हैं।
सर्वप्रथम आगे बढ़ा शूतान किन्तु –
अब जल्दी ही मैं अपने पिता मेस्मर से मिल सकूंगा! उफ!
फिर बढ़ा अतिक्रूर –
अब एक बड़े खजाने के हम मालिक होंगे। आह!
द्वार से निकलती किरणों ने दोनों को रोक लिया।
भी गूंज उठी वहां एक रहस्यमय आवाज –
ठहरो, राजकुमारी सोफिया ही इस तिलिस्म में प्रवेश कर सकती है।
राजकुमारी सोफिया!
और नजर आया वह हैरत अंगेज चेहरा –
उपस्थित सज्जनों को गाजोबाजो का प्रणाम।

सभी चौंक उठे महर्षि गाजोबाजो को वहां देखकर –
प्रणाम महर्षि!
आयुष्मान भव!
?? !!
तो महर्षि आप ही ने मुझे वह शक्ति दी जिसके कारण मैं ओलम्पकराज को समाप्त कर सका?
हां, वत्स, मैं सही वक्त पर यहां पहुंचा था।
महर्षि! जब मैं आश्रम में पहुंचा तो आप मुझे वहां नहीं मिले थे। आप कहां चले गये थे महर्षि, और यह राजकुमारी सोफिया कौन है? कृपया ये सभी रहस्य स्पष्ट करें।
जरूर पुत्र भोकाल मैं तुम्हें सिलसिलेवार सारी कहानी बताता हूं।
फिर महर्षि ने उन्हें बताना शुरू किया।
यह कहानी शुरू होती है ओसाक ग्रह से।
ओसाक ग्रह के राजा गार्बोच की हत्या करके बागी फुचांग वहां का राजा बन बैठा...
जाओ, राजकुमारी सोफिया व रानी रसीया को ढूंढ कर लाओ।
किन्तु वह उनकी परछाईं भी ना पा सका। राजकुमारी सोफिया एक गुप्त जगह पर अपनी मां रानी रसीया के पालन-पोषण में जवान हुई...
पुत्री! अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए तुम्हें तिलिस्मी ओलम्पाक जाना होगा। जहां तुम्हें पृथ्वीलोक में रह रहे तुम्हारे पिता के वफादार महर्षि गाजोबाजो भेजेंगे।
मैं आज ही वहां रवाना हो जाती हूं।
राजकुमारी सोफिया मेरे पास आई किन्तु तब तक फुचांग भी मुझ से मिलकर जा चुका था, मैंने राजकुमारी को उसकी नजरों से बचा कर तिलिस्मी ओलम्पाक भेजने की एक योजना बनाई...
राजकुमारी सोफिया आज से तुम तुरीन के रूप में रहोगी और यह नटखट बिल्ली कपाला हर पल तुम्हारे साथ रहेगी।
...तुरीन बनी सोफिया को पूरी योजना समझाकर मैंने विदा किया और...

राजकुमारी सोफिया कि एक प्रतिकृति बनाकर एक कालीन में लपेट कर मैं राजमहल पहुंचा,जहां इस प्रतिकृति की हत्या कर मैंने नकली ताबीज तैयार किए ...
अब इन ताबीजों को पहनकर कोई भी महाबली तिलिस्मी ओलम्पाक पहुंच सकता है।
हम तुम्हें इसका इनाम देंगे महर्षि गाजोबाजो!
नाम में उसने मुझे मौत देनी चाही और मेरे फैलाए मायाजाल में फंसा हुआ वह यही समझता रहा कि उसने मुझे कत्ल कर दिया है ...
अब मैं तिलिस्मी ओलम्पाक में प्रवेश करने का सही अवसर ढूंढूंगा।
फिर मैं वहां से निकल लिया।
तुम सब को तिलिस्मी ओलम्पाक भेज दिया गया और मैं एक गुप्त स्थान पर योग द्वारा यहां का सब दृश्य देखता रहा ...
अगर मैं अभी इनकी मदद को तिलिस्मी ओलम्पाक चला गया तो फूचोंग को मेरे बारे में पता चल जाएगा और वह कोई ना कोई छल कर जाएगा।
और अब तुम उस पाजी के चुंगल से दूर अपनी मंजिल के सामने खड़े हो अब तुम्हें कोई नहीं रोक सकेगा अगर...
कहते हुए महर्षि ने तुरीन उर्फ राजकुमारी सोफिया की ओर देखा।
तुरीन ने झट एक खंजर निकाला।
मैं समझ गई महर्षि,आप क्या कहना चाहते हैं!
इसके साथ ही तुरीन ने उस खंजर से अपने अंगूठे को चीरा और...
अपने कुछ बाल तोड़ उन्हें रक्त में भिगो कर ताबीज तैयार किए -
लीजिए, महर्षि!
एक-एक ताबीज सब को दे दो राजकुमारी!
फिर सभी ने वे ताबीज धारण किए।

खौफनाक खेल का रचयिता फूचांग —
नहीं, धोखा गाजोबाजो तूने मुझे बरबाद कर दिया।
पागल हो उठा फूचांग, तबाही मचा दी उसने —
उफ! मुझे कहीं का नहीं छोड़ा इसने।
इधर सोने के महल के द्वार की तरफ कदम उठाया तुरीन ने —
ना जाने अन्दर क्या होगा ?
हलके से दबाव के साथ ही खुलता चला गया सोने के महल का वह स्वर्ण द्वार —
चीं ई ई
तभी उस रौबीली आवाज ने सबके कानों में धमाका किया।
स्वर्ण महल 'तिलिस्म' में आप सब वीरों का स्वागत है।
अगले ही पल सभी अन्दर प्रविष्ट हो गए —
वाह!
अति सुन्दर।
भव्य!

तभी महर्षि गाजोबाजो की आवाज गूंजी —
इस महल में इससे भी सुन्दर,इससे भी भव्य व अद्भुत कक्ष व चीजें मौजूद हैं...
... और वह सब चीजें तभी देखने को मिलेंगी जब कि हमें महान खजूरा दर्शन दें।
पांचों के ही मुंह से एक साथ निकला —
महान खजूरा!
महान खजूरा!
हां,महान खजूरा ओसाक-ग्रह के कुलगुरू तिलिस्मी ओलम्पाक के रचयिता और महाबली फुचांग के पिता...
... जिन्हें अपने कुपुत्र फुचांग पर पहले से ही संदेह था कि वह ओसाक-ग्रह का राज्य हड़पने के लिए कभी ना कभी राजद्रोह करेगा ही।तब उन्होंने अपने अत्यंत सशक्त जादुई मुकुट 'प्रहारा' को तिलिस्मी ओलम्पाक बना कर यहां सुरक्षित कर दिया।

...'प्रहार' की जादुई शक्तियां असीमित हैं. फूचांग उसे प्राप्त करने की कोशिश करता ही। उसके लिए महान खजूरा ने उसे शाप दिया कि वह यदि तिलिस्मी ओलम्पाक में घुसा तो भस्म हो जाएगा...
...और राजपरिवार का भविष्य सुरक्षित करने के लिए उन्होंने नन्हीं राजकुमारी सोफिया के रक्त व बालों में वह तिलिस्मी ताकत भर दी कि केवल वही इस तिलिस्मी महल में प्रवेश करके 'प्रहारा' प्राप्त कर सके...
...और अब हमें प्रहारा के लिए महान खजूरा को बुलाना होगा।
महान खजूरा ओसाक ग्रह के भाग्य विधाता...मैं राजकुमारी सोफिया आपको प्रणाम करती हूं। कृपया हमें दर्शन दें।
तभी तीव्र चमक के साथ प्रकट हुए महान खजूरा—
तिलिस्मी ओलम्पाक पर विजय प्राप्त करने वाले सभी योध्दाओं को कामयाबी की शुभकामनाएं।
प्रणाम महान खजूरा।

पुत्री सोफिया, हमें दुख है कि हमारे निकम्मे पुत्र फूचोंग ने तुम्हारे पिता की हत्या की व तख्ता पल्ट कर तुम्हें व तुम्हारी माँ को दर-दर भटकने के लिए मजबूर किया...
...किन्तु पुत्री हम जानते-बूझते व चाहकर भी उसका कुछ ना बिगाड़ सकते थे, क्योंकि उसके जन्म के वक्त ही यह आकाशवाणी हुई थी कि फूचोंग तुम्हारा पुत्र बेहद कुकर्मी व कुचक्री...
...साबित होगा किन्तु यदि तुमने इसका कोई भी अहित किया तो तुम्हारा व ओसाक ग्रह का विनाश हो जाएगा...
...तभी मैंने तिलिस्मी ओलम्पाक की रचना की और आज तुम इस लायक हो कि 'प्रहारा' धारण करके ओसाक ग्रह को उस दरिंदे के चंगुल से बचा सको।
तभी महान खजूरा का हाथ हवा में लहराया और...
यह है प्रहारा।
फिर महान खजूरा ने वह खूबसूरत ताज तुरीन उर्फ राजकुमारी सोफिया के सिर पर रख दिया—
धन्यवाद गुरुवर! मैं ओसाक ग्रह को उस जालिम के चंगुल से अवश्य आजाद कराऊंगी।

महाबली भोकाल, परीलोक के राजकुमार, हम आपके शुक्रगुजार हैं, क्योंकि आप ही की मदद, अदम्य साहस व वीरता से यह तिलिस्म टूट पाया है...
...और हम यह भी जानते हैं कि यहां आने के पीछे तुम्हारा लक्ष्य क्या है...तुम्हारी मां परीरानी ओसिका... जो कि राक्षस राज बोझ व भरकम के चंगुल में फंस गई थी...
जिन्हें मैं यहां ले आया और जो कि तुम्हारे हाथों मारे जा चुके हैं किन्तु तुम्हारी मां अभी भी पृथ्वी पर ही है, किन्तु अब वह फूचांग की कैद में है।
उसे उसके किए की सजा बहुत भयंकर दूंगा मैं।
बलशाली मानव अतिक्रूर तिलिस्मी ओलम्पाक के तीसरे विजेता जो अपने अपूर्व पराक्रम से ना केवल तिलिस्म पर विजय प्राप्त कर पाए बल्कि अपनी वांछित वस्तु दंताक भी प्राप्त कर चुके हैं।
अब आपके सबसे बड़े दुश्मन गजोख पर आपकी विजय की कामना करते हैं हम।
धन्यवाद महान खजूरा!

अद्भुत शक्तियों के स्वामी व तिलिस्म के चौथे विजेता प्रोका ग्रहवासी शूतान, आपके पिता मान्यवर मैस्मर पूर्णत: सुरक्षित हैं।
मैं उनसे शीघ्र मिलना चाहता हूं।
जरूर मिलवाते हैं...किन्तु पहले ओसाक ग्रह के देश-भक्त व स्वामी भक्त महात्मा महर्षि गाजोबाजो को तो बधाई दे दें। उनकी व उनकी राजनीतिक चालों की विजय की।
धन्यवाद महान खजूरा। यह मेरा कर्तव्य था।
और यह नन्हीं बच्ची श्वेता इसे हम इसके अदम्य साहस पर यह स्वर्ण महल 'तिलिस्मा' इनाम स्वरूप देंगे।
धन्यवाद किन्तु म...म ...मैं इस महल का क्या करूंगी
फिर उठ खड़े हुए महान खजूरा —
चलिए, अब हम आपको इस महल का खजाना व शूतान के पिता मैस्मर से मिलवाते हैं।
और सभी उनके पीछे चल पड़े।
उन्हें लेकर महान खजूरा पहुंचे एक बहुत बड़े कक्ष में जिसमें फैले उस बड़े खजाने को देख सबकी आंखें फैल गईं
यह है वह खजाना जिसका लालच फुचांग सबको दे रहा था। परन्तु तिलिस्म टूट जाने के बाद जिसे वह खुद हड़प जाता। अब यह तुम सबका है।
हम इसका क्या करेंगे, हमें इस धन का कोई लालच नहीं है, यह इसी महल में रहेगा और निर्धनों के काम आएगा।

फिर महान खजूरा उस सुन्दर से ताबूत के पास पहुंचे।
तुम्हारे पिता इस ताबूत में बन्द हैं शूतान!
अतिक्रूर ने आगे बढ़कर अपना बाहु बल दिखाया —
कर र्र्र...
ताबूत के खुलते ही नजर आया मेस्मर —
पिताश्री!
लिपट गया पुत्र पिता से —
पिताश्री! आंखें खोलिए! पिताश्री, देखिये यह मैं हूं आपका सबसे शरारती पुत्र शूतान!...
...मैंने अपने भाइयों के हत्यारे अकोर से बदला ले लिया है पिताश्री, और अब जल्दी ही आपकी दुर्गति करने वाले जालिम कास्कोर को भी मौत के घाट उतार दूंगा!...
...उठिए पिताश्री! उठिए...
शूतान, तुम तो सम्मोहन विद्या के ज्ञाता हो फिर भी भूल कर रहे हो।

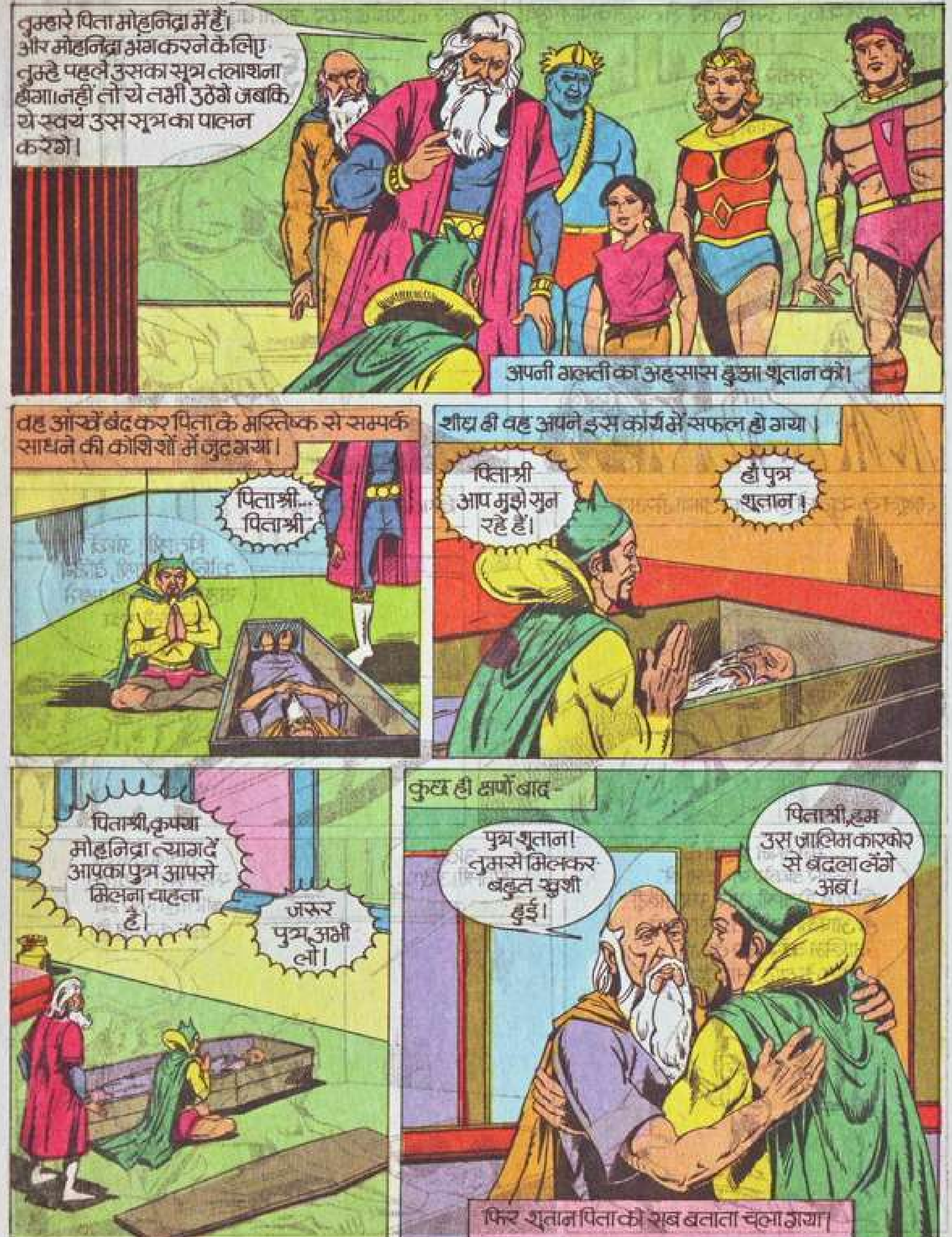
तुम्हारे पिता मोहनिद्रा में हैं। और मोहनिद्रा भंग करने के लिए तुम्हें पहले उसका सूत्र तलाशना होगा। नहीं तो ये तभी उठेंगे जबकि ये स्वयं उस सूत्र का पालन करेंगे।
अपनी गलती का अहसास हुआ शैतान को।
वह आँखें बंद कर पिता के मस्तिष्क से सम्पर्क साधने की कोशिशों में जुट गया।
पिताश्री... पिताश्री
शीघ्र ही वह अपने इस कार्य में सफल हो गया।
पिताश्री आप मुझे सुन रहे हैं।
हाँ पुत्र शैतान।
पिताश्री, कृपया मोहनिद्रा त्याग दें आपका पुत्र आपसे मिलना चाहता है।
जरूर पुत्र अभी लो।
कुछ ही क्षणों बाद-
पुत्र शैतान! तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई।
पिताश्री, हम उस ज़ालिम कारकोर से बदला लेंगे अब।
फिर शैतान पिता को सब बताता चला गया।

पुत्र से मिलकर मैस्मर मुड़ा –
सज्जनो, आपने मेरे पुत्र को मुझसे मिलवाने में जो सहायता की उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!
फिर महान खजूरा उन्हें उस अद्भुत स्वर्ण महल के सभी रहस्य समझाने लगे।
...मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह तिलिस्मी महल लोगों की भलाई के लिए तुम लोगों के बहुत काम आएगा...
अब मैं आप सब से विदा लेता हूं...यह महल व यह खजाना सभी आप लोगों का है... विदा!
और उनके देखते ही देखते महान खजूरा अदृश्य हो गए...
खजाने वाले कक्ष से निकलकर सभी पहुंचे 'तिलिस्मा' के संचालन कक्ष में –
ऐ तिलिस्मा! विकासनगर पृथ्वी लोक पर किसी सुरक्षित स्थान पर चलो।
अगले ही पल स्वर्ण महल तिलिस्मा उड़ चला पृथ्वी की ओर –
और विकास नगर से कुछ दूर एक जंगल में उतर गया वह विशाल स्वर्ण महल।

तिलिस्मा! शूतान व मेस्मर को पहुंचा दो हिप्ना ग्रह के प्रोका देश में।
हम जल्दी ही मिलेंगे भोकाल!
जरूर मित्र!
अदृश्य हो गए शूतान व मेस्मर।
अब बारी थी अतिक्रूर की —
मित्र भोकाल! पिताजी को आजाद करके मैं शीघ्र ही यहां हाजिर होऊंगा।
अतिक्रूर भी भुजंग देश के लिए रवाना हो गया।
और उसके बाद —
हम सबको अब महाराज विकासमोहन के राजदरबार में पहुंचा दो।
अगले ही पल गायब हो गए पांचों —
और सदृश्य हुए राजदरबार में —
उन्हें वहां देख चौंक उठे सभी।

उछल पड़े राजा विकासमोहन उन्हें देख –
प्रणाम महर्षि! आप...आपलोग तिलिस्मी ओलम्पाक से लौट आए!
प्रणाम महाराज
हां महाराज, हम तिलिस्मी ओलम्पाक पर विजय प्राप्त कर आए,हम आपको आपकी पुत्री श्वेता लौटाने आए हैं।
...और अपना दुश्मन फूचांग आपसे मांगने आए हैं।
रंग उतर गया राजा विकासमोहन के चेहरे का –
फूचांग... वह तो उसी दिन गायब हो गया था, जिस दिन तिलिस्मी ओलम्पाक में उसने महर्षि गाजोबाजो को देखा था।...
...और तभी सारी दुनिया को उसकी असलियत का पता चला था। उसके बाद तिलिस्मी ओलम्पाक में क्या होता रहा किसी को नहीं पता, क्योंकि वह दूरदर्शन दर्पण का सारा संचालन नष्ट कर गया था।

एक बार फिर भटक गया भोकाल –
मैं उसे पाताल से भी खोज निकालूंगा।
भोकाल, हमें अफसोस है कि हमने तुम्हारे शत्रु को अपने यहां पनाह दी और उसके कुकृत्यों में उसका साथ दिया और सब कुछ जानते हुए भी तुमने ...
...हमारी पुत्री को हर जगह मौत के मुंह से बचाया।
इसमें आपका कोई दोष न था महाराज, और श्वेता तो है ही इतनी प्यारी कि इसके लिए तो कोई भी अपनी जान पर खेल जाए।
फिर भी पुत्र हम चाहेंगे कि अब तुम यहीं हमारे साथ ही रहो और हम वायदा करते हैं कि आप लोगों को फूचांग तक पहुंचाने में हम अपनी जान पर भी खेल जाएंगे।
किन्तु महाराज!
मान जाओ ना चाचा, वरना हम नाराज हो जाएंगे।
ओह!
और नन्ही श्वेता का आग्रह वे लोग ना टाल सके।
बाद में –
अब हमारा लक्ष्य है फूचांग!
समाप्त

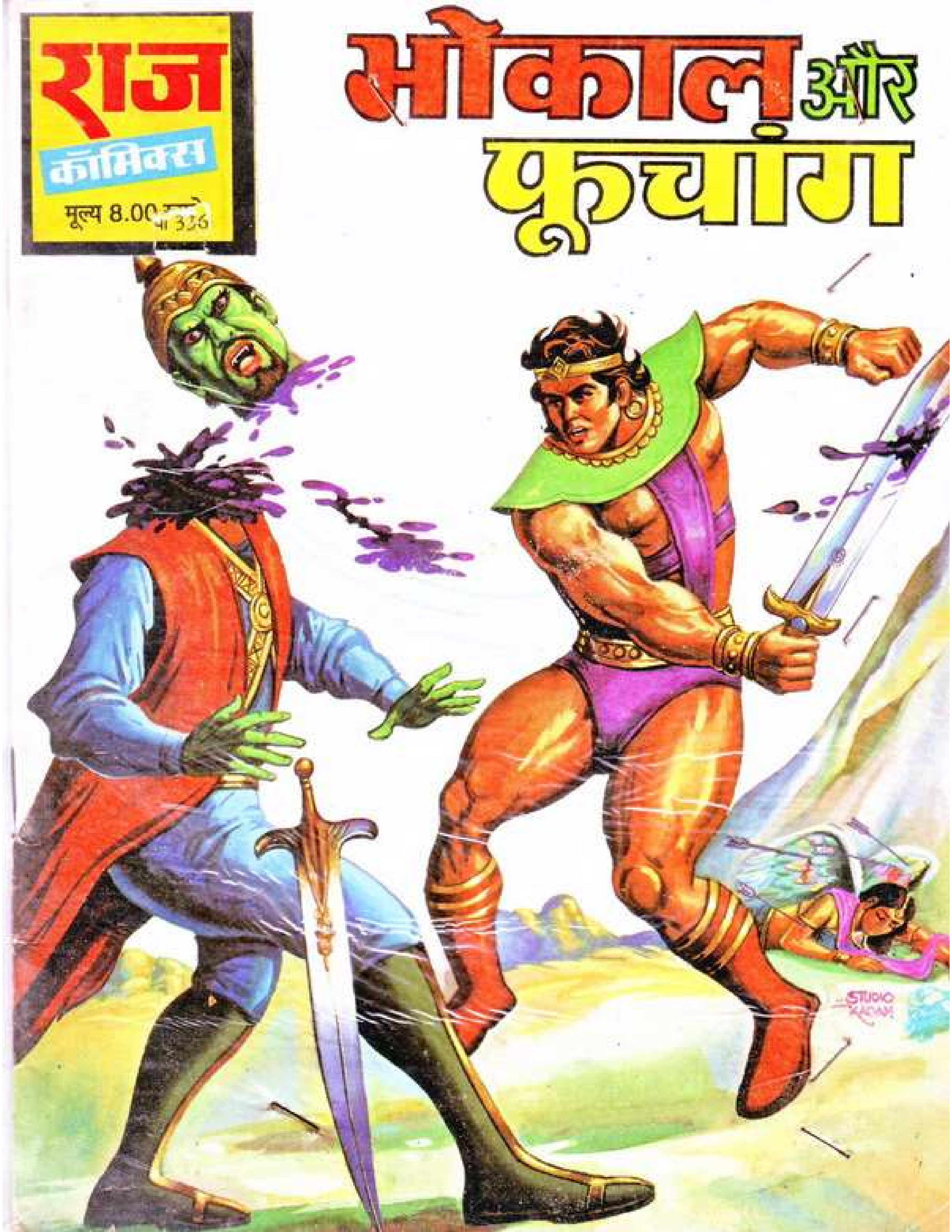
राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.00
भोकाल और
फूचांग
STUDIO KADAM

1630

भोकाल और फूचांग

•कथानक•
संजय गुप्ता

•सम्पादन•
मनीषचंद्र गुप्त

•चित्रांकन•
कदम स्टूडिओ

महाबली भोकाल, तुरीन व महर्षि गाजोबाजो तिलिस्मा की ओर बढ़ रहे थे –
महर्षि क्या 'तिलिस्मा' में हमें फूचांग के बारे में पता चल जायेगा?
जरूर पता चलेगा भोकाल! तिलिस्मा की सामर्थ्य शक्ति असीमित है।
महर्षि, मैं फूचांग से अपनी मां परीरानी ओसीका को कैद करने का भयानक बदला लूंगा।
और मैं उस दरिंदे से अपने पिता की हत्या का बदला लूंगी।
जरूर लेना बच्चो, किन्तु पहले उस तक पहुंच तो जाएं।
उनका रथ जंगल में प्रविष्ट हो गया।
तभी एक भयानक आवाज से जंगल गूंज उठा –
अरे! यह आवाज कैसी?
दरड़ दरड़ दरड़
जंगल की सभी प्राकृतिक बाधाओं को रौंदता एक विशालकाय गोला लुढ़कता आ रहा था –

तीव्र गति से मौत का दूत बना वह गोला उनकी तरफ बढ़ा –
उफ!
कूदो!
बचो!
समय रहते तीनों ही रथ से छलांग लगाकर बच गये।
और रथ का कचूमर बना कर वह गोला रुक गया।
करड़ करड़
यह तो हमें कुचल ही देता।
यह बला है क्या?
उसके प्रश्न के जवाब में उस विशाल गोले से निकलने लगे वे विचित्र प्राणी –
देखते ही देखते उन्हें चारों ओर से घेर लिया सैकड़ों विचित्र प्राणियों ने –
उफ! मेरा दिमाग फटा जा रहा है इनके भयानक शोर से।
ये चाहते क्या हैं हमसे?
एक साथ असंख्य हथियार लपके उनकी ओर –
युध्द ही चाहेंगे। पहले इन्होंने हमारा रथ कुचला, अब हमें कुचलना चाहते हैं।

वह चिल्ला उठा-
भो का ल
और उस में हुआ वह आश्चर्यजनक परिवर्तन।
सभी हथियार टकराये तुरीन की प्रलयंकारी किरणों व भोकाल की ढाल से -
मेरी शक्तिशाली किरणों से परिचित नहीं हैं ये।
बड़ी से बड़ी सेना महाबली भोकाल की शक्ति के आगे शून्य है।

फिर एक भयानक जंग छिड़ गई वहां -
सांय
कुर्र कुर्र
किसी से कम न थे वे भयानक बौने व विचित्र प्राणी -
अरे! ये शैतान तो ऊपर ही चढ़े आ रहे हैं।
इसी परेशानी का सामना कर रही थी तुरीन भी -
कुर्र
यह तो बढ़ते ही जा रहे हैं।
स्थिति की गम्भीरता से शीघ्र ही परिचित हो गए महर्षि गाजोबाजो -
भोकाल, शीघ्रता से वह सुनहरी गोला तोड़ डालो। अन्यथा ये विचित्र प्राणी इसी तरह बढ़ते रहेंगे।
विधुत गति से भोकाल दौड़ पड़ा उस विशाल गोले की ओर -
अगर यह बात है तो अब यह एक पल भी नहीं बचेगा।
कुर्र कर्र
तलवार के एक ही वार से वह गोला एक भयंकर विस्फोट के साथ ध्वस्त हो गया।
बड़ाम
रथ का भी बदला ले लिया मैंने।

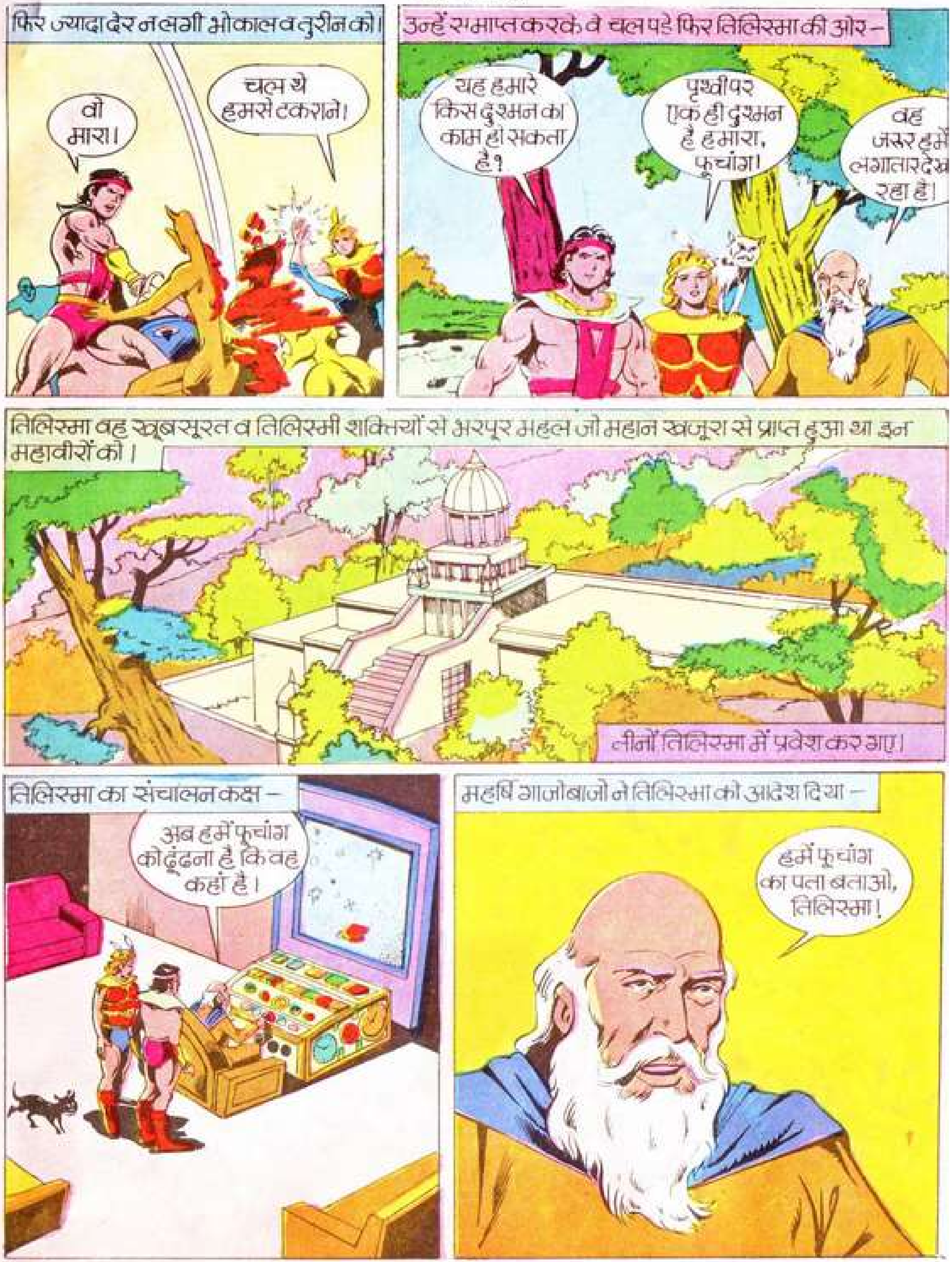
फिर ज्यादा देर न लगी भोकाल व तुरीन को।
वो मारा।
चले थे हमसे टकराने।
उन्हें समाप्त करके वे चल पड़े फिर तिलिस्मा की ओर –
यह हमारे किस दुश्मन का काम हो सकता है?
पृथ्वी पर एक ही दुश्मन है हमारा, फूचांग!
वह जरूर हमें लगातार देख रहा है।
तिलिस्मा वह खूबसूरत व तिलिस्मी शक्तियों से भरपूर महल जो महान खजूरा से प्राप्त हुआ था इन महावीरों को।
तीनों तिलिस्मा में प्रवेश कर गए।
तिलिस्मा का संचालन कक्ष –
अब हमें फूचांग को ढूंढना है कि वह कहां है।
महर्षि गाजोबाजो ने तिलिस्मा को आदेश दिया –
हमें फूचांग का पता बताओ, तिलिस्मा!

संचालन कक्ष की दीवारों पर लगा विशाल चित्रपट रौशन हो गया। पूरी पृथ्वी दिखाई देने लगी उसमें।
पृथ्वी पर ढूंढ रहा है तिलिस्मा फूचांग को।
अगले ही पल उसमें नजर आया एक अन्य ग्रह–
यानि वह पृथ्वी पर नहीं है। क्योंकि अब तिलिस्मा उसे दूसरे ग्रहों पर तलाश कर रहा है।
किन्तु सभी ग्रहों की तलाशी के बाद भी तिलिस्मा को फूचांग न मिला।
निराशा भरे स्वर निकले महर्षि गाजोबाजो के मुंह से–
मुझे अफसोस है पुत्र भोकाल तिलिस्मा असमर्थ रहा। जरूर फूचांग ने खुद को किसी अदृश्य घेरे में सुरक्षित कर रखा होगा
किन्तु भोकाल के मुंह से दृढ़ शब्द निकले–
मैं अपनी मां परी रानी ओसीका को जरूर ढूंढकर रहूंगा महर्षि। अब कोई भी शक्ति मुझसे उन्हें और जुदा नहीं रख सकती।
भोकाल के इन दृढ़ शब्दों के साथ महर्षि गाजोबाजो के मस्तिष्क में कौंधा एक शानदार विचार।
परी रानी ओसीका, हां, क्यों ना हम तिलिस्मा से परी रानी ओसीका का पता लगवायें।
इसके साथ ही महर्षि गाजोबाजो ने तिलिस्म को परी रानी ओसीका की खोज का आदेश सुना दिया।
और अगले ही पल चित्रपट पर उभरने लगे दृश्य–

और वह दृश्य जिसे देखने के लिए तड़प गया था भोकाल, किन्तु एक भयानक रूप में दिख रहा था जो अब उसे -
हा हा हा फरीरानी ओसीका, जादूगर कीचड़ पलट की कैद से तुम्हें कोई आजाद ना करा सकेगा। महाबली फूचांग ने बहुत सोचसमझ के तुम्हें मेरे पास रखवाया है। हा हा हा
इससे ज्यादा देखना गंवारा न कर सकीं महाबली भोकाल की आंखें -
बस, बस, बस करें महर्षि, बस करें।
क्रोध से कांपता वह खड़ा हो गया।
महर्षि। मुझे मेरी मां के पास भेजिये शीघ्र.....तुम चल रही हो तुरीन?
जरूर!
महर्षि आजोबाजो ने तुरन्त तिलिस्मा को आदेश दिया।
अगले ही पल वे जादूगर कीचड़ पलट के सामने खड़े थे।
जादूगर कीचड़ पलट! अब ये ज्यादा देर कैद नहीं रहेंगी, क्योंकि अब इन्हें आजाद कराने आ गया है इनका पुत्र आलोप उर्फ महाबली भोकाल!
हा हा हा कीचड़ पलट के लिए ओकाल, भोकाल, आलू कचालू सब एक बराबर हैं।
मेरा पुत्र आलोप! यह-यह इतना बड़ा हो गया। ओह, पुत्र...!

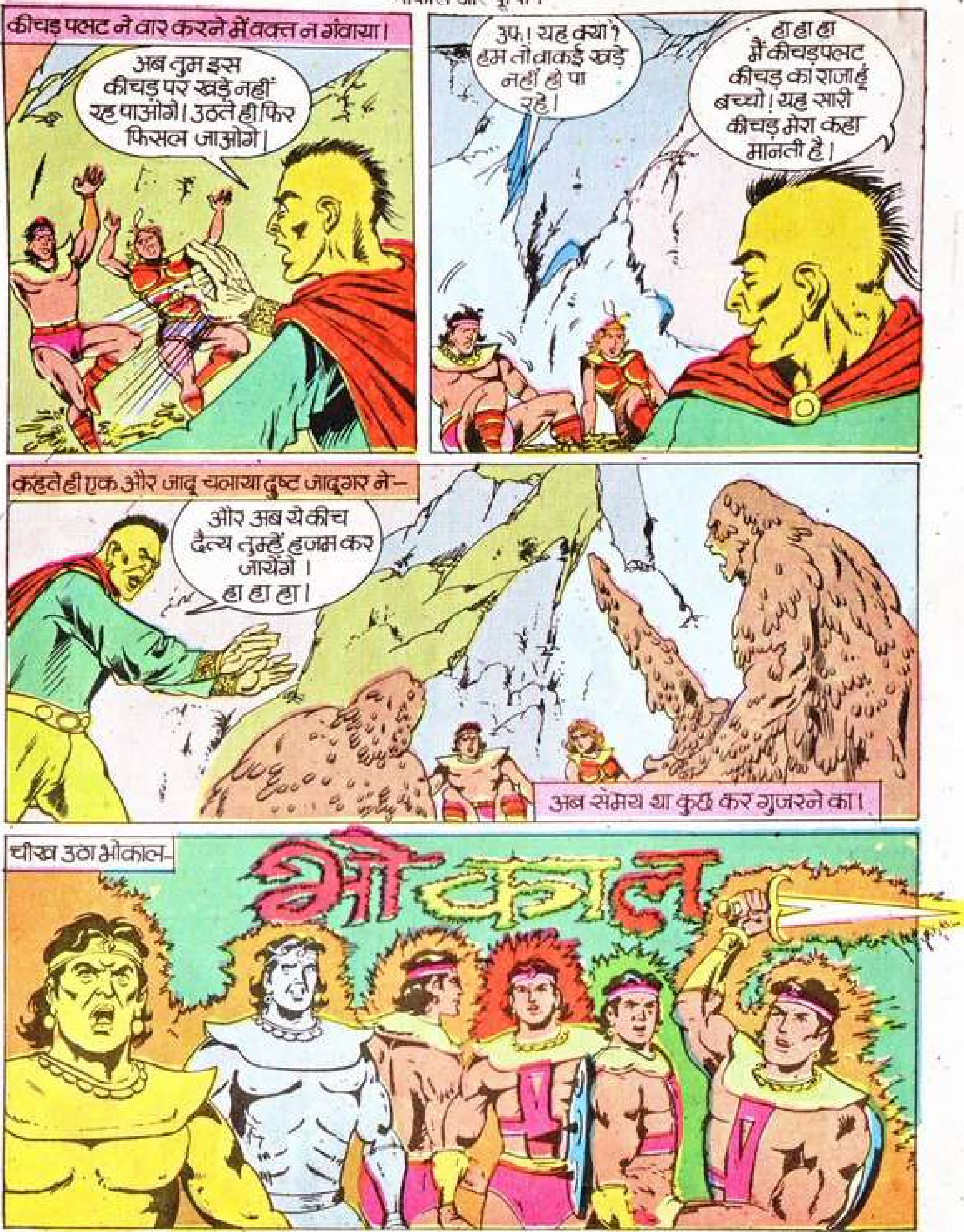
कीचड़ पलट ने वार करने में वक्त न गंवाया।
अब तुम इस कीचड़ पर खड़े नहीं रह पाओगे। उठते ही फिर फिसल जाओगे।
उफ! यह क्या? हम तो वाकई खड़े नहीं हो पा रहे।
हा हा हा मैं कीचड़पलट कीचड़ का राजा हूं बच्चो! यह सारी कीचड़ मेरा कहा मानती है।
कहते ही एक और जादू चलाया दुष्ट जादूगर ने–
और अब ये कीच दैत्य तुम्हें हजम कर जायेंगे। हा हा हा।
अब समय था कुछ कर गुजरने का।
चीख उठा भोकाल–
भोकाल

महाबली भोकाल के पांवों में तो हवा पर भी टिकने की शक्ति है।
आओ कीच दैत्यो, देखता हूं भोकाल से टकराने की शक्ति कीचड़ में है या नहीं।
तलवार के एक ही वार ने कीच दैत्यों को छितरा दिया।
यह मिली कीचड़ कीचड़ में।
और अब ऐसे ही तुम्हें भी कीचड़ में पलट दूंगा कीचड़-पलट।
हा हा हा भोकाल भोकाल कीचड़ पलट की शक्तियों से अभी तू पूरी तरह परिचित नहीं है बेटा।
कीचड़ पलट का जादू चला—
देख अब तेरी मां इस पिंजरे सहित समा जायेगी कीचड़ में।
पिंजरे को कीचड़ में समाता देख चिल्ला उठा भोकाल—
नहीं। नीच जादूगर नहीं। तू ऐसा नहीं कर सकता। मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।
तू कुछ नहीं कर सकेगा बेटा आलू-कचालू! अब यह कीचड़ का तूफान तुझे भी तेरी मां के पास परलोक ले पहुंचेगा।
आलोप! पुत्र, मुझे बचा!
उफ!

लेकिन भोकाल की शक्तियों को कम आंका था जादूगर कीचड़ पलट ने।
जय महागुरु भोकाल।
क्रोधित तलवार का एक ही वार जादूगर कीचड़ — पलट की गरदन ले उड़ा —
सांय
खच्चाक
अगले ही पल कीचड़पलट का शरीर वास्तव में ही कीचड़ पर पलट पड़ा था —
जादूगर कीचड़ पलट। मुझे अफसोस है कि तुझे तड़पा-तड़पाकर न मार सका।
जादूगर कीचड़पलट के मरते ही कीचड़ सामान्य हो गई।
तुरीन भी संभलकर पिंजरे को कीचड़ में समाने से रोकते भोकाल के पास पहुंच गई
भोकाल, मैं भी आ गई हूं। अब हम परी मां ओसीका को बचा लेंगे।
हां तुरीन, वैसे इस काम के लिये मैं खुद ही काफी हूं।
किन्तु जैसे ही वह पिंजरा कीचड़ से बाहर आया —
उफ। नहीं मां.. मां यह क्या हुआ ? तुम कहां गायब हो गईं ?
परी रानी ओसीका पिंजरे में से गायब हो चुकी थी।

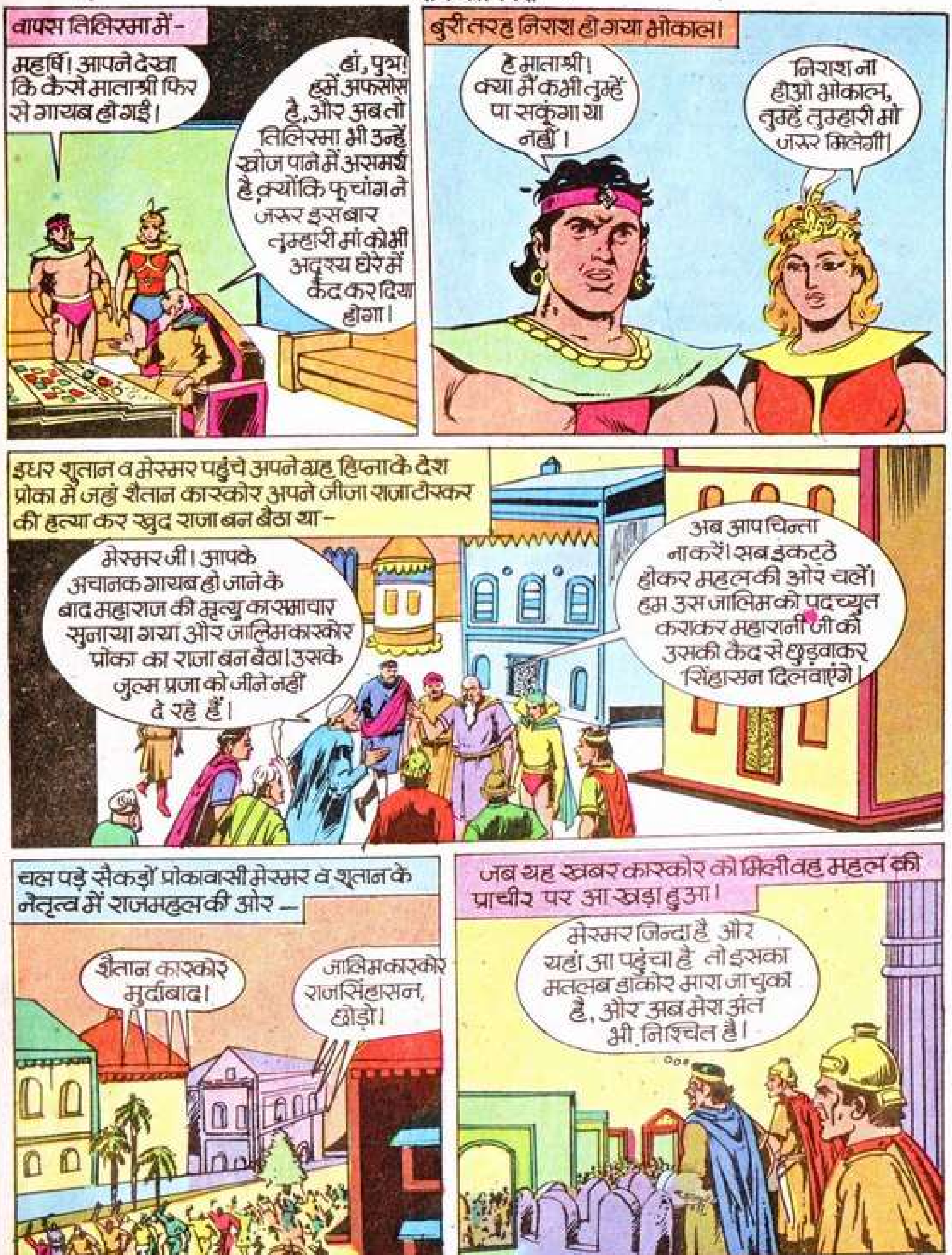
वापस तिलिस्मा में -
महर्षि! आपने देखा कि कैसे माताश्री फिर से गायब हो गई।
हां, पुत्र! हमें अफसोस है, और अब तो तिलिस्मा भी उन्हें खोज पाने में असमर्थ है, क्योंकि फूचांग ने जरूर इसबार तुम्हारी मां को भी अदृश्य घेरे में कैद कर दिया होगा।
बुरी तरह निराश हो गया भोकाल।
हे माताश्री! क्या मैं कभी तुम्हें पा सकूंगा या नहीं!
निराश ना होओ भोकाल, तुम्हें तुम्हारी मां जरूर मिलेगी।
इधर शुतान व मेस्मर पहुंचे अपने ग्रह हिप्ना के देश प्रोका में जहां शैतान कास्कोर अपने जीजा राजा टोस्कर की हत्या कर खुद राजा बन बैठा था -
मेस्मर जी। आपके अचानक गायब हो जाने के बाद महाराज की मृत्यु का समाचार सुनाया गया और जालिम कास्कोर प्रोका का राजा बन बैठा। उसके जुल्म प्रजा को जीने नहीं दे रहे हैं।
अब आप चिन्ता ना करें। सब इकट्ठे होकर महल की ओर चलें। हम उस जालिम को पदच्युत कराकर महारानी जी को उसकी कैद से छुड़वाकर सिंहासन दिलवाएंगे।
चल पड़े सैकड़ों प्रोकावासी मेस्मर व शुतान के नेतृत्व में राजमहल की ओर -
शैतान कास्कोर मुर्दाबाद!
जालिम कास्कोर राजसिंहासन, छोड़ो!
जब यह खबर कास्कोर को मिली वह महल की प्राचीर पर आ खड़ा हुआ।
मेस्मर जिन्दा है और यहां आ पहुंचा है तो इसका मतलब डाकोर मारा जा चुका है, और अब मेरा अंत भी निश्चित है।

शीघ्र ही तीर व भाले बरसाते सैनिकों तक पहुंचा मेस्मर का मानसिक संदेश।
आप लोग व्यर्थ एक ऐसे आदमी के कारण अपने ही भाइयों का कत्ल कर रहे हैं जिसने आप के पूज्य राजा टोस्कर की हत्या कर दी थी। मैं राजवैद्य मेस्मर आप लोगों को यह सलाह देता हूं कि अपने हथियार इस जुल्मी के खिलाफ इस्तेमाल करो।
अगले ही पल उस सम्मोहक आवाज के जादू में बंधे सभी सैनिक कास्कोर की तरफ मुड़ गए।
मार डालो इस जालिम को।
भाग खड़ा हुआ कास्कोर जान के भय से –
नहींSSSS मुझे मत मारो। मुझे नहीं मरना।
और अब उसकी लाश पड़ी हुई थी उस राजमहल में तीरों व भालों से बिंधी–
हत्यारा!
जालिम!
शैतान।
पापी!
फिर शीघ्र ही महारानी को कारागृह से छुड़वाकर राजसिंहासन पर बैठा दिया गया।
प्रोकावासी आपका अहसान कभी नहीं भूल सकते महान मेस्मर व प्रिय शूतान!
यह हम दोनों का कर्तव्य था महारानी साहिबा!
बोलो महारानी की जय!
जय

राजमहल में महारानी से विदा लेकर दोनों पहुंचे गुरू पासेगुर के पास।
गुरुदेव प्रणाम!
आपकी कृपा से आज मैं और मेरा पुत्र जीवित है गुरुदेव!
आयुष्मान भव पुत्रो!
पुत्र, गुरू का काम शिष्य को शिक्षा देना है। आगे शिष्य की काबलियत पर निर्भर करता है।
पुत्र शूलान! प्रोका में अब तुम्हारा कार्य पूरा हो चुका है। पृथ्वीलोक पर तुम्हारे मित्र भोकाल को इस वक्त तुम्हारी मदद की आवश्यकता है।
पिताश्री की आज्ञा हो तो मैं इसी क्षण प्रस्थान कर जाता हूं गुरुदेव!
मेस्मर ने तुरन्त हामी भरली।
शूलान ने ताबीज को हाथ में लिया और-
हे तिलिस्मा महल के तिलिस्मी ताबीज! मुझे तिलिस्मा महल में पहुंचा दे।
रोशनी के एक तीव्र झमाके के साथ शूलान हो गया गायब-
और अगले ही पल वह तिलिस्मा के संचालन कक्ष में प्रकट हुआ।
प्रणाम महर्षि!
प्रणाम मित्रो!

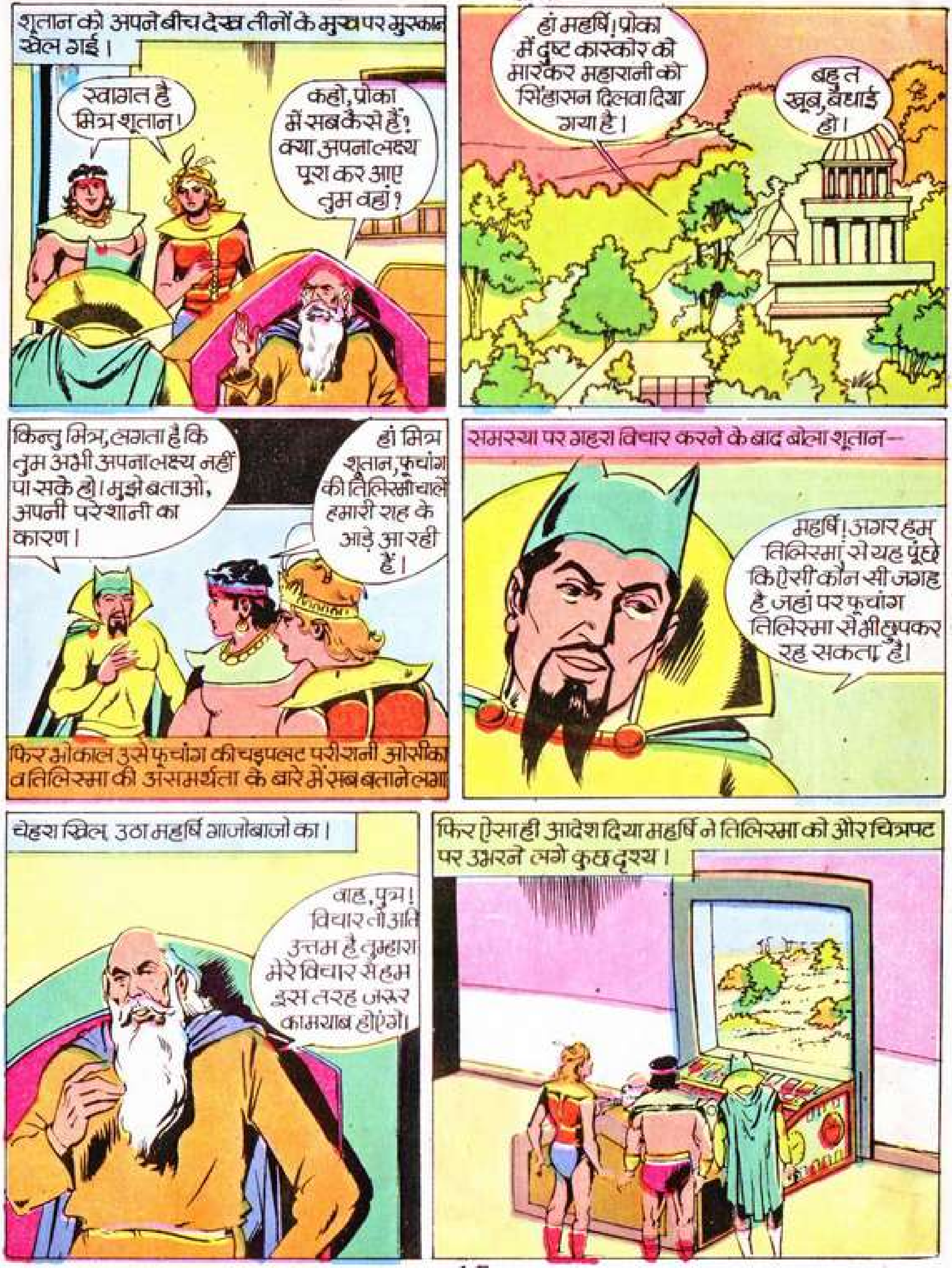
शूतान को अपने बीच देख तीनों के मुख पर मुस्कान खेल गई।
स्वागत है मित्र शूतान!
कहो, प्रोका में सब कैसे हैं? क्या अपना लक्ष्य पूरा कर आए तुम वहां?
हां महर्षि! प्रोका में दुष्ट कास्कोर को मारकर महारानी को सिंहासन दिलवा दिया गया है।
बहुत खूब, बधाई हो।
किन्तु मित्र, लगता है कि तुम अभी अपना लक्ष्य नहीं पा सके हो। मुझे बताओ, अपनी परेशानी का कारण।
हां मित्र शूतान, फूचांग की तिलिस्मी चालें हमारी राह के आड़े आ रही हैं।
फिर भोकाल उसे फूचांग की चइपलट परीरानी ओसीका व तिलिस्मा की असमर्थता के बारे में सब बताने लगा।
समस्या पर गहरा विचार करने के बाद बोला शूतान—
महर्षि! अगर हम तिलिस्मा से यह पूछें कि ऐसी कौन सी जगह है जहां पर फूचांग तिलिस्मा से भी छुपकर रह सकता है।
चेहरा खिल उठा महर्षि गाजोबाजो का।
वाह, पुत्र! विचार तो अति उत्तम है तुम्हारा मेरे विचार से हम इस तरह जरूर कामयाब होएंगे।
फिर ऐसा ही आदेश दिया महर्षि ने तिलिस्मा को और चित्रपट पर उभरने लगे कुछ दृश्य।

और जब वह चित्र रुके दिखाई दीं वे तीन गुफायें—
जरूर वह इन तीन गुफाओं में से किसी में छुपा बैठा होगा।
आप हमें वहां भेजिए महर्षि!
महर्षि ने तिलिस्मा को आदेश सुनाया।
अगले ही पल तीनों उन गुफाओं के मुहानों पर खड़े थे।
अब हम तीनों अलग-अलग गुफाओं में प्रवेश करेंगे। देखो किसके हाथों लगता है वह शैतान!
तीनों अलग-अलग गुफाओं में प्रविष्ट हो गए—
वह शैतान जरूर मुझे ही मिलेगा!
अपने पिता की हत्या का बदला मैं आज लेकर रहूंगी!
उस दुष्ट के चंगुल से आज माताश्री को छुड़वाकर ही रहूंगा!
शुलान तेजी से गुफा में बढ़ता जा रहा था।
तभी शुलान की राह रोककर खड़ा हो गया वह हास्यास्पद सा प्राणी—
त्रिनेत्री के रहते तू महाबली फूचांग तक नहीं पहुंच सकता रे मानव!
हा हा हा तो तुझे रहने को कह ही कौन रहा है, तुझे तो मैं अभी यमलोक पहुंचा दूंगा!
मुझे तो तू बाद में कहीं पहुंचाइयो मानव! पहले ज्वालादूतों से तो बच के दिखा।

शूतान के देखते ही देखते विशालकाय दैत्य जन्म लेने लगे छोटे-छोटे ज्वालामुखियों के मुहानों से
टपू टपू टपू टपू
ज्वालादूत!
ज्वालादूतो! इसे दिखाओ कि तुम्हारी शक्ति क्या है।
टपूटपू
ज्वालादूतों के प्रबल ज्वाला प्रहारों ने उछाल फेंका शूतान को।
आह! उफ!
अगले ही पल कहकहा गूंज उठा त्रीनेत्री का-
हा हा हा क्यों, क्या हुआ मानव! हो गए धराशायी या अभी और दम बाकी है!
मैं तुम्हें और तुम्हारे इन ज्वालादूतों को अभी सबक सिखाता हूं त्रीनेत्री।
हा हा हा अभी दम बाकी है तुम्हारा।
शूतान की विस्फारित नजरें मिलीं ज्वालादूतों से-
टपू टपू टपू टपू

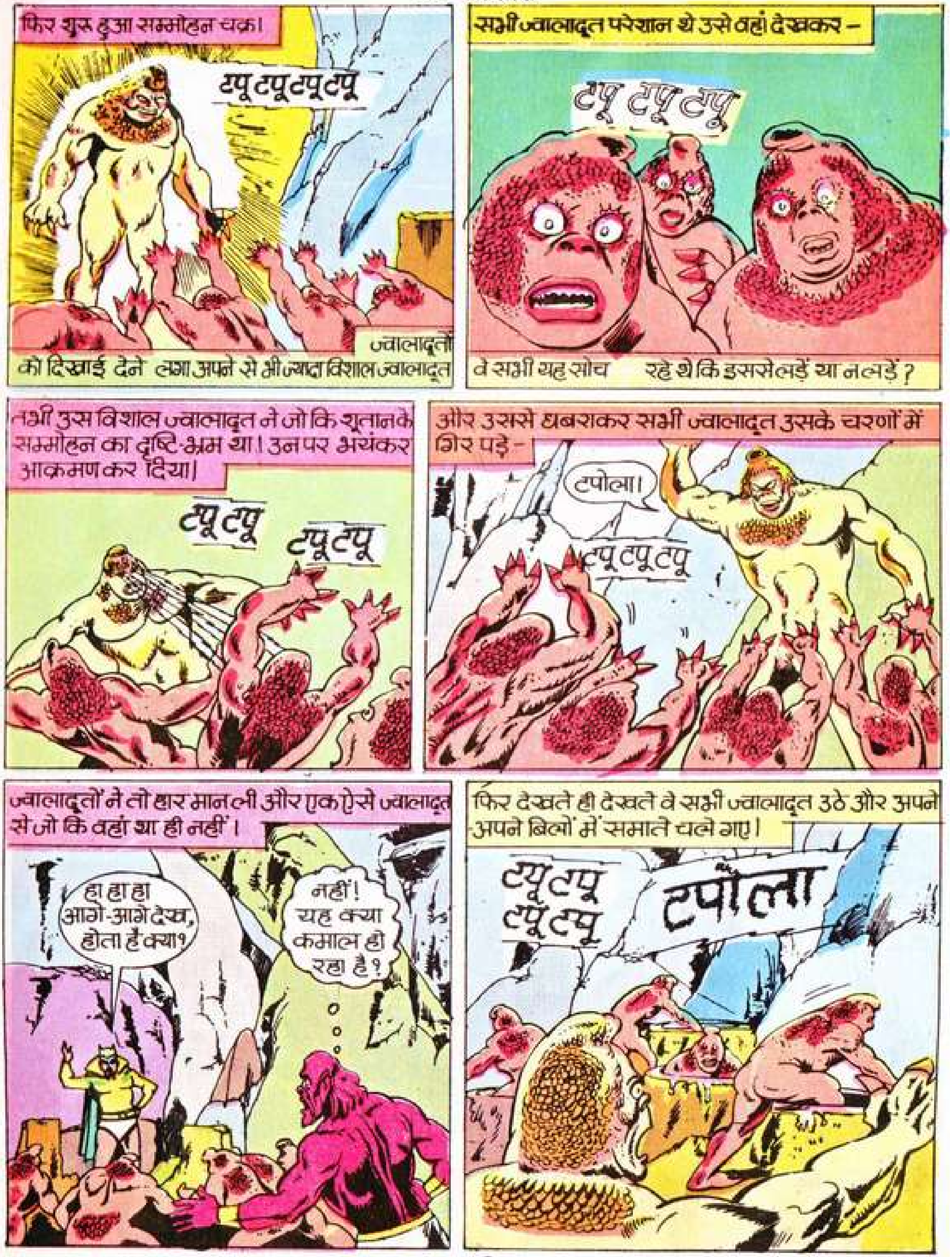

फिर शुरू हुआ सम्मोहन चक्र।
ट्पू टपू टपू टपू
ज्वालादूतों को दिखाई देने लगा अपने से भी ज्यादा विशाल ज्वालादूत
सभी ज्वालादूत परेशान थे उसे वहां देखकर –
टपू टपू टपू
वे सभी यह सोच रहे थे कि इससे लड़ें या न लड़ें?
तभी उस विशाल ज्वालादूत ने जो कि शूतान के सम्मोहन का दृष्टि-भ्रम था। उन पर भयंकर आक्रमण कर दिया।
ट्पू टपू
ट्पू टपू
और उससे घबराकर सभी ज्वालादूत उसके चरणों में गिर पड़े –
टपोला।
टपू टपू टपू
ज्वालादूतों ने तो हार मान ली और एक ऐसे ज्वालादूत से जो कि वहां था ही नहीं।
हा हा हा आगे-आगे देख, होता है क्या?
नहीं! यह क्या कमाल हो रहा है?
फिर देखते ही देखते वे सभी ज्वालादूत उठे और अपने-अपने बिलों में समाते चले गए।
ट्पू टपू ट्पू टपू
टपोला

सिर धुनता रह गया त्रीनेत्री ज्वालादूतों की इस असफलता पर और पलटकर उसने अपना खड्ग शूतान के पेट में पेवस्त कर दिया –
आह
खचाक
ले मर दुष्ट मानव! ऐसा पहली बार हुआ कि मेरे गुलाम ज्वालादूत असफल हो गए हों!
दर्द से कराहता शूतान बोला–
धोखेबाज! असावधान देख कर वार करता है। आह!
हा हा हा! मरना तो तुझे था ही पगले, सावधान भी होता तो क्या फर्क पड़ जाता।
ना जाने क्या हुआ तभी त्रीनेत्री के चेहरे के भाव एकाएक बदलने लगे।
मालिक मुझसे गलती हो गई जो आपको खड्ग मारा। जो चाहें सजा दे दें इस जुर्म की मुझे।
शूतान का सम्मोहन जो चल गया था उस पर।
अपना गला दबाकर खुद को मार दो।
जो हुक्म मालिक।
और त्रीनेत्री ने खुद को सजा देनी शुरू कर दी।
कुछ ही क्षणों बाद वह जमीन पर मृत पड़ा था।
हम्फ, आह! यह तो गया, पर अब मेरा क्या होगा?
अत्याधिक पीड़ा दिखाई पड़ रही थी उसके चेहरे पर।
वह वहीं बैठ गया और अपना मस्तिष्क केन्द्रित करने लगा।

और मानसिक शक्ति ने कुछ किया तो –
असीम मानसिक शक्ति ने उस खड्ग को जख्म सहित गायब कर दिया।
अगले ही पल स्वस्थ हो शूतान आगे बढ़ चला।
कोई भी शक्ति अब मुझे फूचांग तक पहुंचने से नहीं रोक सकती।
तुरीन भी एक गुफा में बढ़ी जा रही थी –
वह दरिंदा जिसने इतने वर्षों मेरी मां को राजमहल से दूर रखा।
वह दरिंदा जिसने मेरी मां को विधवा के वस्त्र पहनने पर मजबूर कर दिया।
इतने गहरे विचारों में मग्न थी वह
...कि उसे सामने खड़ी मुसीबत भी दिखाई ना दी।
मैं उसे जीवित नहीं छोड़ूंगी! उफ! यह क्या?
बड़ा भयंकर सा स्वर निकला उस दैत्य के मुंह से।
गुफा पीपली से तो छूटकर दिखा पहले मानवी!

गुफा पीपली के बंधनों में जकड़ गई तुरीन।
उफ! गुफा पीपली।
हाँ, गुफा-पीपली मेरी ये बाँहें अब तेरे शरीर का सारा खून चूस जाएंगी।
अगले ही पल तुरीन की भी उंगलियों से फूटीं प्रलयंकारी किरणें।
और अगर मैं तेरे कंधे ही उखाड़ फेंकूं तो!
आह्ह
गुफा पीपली की दोनों भुजाओं ने उसके शरीर का साथ छोड़ दिया।
स्वतंत्र हो गई तुरीन गुफा पीपली के बंधनों से, किन्तु गुफा पीपली भी कोई कम ना निकला।
लड़खड़ा गई तुरीन उसके इस वार से
... और वह खाई की तरफ गिरने लगी।
म्याऊ-
उफ.. चल कपाला
उसके साथ ही कपाला भी कूद पड़ी उसे बचाने के लिए।
अगले ही पल कपाला का आकार बढ़ने लगा-
उफ! अगर मैं कपाला की पीठ पर सवार ना हो पाई तो मुझे इस अग्नि में गिरने से कोई ना बचा सकेगा।
और तुरीन भी शीघ्रता से उस पर सवार हो गई।
शाबास कपाला!
अब वे संभल चुके थे। कपाला उसे लेकर उड़ चली।

गुफा पीपली को संभलने का तनिक मौका ना मिला।
भयंकर चीख से गूंज उठी गुफा।
अगले ही क्षण आग व धुएं में विलीन हो गया गुफा पीपली का शरीर।
अपनी राह के सभी कांटे इसी तरह उखाड़ फेंकने हैं मुझे।
भोकाल जिस गुफा में प्रविष्ट हुआ उसमें उसे आगे बढ़ने के लिए ही बहुत पापड़ बेलने पड़ रहे थे।
उफ! पूरी गुफा में यह अत्यन्त चिकना तरल पदार्थ फैला हुआ है! एक-एक कदम बढ़ाना मुश्किल हो रहा है।
तभी अचानक –
उफ! फिसला
और फिसलता हुआ जा गिरा वह एक गड्ढे में।
भोकालsss

समय रहते वह भोकाल बन गया।
महागुरू भोकाल मेरी हर पल रक्षा करते हैं।
और अगले ही क्षण वह गड्ढे से बाहर निकल गुफा में आगे बढ़ रहा था।
अब वह चिकनाहट भी समाप्त हो गई है और यह गुफा के छिद्रों से निकलती ये विचित्र पूंछें कैसी हैं?
तभी वे पूंछें आगे बढ़ीं और -
उफ यह क्या?
किन्तु बलशाली भोकाल के समक्ष वह समस्या दो पल से ज्यादा ना टिक सकी।
क्यों अपनी जान के ग्राहक बने हो मुझसे टकराकर!
जल्दी ही वह आजाद हो गया उन पूंछों के बंधनों से।
अपनी तलवार कब्जा कर वह उन पूंछों को काटता तेजी से आगे बढ़ता चला गया।
कट कट
खचाक
गुफा का वह मोड़ मुड़ते ही सभी पूंछें हो गईं गायब।
इन छोटी-छोटी मुसीबतों से फूचांग भोकाल को डराना चाहता है।

तभी एक भयंकर आवाज से गूंज उठी गुफा।
यह जोरदार आवाज कैसी?
खड़ खड़ धड़ाम
और अगले ही पल गुफा की छत से निकली नुकीली चट्टानें अपनी जगह छोड़ने लगीं।
उफ!
कुछ पल बाद जब यह सब शान्त हुआ।
तुरीन, शैतान, तुम यहां?
इसका मतलब तीनों गुफाएं इसी मैदान में निकलती हैं।
हां, लगता तो यही है।
यानि फूचांग यहीं-कहीं होगा।
तभी वह दीवार चटकने लगी।
यह क्या?

सामने नजर आया फूचांग -
हाहाहा मौत की गुफा में स्वागत है मित्रो!
फिर नजर आयी परीरानी ओसीका।
लो अपनी मां से भी मिल लो तुम भोकाल, आखरी बार। हाहाहा!
नहीं, नीच हत्यारे। इन्हें छोड़ दे।
कहकहा लगाया शैतान ने।
छोड़ दूंगा, लेकिन पहले मुझ से युध्द में जीत तो लो!
तभी बीच में कूद पड़ी तुरीन और उसने फूचांग पर किया किरणों का जबरदस्त हमला।
तुझे तो ऐसी भयंकर मृत्यु मिलेगी शैतान कि दुनिया याद रखेगी!
ओह! तुरीन उर्फ राजकुमारी सोफिया चलो पहले तुमसे ही निबट लूं!
और फूचांग के इस भयंकर हमले को सह ना पाई तुरीन।
पलटकर गिरी वह और बेहोश हो गई।

क्रोध में अंधा हुआ बीच में कूद पड़ा शूतान।
हत्यारे! शूतान तुझे धूल चटायेगा।
ओह! सम्मोहन सम्राट शूतान! बहुत घमण्ड है तुम्हें अपनी सम्मोहिनी विद्या का।
फूचांग ने किया शूतान पर अपने सम्मोहन का जादू।
और शूतान वह जिस मुद्रा में फूचांग पर झपट रहा था उसी मुद्रा में जड़वत हो गया।
अपने साथियों की ऐसी हालत ने बुरी तरह भड़का दिया भोकाल को।
नीच आदमी अब मैं तुझे और जीवित नहीं छोड़ूंगा!
अच्छा!
देखते हैं तू मुझसे लड़ेगा पहले या इनसे।

अगले ही पल फूचांग के सामने खड़े थे दो अन्य भोकाल।
जाओ पहलवानो! जरा इसे बताओ कि अगर अपनी जैसी ही शक्तिवाले दो पहलवानों से टकराना पड़ जाए तो क्या हश्र होता है।
और वे दोनों भोकाल भिड़ गए महाबली भोकाल से।
ये नकली भोकाल बेशक शारीरिक शक्ति में मुझसे बराबर हैं।...
...किन्तु इनके पास महाबली भोकाल की असली तलवार व ढाल तो नहीं है ना।
इस तरह शीघ्र ही उसने अपने प्रतिरूप नकली भोकालों को समाप्त कर दिया।
खच्चाक
फूचांग की तरफ बढ़ा वह –
फूचांग, तू किसी भी शैतानी चालों के बाद भी बच ना सकेगा।
अच्छा तो यह ले।
और फूचांग का कद बढ़ना आरम्भ हो गया।
हा हा हा अब देख तमाशा।
जल्दी ही उसका सिर गुफा की छत छूने लगा।

फूचॉम का हाथ बढ़ा भोकाल की तरफ –
हुम्म।
तलवार के एक ही वार ने हाथ की सारी उंगलियां काट डालीं।
तुम्हारे कद से भी विशाल ताकत रखती है यह तलवार मूर्ख!
फूचॉम ने पासा पलटा। उसका मुंह ऐसे फूल गया जैसे मुंह में कुछ भरा हुआ हो।
अगले ही पल उसका मुंह खुला और उसमें से निकले वे विशाल अष्टभुज।
भिड़ गए वे चारों अष्टभुज भोकाल से।
यह खेल अब जल्दी समाप्त करना होगा। माताश्री बहुत पीड़ा सह रही हैं।
और वे अष्टभुज भी भोकाल की जोड़ के साबित नहीं हो पा रहे थे।
खच्च कच खच्चाक
भोकाल की शानदार तलवार बाजी ने चारों अष्टभुजों को परलोक पहुंचा दिया।

फूचांग जो वापस अपने सामान्य आकार में आ चुका था।
भोकाल, जो काम कोई और शक्ति ना कर सकी अब सम्मोहन शक्ति से संभव होगा।
अगले ही पल भोकाल उसके सम्मोहन जाल में कैद हो गया
मुझे अपनी ही तलवार से अपनी गर्दन काटनी है।
हा हा हा फंस गया बच्चू।
चीख उठी परीरानी –
नहीं पुत्र, यह-यह क्या कर रहे हो?
किन्तु, भोकाल को कोई स्वर नहीं सुनाई दे रहा था।
तभी बेहोशी टूटी तुरीन की।
उफ! यह क्या हो रहा है? रुको रुको भोकाल!
उसे ध्यान आ गए महर्षि गाजोबाजो के शब्द।
पुत्री! प्रहारा की जादुई शक्ति असीमित है।
अगले ही पल प्रहारा का वार हुआ आत्महत्या करते भोकाल पर।
इसके साथ ही भोकाल से फूचांग के सम्मोहन का असर टूट गया।
क्रोधित फूचांग पलटा तुरीन की ओर –
ओह तो प्रहारा की शक्ति से वाकिफ हो तुम! तो यानी अब वाकई मेरा खेल खत्म!

नृशंस हत्यारे ने जादुई प्रहार किया उस बंधन पर जो परी रानी को रोके हुए था अग्नि के लपटों के ऊपर –
अब मैं तुम्हें यह नुकसान तो पहुंचा ही सकता हूं।
नहींss
नहींss
एक तरफ ओकाल ने फुर्ती के साथ बचाया परी रानी को
पुत्र।
मांss
तो दूसरी तरफ तुरीन ने फूचांग पर किया प्रहार का ज्वालामयी वार
शैतान ले मर।
आह! महान फूचांग तेरा अंत कैसे हो गया? आह!
बुरी तरह जलने लगा फूचांग का शरीर।
और जलकर काला कोयले समान बन गया।
ऐसा ही हश्र होना था इस शैतान का।
किन्तु यह तो मेरा शिकार था तुरीन!
कोई बात नहीं पुत्र, अच्छा हुआ वह मारा गया।
शैतान
को भी होश आ चुका था उसका अंतिम हश्र देखने के लिए
चारों बढ़ चलें गुफा से बाहर की ओर –
माताश्री! अब आप मुझे छोड़कर तो नहीं जाएंगी कभी!
न...
और अचानक।
आ गया वह जलजला।
नहीं मैं अपने बच्चों को नहीं मरने दूंगी। उफ! आ आह आह--
बीसियों तीर छलनी कर गए परी रानी ओसीका का शरीर।

कोयला बना फूचांग का शरीर खड़ा हुआ बाण वर्षा कर रहा था।
नहीं हत्यारे, दुष्ट नीच, पापी तूने क्या किया!
और फूचांग का अंत कर दिया भोकाल की तलवार ने।
कितने वर्षों बाद मुझे मेरी मां मिली और तूने उसे फिर मुझसे जुदा कर दिया दरिंदे!
पिघलता चला गया फूचांग का शरीर।
परीरानी चीत्कार उठी।
पुत्र भोकाल, आजा। आके मेरी छाती से लग जा। जल्दी कर। मेरे पास समय नहीं है।
समाता चला गया पुत्र मां की पुकारती हुई बांहों में।
मां! ओह मां! तुम फिर मुझे अकेला छोड़ कर जा रही हो।
और अब वे स्वर सुनने के लिए परीरानी जीवित ना बची थी।
विकास नगर पहुंच कर परीरानी ओसीका का पूर्ण सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।
मैं आलोप, उर्फ भोकाल, कसम खाता हूं अपनी मां की कि मानवता के दुश्मन हर शैतान का मैं कट्टर दुश्मन हूं आज से!
समाप्त

राज
कॉमिक्स
संख्या 340
अतिक्रूर और
गजोरख
इस कॉमिक्स के साथ अतिक्रूर का एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त

1569

अतिक्रूर और गजोख

लेखक : संजय गुप्ता   चित्रांकन : कदम स्टूडिओ   संपादन : मनीष चन्द्र गुप्त

फूचांग का खात्मा करने के बाद अब तुरीन व गाजोबाजो का पृथ्वी पर रुकने का कोई मकसद न रह गया था।
महाराज विकासमोहन हमें विदा दें। अब हम ओसाक ग्रह प्रस्थान करेंगे।
महर्षि गाजोबाजो! कृपया कुछ दिन और हमें मेहमाननवाजी का मौका दें।
महाराज! अभी हमें ओसाक में राजकुमारी तुरीन की माता रानी रसीया को भी खोजना है और...
... ओसाक ग्रह का छिन्न-भिन्न हो चुका राज्य व राजकाज भी संभाल-ना है हमें।
ठीक है महर्षि! जब आपका जाना इतना जरूरी है तो हम आपको और नहीं रोकेंगे। किन्तु ओसाक जाने के बाद विकास-नगर को न भूल जाइयेगा और दोबारा जल्दी ही दर्शन दीजियेगा।
राजा विकासमोहन से विदा ली महर्षि व तुरीन ने –
महाराज! हम जल्दी ही वापस आएंगे।
रथ दौड़ पड़ा तिलिस्मा की ओर –
दीदी! आप हमें छोड़कर क्यों जा रही हैं। हमें आपकी बहुत याद आयेगी।
हमें भी अपनी माताश्री बहुत याद आती हैं श्वेता! इसीलिए जाना जरूरी है।

तिलिस्मा में उनका स्वागत किया भोकाल व शूतान ने-
आइये महर्षि! तिलिस्मा में स्वागत है आपका!
कहो वत्स! सब कुछ ठीक-ठाक तो है ना?
खेला दौड़कर भोकाल की गोद में चढ़ गई।
चाचा… आप कहिए ना दीदी को कि वे ना जाएं।
आपकी दीदी हमारा कहा नहीं मानेंगी खेला!
तिलिस्मा में प्रविष्ट हुए वे।
भोकाल की निगाहों से टकराईं तुरीन की निगाहें-
कहो तो सही एक बार!
कहा टालती ना होगी?
निगाहों की वार्ता का भला क्या निर्णय निकलता।
तभी तुरीन को टोका महर्षि गाजोबाजो ने-
चलो राजकुमारी! हम जल्दी ही फिर वापस आएंगे।
हां, हां, चलिए महर्षि!
चाहकर भी कुछ ना कह सके दोनों एक-दूसरे को।
तिलिस्मा के संचालन कक्ष में पहुंचे सभी-
भोकाल और शूतान! तिलिस्मा का संचालन अब तुम्हारे हवाले है!
हम पूरा ध्यान रखेंगे यहां। महर्षि, आप बेफिक्र हो जायें।
भोकाल आ बैठा तिलिस्मा के संचालन सिंहासन पर-
महर्षि गाजोबाजो व राजकुमारी तुरीन को ओसाक ग्रह भेजो तिलिस्मा!
मैं जल्दी ही लौटूंगी भोकाल!
मुझे तुम्हारी बहुत याद आयेगी तुरीन!

तिलिस्मा ने शीघ्र आदेश का पालन किया-
तब मैं तुमसे अपने दिल की बात कहूंगा।
मैं भी कुछ कहूंगी।
उनके जाने के बाद-
चाचा! हम राजमहल जायेंगे। हमारा मन उदास हो रहा है यहां।
हां बिटिया, चलते हैं अभी।
तभी तिलिस्मा का चित्रपट रौशन हो उठा-
यह क्या? लगता है तिलिस्मा कुछ खास दृश्य दिखाना चाहता है।
हां!
अजीबोगरीब दृश्य दिखने लगे उस पर-
सरपालू ग्रह के राजा ममदा का नमस्कार दोस्तो।
ही ही ही
मैं और मेरे सेवक गोगा, मन्ना आ रहे हैं पृथ्वी पर कब्जा करने।
हू हू
तिलिस्मी ओलम्पाक के विजेताओं को चुनौती है। रोक सकें तो रोक लें हमें।

महाबली, महाशक्तिशाली, महावीर कहलाने वालों को देखती हूं कैसे रोक पाएंगे वे मुझे?
मेरा यह संदेश सभी पृथ्वीवासियों को सुनाई दे रहा है। सभी राजाओं को आदेश है कि वे आत्मसमर्पण कर दें और उसका सूचक एक श्वेत ध्वज अपने राजमहलों पर फहरा दें।
अन्यथा जिस महल पर कल तक ध्वज ना फहराया गया मिला तो उसे मन्ना की ताकत ध्वस्त कर देगी। धूल में मिल जाएगा वह महल इस तरह। ही ही ही।
कोई प्राणी जीवित ना बच पाया उस राजमहल का–
पूरी पृथ्वी पर हाहाकार मचा दिया दादा, मन्ना, गोगा की उस आकाशवाणी ने–
तुम्हें क्या लगता है शूलान! इनकी बातों में कुछ दम है या...
इसका फैसला तो सामना होने पर ही हो पायेगा।
फिर उन्होंने विकास नगर की ओर प्रस्थान किया–
देखें महाराज, विकासमोहन ने क्या फैसला किया आत्मसमर्पण अथवा विरोध।
दादा, मन्ना, गोगा कैसे विचित्र नाम हैं यह।

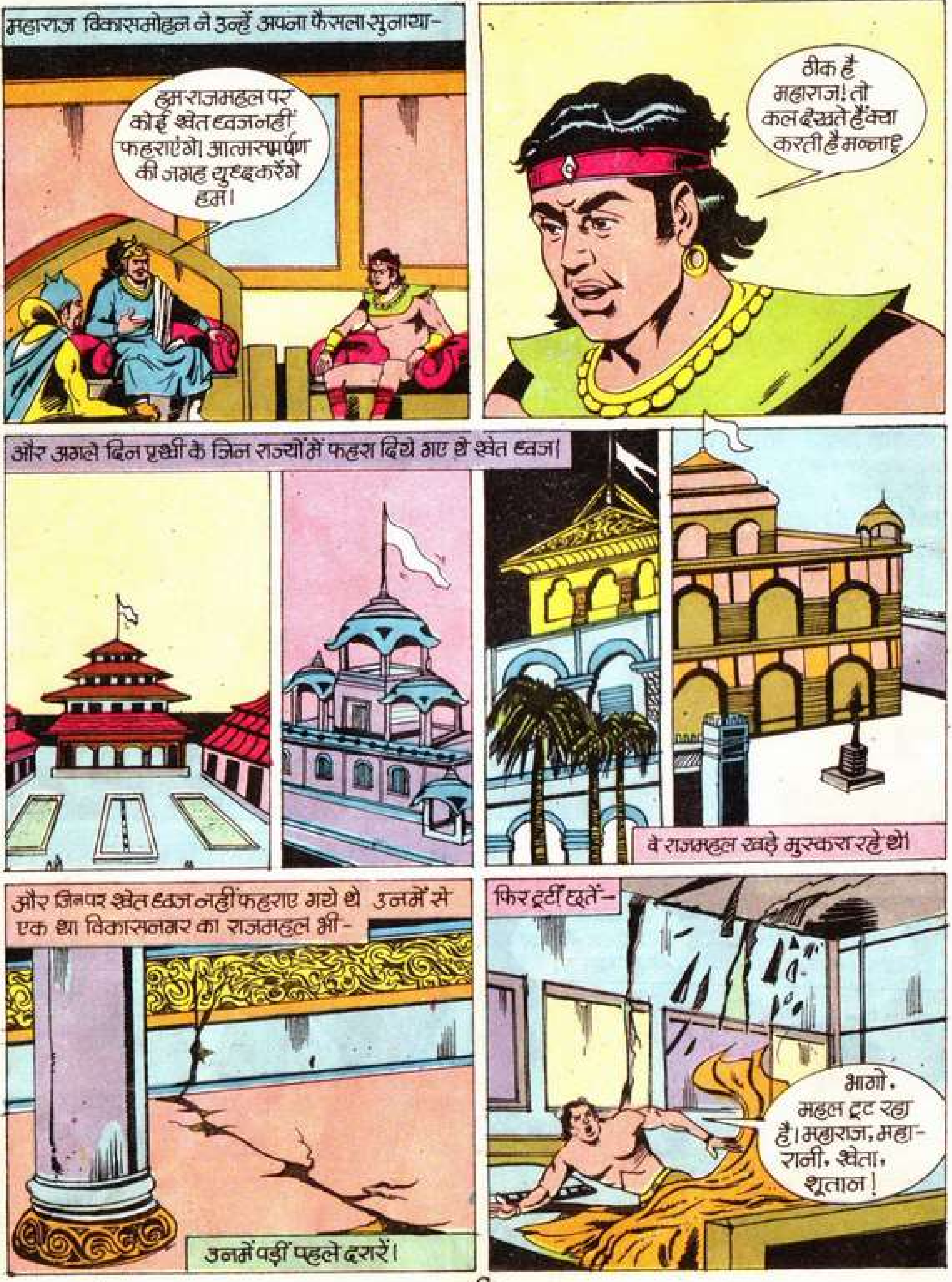
महाराज विकासमोहन ने उन्हें अपना फैसला सुनाया-
हम राजमहल पर कोई श्वेत ध्वज नहीं फहराएंगे! आत्मसमर्पण की जगह युद्ध करेंगे हम।
ठीक है महाराज! तो कल देखते हैं क्या करती है मन्नाइ!
और अगले दिन पृथ्वी के जिन राज्यों में फहरा दिये गए थे श्वेत ध्वज।
वे राजमहल खड़े मुस्करा रहे थे।
और जिनपर श्वेत ध्वज नहीं फहराए गये थे उनमें से एक था विकासनगर का राजमहल भी-
उनमें पड़ीं पहले दरारें।
फिर टूटीं छतें-
भागो, महल टूट रहा है। महाराज, महारानी, श्वेता, शूतान!

धड़ धड़
आईई SSS
धोऽऽकाऽऽल

अब उसे तलाश थी श्वेता की-
श्वेता
ढूंढ ही लिया उसने आखिर श्वेता को-
श्वेता, श्वेता, क्या हुआ तुझे? ठीक तो है ना!
आह!
उसे उठाकर खण्डहर बन चुके महल से बाहर निकला वह-
महाराज, शैतान, महारानी ठीक हैं आप?
मेरी बच्ची!
हम समय रहते बाहर निकल गए थे। भोकाल, तुम तो ठीक हो ना।
हां महाराज, कृपया श्वेता के लिये शीघ्र चिकित्सा की व्यवस्था कराएं।
तुरंत ही राजवैद्य पहुंच गए वहां-
कुछ वक्त लगेगा इसे स्वस्थ होने में।

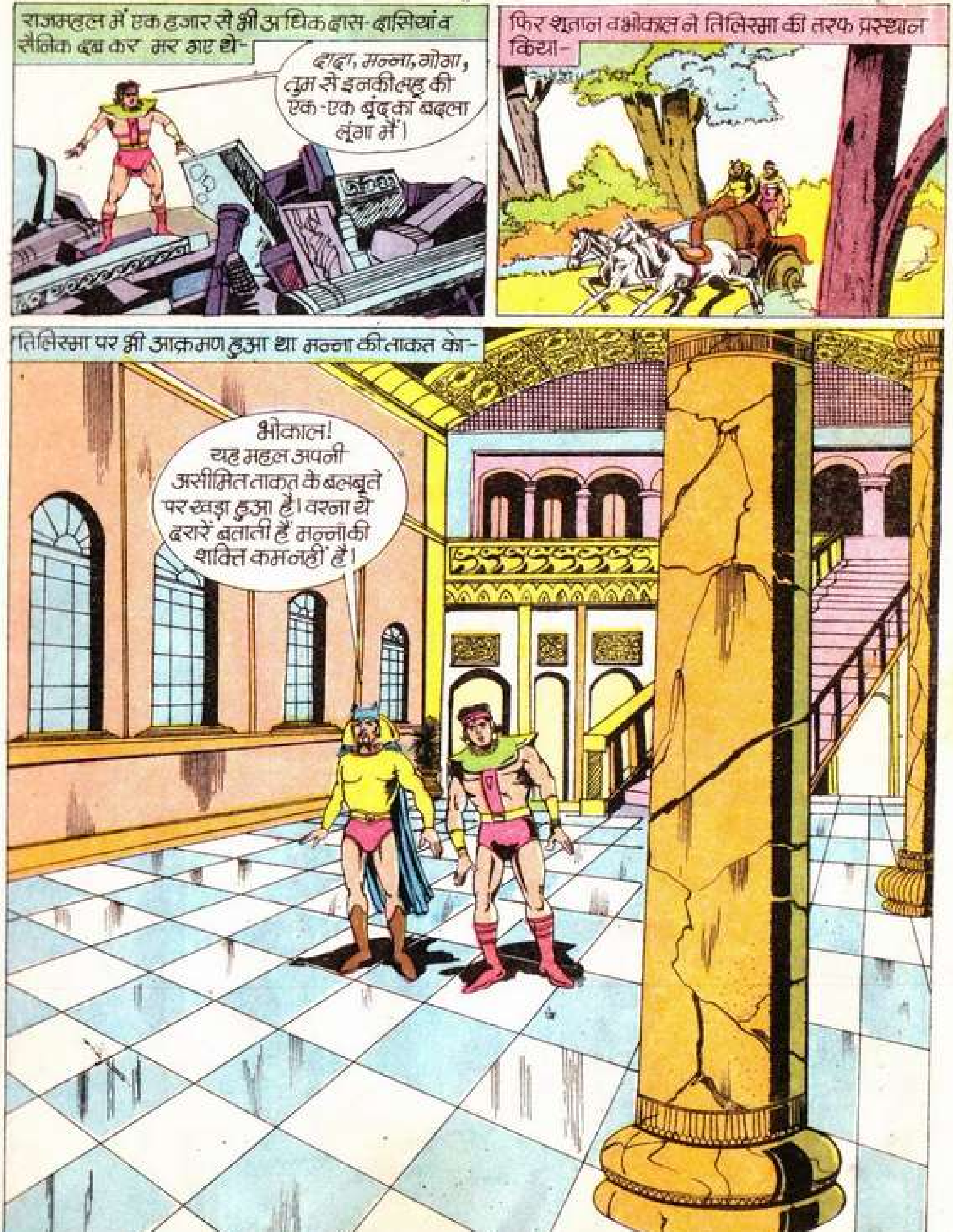
राजमहल में एक हजार से भी अधिक दास-दासियां व सैनिक दब कर मर गए थे-
दादा, मन्ना, गोगा, तुम से इनकी लहू की एक-एक बूंद का बदला लूंगा मैं।
फिर शैतान व भोकाल ने तिलिस्मा की तरफ प्रस्थान किया-
तिलिस्मा पर भी आक्रमण हुआ था मन्ना की ताकत का-
भोकाल! यह महल अपनी असीमित ताकत के बलबूते पर खड़ा हुआ है। वरना ये दरारें बताती हैं मन्ना की शक्ति कम नहीं है।

तिलिस्मा में उन्हें पता चला-
पृथ्वी के चार सौ देशों ने आत्मसमर्पण किया और बाकी तीन हजार देशों के राजमहल ध्वस्त कर दिए मन्ना ने।
चार लाख से भी अधिक लोग मारे गए इन मलबे बन गये राजमहलों में।
तभी चित्रपट पर नजर आई मन्ना-
महाबली भोकाल! जो मैंने कहा, कर दिखाया। अब कल से पृथ्वी के हर राज्य में दादा का प्रतिनिधि राज करेगा। ही ही ही।
और तुम्हारा यह महल तिलिस्मा! इसमें पड़ी दरारें धीरे-धीरे बढ़ती जायेंगी और तब यह भी मिल जायेगा रसातल में। ही ही ही।
क्रोध अपनी सभी सीमाओं को पार कर चुका था भोकाल का-
मन्ना! तेरी तमन्ना कभी पूरी ना होने देगा भोकाल।
तभी चित्रपट में से सजीव होकर निकल आई मन्ना भोकाल के सामने-
ही ही ही! ले मैं आ गई! रोक, रोक के दिखा मुझे अब।

तभी तिलिस्मा की सुरक्षा किरणें टकराईं उसके शरीर से-
ही ही ही
छीडड़
किन्तु, हंसती हुई मन्ना की हंसी तक ना रोक पाईं वे सुरक्षा किरणें।
ही ही ही! अब मैं ध्वस्त करूंगी तिलिस्मा को।
मन्ना के हाथ उठे-
प्रलयंकारी किरणो! तबाह कर दो तिलिस्मा को।
प्रलयंकारी किरणें छूट निकलीं अपने लक्ष्य को तबाह करने--
... कि बीच में आ गया भोकाल-
छिड्डी
बिजली सी गति से परिवर्तन हुआ उसमें-
भोकाल

तबाही की देवी बनी मन्ना की प्रलयंकारी शक्ति के सामने उठ गई थी भोकाल की प्रलयंकारी तलवार—
अब दिखाओ शक्ति अपनी उन किरणों की जिनके बल पर पत्थर और गारे के बने महलों को ध्वस्त करके...
... तुम पृथ्वी पर विजय का सपना देख रही हो मन्ना!
मन्ना के तीखे बोल व किरणें एक साथ छूटे—
ये किरणें! फौलाद का सीना चीर देती हैं! तेरी तलवार क्या सामना करेगी इनका!
तलवार से टकराईं किरणें, जबरदस्त झटका लगा भोकाल को—
किन्तु ना तो तलवार डगमगाई और ना ही भोकाल डगमगाया।
विस्फारित नेत्रों से घूरती रह गई मन्ना उसे—
यह उस लोक की तलवार है मन्ना, जिस लोक के केवल एक प्राणी ने तलवार उठाई है और परीलोक का वह इकलौता प्राणी हूं मैं!
भोकाल की तलवार विद्युत गति से नीचे आई—
खचाक
चार लाख लोगों की मौत का बदला है यह!
... और पृथ्वी विजय का स्वप्न लिये खड़ी मन्ना का शरीर काटती चली गई।

दो भागों में विभक्त हुआ शरीर आ पड़ा फर्श पर
हिस्sss
चिड्ड्sss
और शीघ्र ही तिलिस्मा की सुरक्षा किरणों ने शरीर को घेरकर राख में तब्दील कर दिया।
चैन की सांस ली दोनों ने-
चलो! यह तो खुद ही मरने चली आई थी यहां।
हां, किन्तु अब दादा व गोगा इसकी मौत का जरूर बदला लेंगे।
तिलिस्मा ने भोकाल का शुक्रिया अदा किया-
धन्यवाद महाबली भोकाल! आज आपके कारण यह महल तबाह होने से बच पाया है। अब मैं इसकी दरारें भर लूंगा।
इसमें धन्यवाद कैसा, यह तो हमारा फर्ज था।
तभी बोला शूतान-
भोकाल! अतिक्रूर ने अब तक कोई खबर नहीं दी। क्या वह गजोख को मार चुका होगा?
तिलिस्मा हमें भुजंग देश के दृश्य दिखाएगा।
उन्होंने तिलिस्मा को आदेश दिया भुजंग देश के हाल दिखाने का।
भुजंग देश जहां के राजा न्याय प्रिय की हत्या कर दी थी गजोख नाम के एक राक्षस ने-
भुजंग देश का राजा बनेगा अब गजोख राजकुमार विश्वप्रिय के रूप में।
अतिक्रूर के पिता कपालफोड़ को इस कत्ल के जुर्म में फंसा दिया था उसने।
मेरी हत्या केवल दंताक से ही हो सकती है जो कि तिलिस्मी ओलम्पाक में मेरे भाई गजानन के पास है।

और वह दंताक अब हथिया चुका था अतिक्रूर-
अपने पिता पर हुए जुल्मों का गिन-गिन कर बदला लूंगा तुझसे गजोख!
भुजंग देश में प्रकट होते ही अतिक्रूर को देखने को मिला एक आश्चर्यजनक दृश्य-
हाए! हर तरफ गजमानव ही गजमानव! सभी भुजंग देश वासी कहां चले गए?
तभी उस इकलौते मनुष्य पर पड़ी गजमानवों की दृष्टि-
मनुष्य! मनुष्य! पकड़ो, मारो!
यह तो अतिक्रूर है!
मार डालो इसे।
खून उबल पड़े सभी के। मारने दौड़े सभी अतिक्रूर को।
अतिक्रूर अति आश्चर्य अति दुविधा में फंसा आवाक खड़ा देखता रह गया।
यह भुजंग देश ही है या और कोई लोक है?
खून के प्यासे हो गए थे सभी अतिक्रूर को देखते ही।
है तो यह भुजंग देश ही. किन्तु यह सब मुझे कैसे जानते हैं और मेरे दुश्मन क्यों बन बैठे हैं?
जानलेवा आक्रमणों का जवाब दिया अतिक्रूर ने-
यह तो मुझे मार ही देना चाहता था!
आह!
दंताक ने पेट चीर दिया उस गजमानव का।

और अन्तिम चीख के साथ ही आश्चर्यजनक रूप में परिवर्तन हुआ गजमानव में -
अरे! यह तो मनुष्य बन गया। तो... क्या यह सभी गजमानव भुजंग देशवासी ही हैं! फिर तो यह जरूर गजोख की कारस्तानी है।
फिर तो मैं जिस भी गजमानव को मारूंगा वह कोई भुजंग देशवासी ही होगा।
अजब परिस्थितियों में फंस गया था अतिक्रूर।
शक्ति सम्पन्न होने के बावजूद भी भागना पड़ रहा था उसे-
तो इन्हें मरने से बचाने के लिए मुझे भागना होगा यहां से।
षड्यंत्र में फंसे अपने देशवासियों को कैसे मार सकता था वह।
छुपता-छुपाता वह पहुंच ही गया राजमहल में-
उठ खड़ा हो गजोख! देख तेरी मौत का परवाना यह दंताक लेकर आ पहुंचा है अतिक्रूर!
अतिक्रूर की घनगरज सी ललकार सुन...
...उठ खड़ा हुआ गजोख-
अब आ ही गये हो तो भुजंग देश से लाश ही उठेगी तुम्हारी।
लाश उसकी उठेगी गजोख! जिसने भुजंग देशवासियों की दुर्गति की है!
दुर्गति कैसी? गजमानव बनकर, मेरी प्रजा बनकर खुश हैं सभी। हा हा हा।
ठठाकर हंस रहा था गजोख, दंताक का जरा भी भय नहीं लग रहा था उसे।

अतिक्रूर ने दंताक गजोख के पेट में घोंप दिया।
अब राजा ही नहीं रहेगा तो प्रजा कैसे खुश रहेगी तेरी?
आह!
खचाक
दो विस्मयकारी काम एक साथ हुए।
गजोख मनुष्य रूप में परिवर्तित हो गया और दंताक पर आकर पड़ा एक रस्सी का फंदा-
और अगले ही पल।
दंताक हवा में उड़ता आ पहुंचा उन सशक्त हाथों में-
गजानन! गजोख!
हा हा हा
बेचारा च चाच
मेरे भाई गजानन ने यहां पहुंचकर मुझे पहले ही आगाह कर दिया था कि तू दंताक पा चुका है इस-लिये हमने यह चाल चली है। अब... दंताक तो गया तेरे हाथ से.. तो समझ ले कि...
...तेरी जिंदगी भी गई तेरे शरीर से अब।
अतिक्रूर ने भी तलवार उठा ली थी।
तलवार से तलवार टकरा गई एक राक्षस और एक महाबली की-
मेरे बाजुओं की शक्ति दंताक से किसी कदर कम नहीं है गजोख!
इस बात से तेरा भाई गजानन भली-भांति परिचित है।

अतिक्रूर की तलवार टूट कर दूर जा पड़ी -
टनाक टन तड़
अभी पता चल जाएगा कि किन भुजाओं में ज्यादा ताकत है।
मौका ना दिया गजोख ने उसे दूसरा कोई हथियार हथियाने का -
सांय
चीरती चली आ रही थी तलवार अतिक्रूर की हथेलियों को, किन्तु फिर भी -
तलवार से कटने के लिये नहीं बनी अतिक्रूर की गर्दन।
तड़ाक
मायावी गजोख के हाथों में आ गई एक और तलवार, फिर गजोख और गजानन दोनों बढ़े अतिक्रूर की तरफ।
काल के दूत नजर आ रहे थे दोनों।
दोनों हथियार अतिक्रूर के लहू से अपनी प्यास बुझाते, किन्तु बीच में आ गये वे दो हाथ -
नहीं ऽऽऽऽई
थाम लिए जिन्होंने तलवार व दंताक के प्यासे मुंह -
और फिर सुनाई दी वह जानी-पहचानी आवाज।
जय महागुरु भोकाल
महाबली भोकाल अपने दोस्त व दरिंदों के बीच आ खड़ा हुआ था।

मौत मित्र को मारने से पहले मर जाएगी भोकाल सेटकराकर।
मित्र वह जो वक्त पर काम आए।
भोकाल की तलवार चमकी-
खड़ाक
पहले तो तू बच गया था रे और इसी मित्र ने दिया था तुझे अभयदान भी।
दंताक निकला गजानन के हाथों से।
और जा पहुंचा अतिक्रूर की गिरफ्त में-
धन्यवाद दोस्त! तुम अपने शिकार को संभालो। मैं अपना शिकार संभालता हूं।
भोकाल की तलवार की चकाचौंध से चुंधियां गई थीं गजानन की आंखें।
यह गई तेरी सूंड।
आह!
और दंताक के प्रहारों से त्रस्त था गजोरव-
नहीं ईऽऽ
क्यों? क्यों नहीं!
गिड़गिड़ाने लगा वह अब अपनी मौत की कलम को अतिक्रूर के हाथों में देख-
मुझे मत मारो। मैं छोड़ जाऊंगा भुजंगदेश। माफ कर दो मुझे। हाय!
क्यों अब तेरी प्रजा दुखी नहीं होगी क्या?

इधर भोकाल ने तोड़ा गजानन का एक सींग-
हाए! यह हुआ मैं अधमरा!
और इधर गजोख के तोड़े अतिक्रूर ने दांत-
हाए!
तेरी चीखें सुनकर मेरे दिल को बहुत शान्ति मिल रही है गजोख!
इधर भोकाल ने तोड़ दिया गजानन का दूसरा सींग भी-
हा
तेरी जान, तेरे सींगों में थी ना गजानन! ले अब तू मरा।
सींग नीचे गिरे गजानन के और आत्मा ऊपर चली उसकी।
अतिक्रूर ने भी गजोख का पेट दंताक से चीर के बदले की आग शांत की।
अब मैं अपने बापू को कारागार से छुड़ाऊंगा।
खेल समाप्त हो गया उस दरिंदे गजोख का।
दोनों मित्र चल पड़े कारागार की ओर-
तिलिस्मा पर मित्र जब मैंने वशुताल ने तुम्हें मुसीबत में फंसे देखा तो मैं तुरन्त यहां के लिये चल पड़ा।
उन दोनों ने धोखे से मुझसे दंताक छीन लिया था।
बहुत ही भावनात्मक मिलन था पिता व पुत्र का-
बापू! मैं तुम्हारा पुत्र अतीक उस हत्यारे गजोख को मार आया हूं।
पुत्र! मुझे विश्वास था तू जरूर आएगा।

फिर राजकुमार विश्वप्रिय को भी कारागृह से आजाद करा लिया गया।
राजकुमार! भुजंग देश की बागडोर आप संभालो।
किन शब्दों में मैं आप सबका शुक्रिया अदा करूं।
राजकुमार विश्वप्रिय को भुजंगदेश का राजसिंहासन सौंप दिया गया-
महाराज विश्वप्रिय जिन्दाबाद
मजोख के मरते ही भुजंगदेशवासी अपने पूर्व रूप में लौट आये।
सभी औपचारिकताओं के बाद बोले महाराज विश्वप्रिय
माननीय श्री कपालफोड़ को विशेष सलाहकार व अतिक्रूर को सेनापति पद पेश करता हूं मैं।
ध्यान से सुना सबने।
फिर बोला अतिक्रूर-
महाराज! पिताजी को आपकी पेशकश स्वीकार्य है, किन्तु मैं अभी सेनापति पद स्वीकार नहीं कर सकता। क्योंकि मुझे तुरन्त अपने मित्र के साथ जाना है।
फिर तिलिस्मी ताबीजों की मदद से-
हे तिलिस्मी ताबीज! हमें तिलिस्मा पहुंचा दे।
प्रस्थान कर गये वे तिलिस्मा की ओर।
अगले ही पल वे शैतान के सामने तिलिस्मा में मौजूद थे-
स्वागत है मित्रो, और मजोख, मजानल पर विजय की बधाई भी स्वीकार करो।

सरपालू ग्रह में पहुंची मन्ना की मौत की खबर–
मन्ना की हत्या पृथ्वीलोक पर! भोकाल के हाथों तिलिस्मा में!
फुफकार उठा सरपालू का राजा दादा–
पृथ्वी पर कब्जे से पहले करूंगा तिलिस्मा को तबाह और भोकाल की हत्या।
दादा के वफादार सेवक शोगा की भुजाएं व लहू भी उबले पड़ रहे थे–
महाराज! आज्ञा करें। शोगा अभी अपनी तिलंगी पर टांग लाएगा भोकाल का सिर।
उसकी तलवार तिलंगी तो उससे भी ज्यादा बेकाबू होती दिख रही थी।
नहीं; पहले आयेंगे सरपालू सैनिक तिलिस्मा को तबाह करने।
तिलिस्मा में गूंज उठी खतरे की उस तेज घन्टी की आवाज ने निद्रा में लीन तीनों योद्धाओं को झकझोर दिया–
टन टन टन टन टन टन
?
?
?

तीनों पहुंचे तिलिस्मा के संचालन कक्ष में-
क्या आफत आ पड़ी है अब?
पता करो तिलिस्मा से।
यह खतरे की घंटी क्यों बजी?
तिलिस्मा का चित्रपट रौशन हुआ-
उफ! नहीं इतनी भयंकर।
यह किसका कार्य हो सकता है?
इससे बचना असंभव है।
तिलिस्मा के चारों तरफ जंगल में लपलपा रही थीं अग्नि की भयंकर लपटें-
और लपलपा रही थी भयंकर हंसी सरपालू सैनिकों के मुंहों से-
हा हा हा! बहुत खुश होगा राजा दादा। तिलिस्मा की इस तबाही को देख।
परेशानी व चिन्ता में डूबे तीनों को कुछ सूझ न रहा था।
हमें क्या करना चाहिए?
हम क्या कर सकते हैं?
यह आग कैसे बुझेगी?
तभी तिलिस्मा के गुम्बद से निकलने लगा बादल का एक विशाल टुकड़ा।

जंगल में फैली आग पर छा गया बादल का वह टुकड़ा-
और फिर उसमें से बरसने लगा पानी-
तिलिस्मा ने अपनी तिलिस्मी शक्ति से जंगल व महल को फुंकने से बचा लिया।
अरे वाह! बुझ गई सरपालु सैनिकों की लगाई आग।
वाह! तिलिस्मा वाह!
अब क्या करेगा राजा दादा?
तभी नजर आए सरपालु सैनिक तिलिस्मा की ओर बढ़ते-
हमला
हमला
हमला
तिलिस्मा की तरफ बढ़ते उनके कदमों को रोका अतिक्रूर ने।
रुक जाओ सरपालुओं! अन्यथा जान से हाथ धो बैठोगे।
उन्होंने सुना...
... और फिर चल पड़े...
हमला हमला हमला हमला
नहीं, मानोगे ऐसे तुम!
दंताक को उठाया उसने...

और अकेला ही टूट पड़ा सरपालू सैनिकों पर–
आह
मरने ही आए लगते हो यहां तुम!
दंताक का कहर बरस पड़ा सरपालू सैनिकों पर–
आह
मारने का शौक नहीं है मुझे तो छोड़ने की आदत भी नहीं है।
तिलिस्मा में वह भयंकर लड़ाई देख रहे थे भोकाल और शैतान–
तुमने सच कहा था भोकाल इन सरपालुओं के लिए अतिक्रूर अकेला ही काफी है।
चालीस सरपालुओं को ठिकाने लगाने में चालीस पल ही लगे अतिक्रूर को।
दिलों में क्रूरता रखने वालो, याद रखना अतिक्रूर नाम है मेरा।
फिर वापिस लौट पड़ा वह तिलिस्मा की ओर।
गोभा की हुंकार को अब निकलने से न रोका राजा दादा ने–
सरपालू सैनिकों को आज तक किसी ने खरोंच तक ना पहुंचाई थी राजा दादा, आज वही सरपालू सैनिक निष्प्राण पड़े हैं।
मैं जा रहा हूं राजा दादा! अब आप नहीं रोकेंगे मुझे। तीन सिर और एक महल लेकर आ रहा हूं मैं।

तिलिस्मा की ओर बढ़ते गोगा की राह रोकी अतिक्रूर ने-
तू खुद को क्या समझकर शेरों की मांद की ओर बढ़ा आ रहा है रे!
चींटियों की बांबी से ज्यादा हैसियत नहीं है इस शेरों की मांद की गोगा के लिये।
हथियारों पर जम गये दोनों के हाथ।
अतिक्रूर फुफकारा-
लगता है तूने दंताक द्वारा सरपालुओं की तबाही नहीं देखी!
तिलंगी नाम है इसका! यह समझाएगी तबाही का मतलब।
दोनों हथियार बल आजमाइश को उड़ चले।
भयंकर ध्वनि उत्पन्न हुई-
बराबर शक्ति के साबित हुए दोनों ही-
धरती में जा गड़े दोनों हथियार।
निहत्थे ही दोनों टकरा गये एक-दूसरे से-
अतिक्रूर पुत्र कपालफोड़ तुझे धरती में गाड़ देगा।
राजा दादा की कसम गोगा की छाती में भरे फौलाद से टकराकर चूर-चूर ना हो जाए तो कहना।
दोनों महाबलशाली एक भुजंग देश काली एक सरपालू बहका...
...गोगा ने चखा पहली बार ताकतवर टक्कर का स्वाद तो अतिक्रूर भी समझ गया था कि अगर दोबारा गोगा से टकराया तो सिर फट पड़ेगा उसका
उफ
आह
दो विशाल पेड़ उखाड़ लिए दोनों ने -
आह
उम्फ
जीत दोनों के लिए जरूरी थी।

हार दोनों को मंजूर न थी-
गोगा से अब तू रहम की भीख भी नहीं मांग सकता।
भीख तो मैंने भूखे रहकर नहीं मांगी पगले!
तभी एक बिजली चमकी और अतिक्रूर के पैरों के नीचे की जमीन चटक गई-
नहीं; यह क्या? धोखा।
हावी हो गया गोगा उस पर-
यह जरूर राजा दादा ने मेरी मदद की होगी।
जब तक संभलने का प्रयास करता।
वह बेहोश हो चुका था-
टक्कर का ताकतवर टकराया था पहली बार इसके साथ धोखा पसन्द नहीं आया मुझे पर युद्ध में सब जायज है।
तिलंगी निकाल जैसे ही वह पलटा-
क्रोऽऽकाऽऽल

धोखे से मित्र को हराया है तूने गोगा!
तेरी विजय तुझसे छीन लेगा भोकाल!
कतई मौका ना मिल पा रहा था गोगा को।
क्रोधवश पगला सा उठा था भोकाल भी-
तिलंगी काट देनेवाली यह महागुरु भोकाल की तलवार है।
विद्युत समा गई थी मानो उसमें।
अगले वार ने हर लिए प्राण गोगा के
बूंद-बूंद पर लिखा है काटने वाले का नाम।
आंखों में हैरानी लिए ही कूच कर गया गोगा इस जहां से।
राजा दादा की मनस्थिति नाकाबिले बयान थी।
धरती पर बसने वाले ये चूहे अपने आपको सूरमा समझ बैठे हैं शायद।
तिलिस्मा में-
अब वह शांत नहीं बैठेगा।
हां, वह जरूर आक्रमण करेगा।

तभी प्रकट हुआ राजा दादा –
ठीक समझ रहे हो तुम! आ गया हूं मैं अब मेरे लिए यह सिंहासन छोड़कर खड़े हो जाओ।
भुजाएं फड़क उठी दोनों की।
दोनों बढ़े उसकी ओर –
बैठाएंगे जरूर तुझे लेकिन चिता पर।
सरपालू भी ना पहुंच पाएगा अब तो तू।
एकाएक आक्रामक हो उठा दादा –
गोगा व मन्ना मेरे अदने सेवक ही थे लड़को! उनकी शक्ति से ना मिला-न कर बैठना मेरा।
बहुत कटु अनुभव हुआ था जमीन पर पड़े भोकाल व शैतान को –
अब मैं पृथ्वी विजय की अपनी इच्छा पूरी करूंगा।
आराम से चलता हुआ।
दादा तिलिस्मा के संचालन सिंहासन पर आसीन हो गया –
और तुम्हें बनना होगा गोगा व मन्ना की जगह मेरा सेवक।
हा हा हा।

होश संभाला भोकाल ने-
भोकाल
महाबली भोकाल बढ़ चला दादा की ओर।
दादा के हाथों से निकला एक भाला-
सांय
काट फेंका महाबली भोकाल ने उसे।
दादा के हाथ से निकली एक गदा-
सांय
काट फेंका महाबली भोकाल ने उसे।
एक के बाद एक कई हथियार फेंके दादा ने-
यह तो बढ़ा ही चला आ रहा है।
किन्तु सभी को काट फेंका महाबली भोकाल ने
गर्दन पर टिका दी भोकाल ने तलवार-
उठ खड़ा हो नीच! यह सिंहासन तेरे जैसे पापियों, हत्यारों के लिये नहीं है।
राजा दादा की शक्तियां चूक गई थीं क्या?

नहीं ... यकायक विशाल रूप धर लिया राजा दादा ने—
ले उठ खड़ा हुआ राजा दादा। लेकिन दादा जब खड़ा होता है तो लाशें गिरती हैं बच्चे!
भाले से टकराई भोकाल की तलवार
और गलता चला गया भाला—
उड़ा भोकाल—
लाशें गिराना भोकाल की तलवार का काम है!
और दादा की गर्दन चाक कर दी उसने—
धड़ से जमीन पर आ पड़ी उसकी सिर कटी लाश—
धरती पर से आज समाप्त हुआ आतंक दादा मन्ना और गोगा का।
फिर विकासनगर के नवनिर्मित राजमहल के प्रांगण में रख दी गई दादा व गोगा की लाशें—
शूतान, भोकाल व अतिक्रूर ने अपनी जानों पर खेलकर इन्हें मारा है, अब पृथ्वी के सभी राजाओं के दर्शन के लिये यह लाशें यहां रखी गई हैं।
• समाप्त •

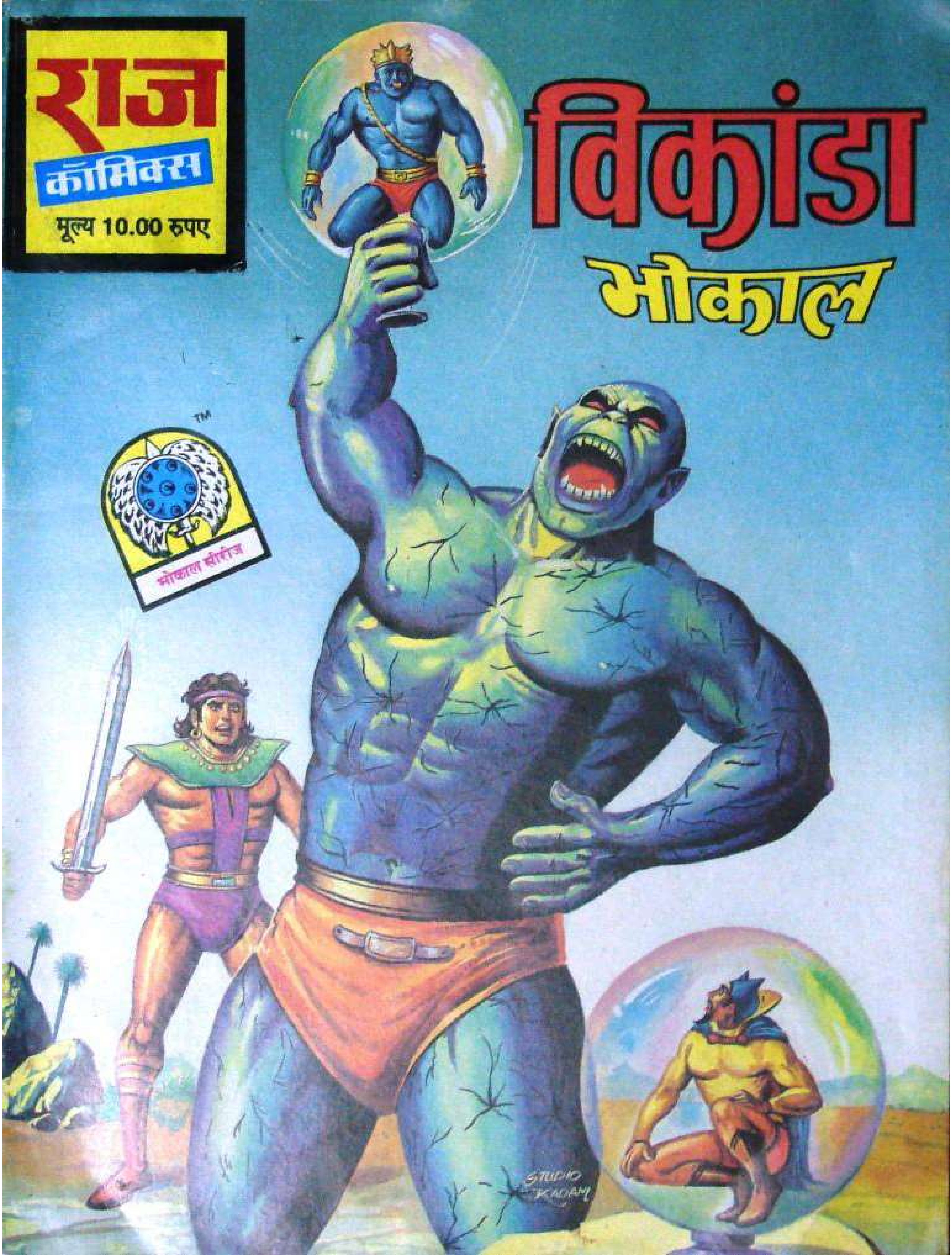
राज
कॉमिक्स
मूल्य 10.00 रुपए
विकांडा
भोकाल
TM
भोकाल सीरीज
STUDIO KADAM

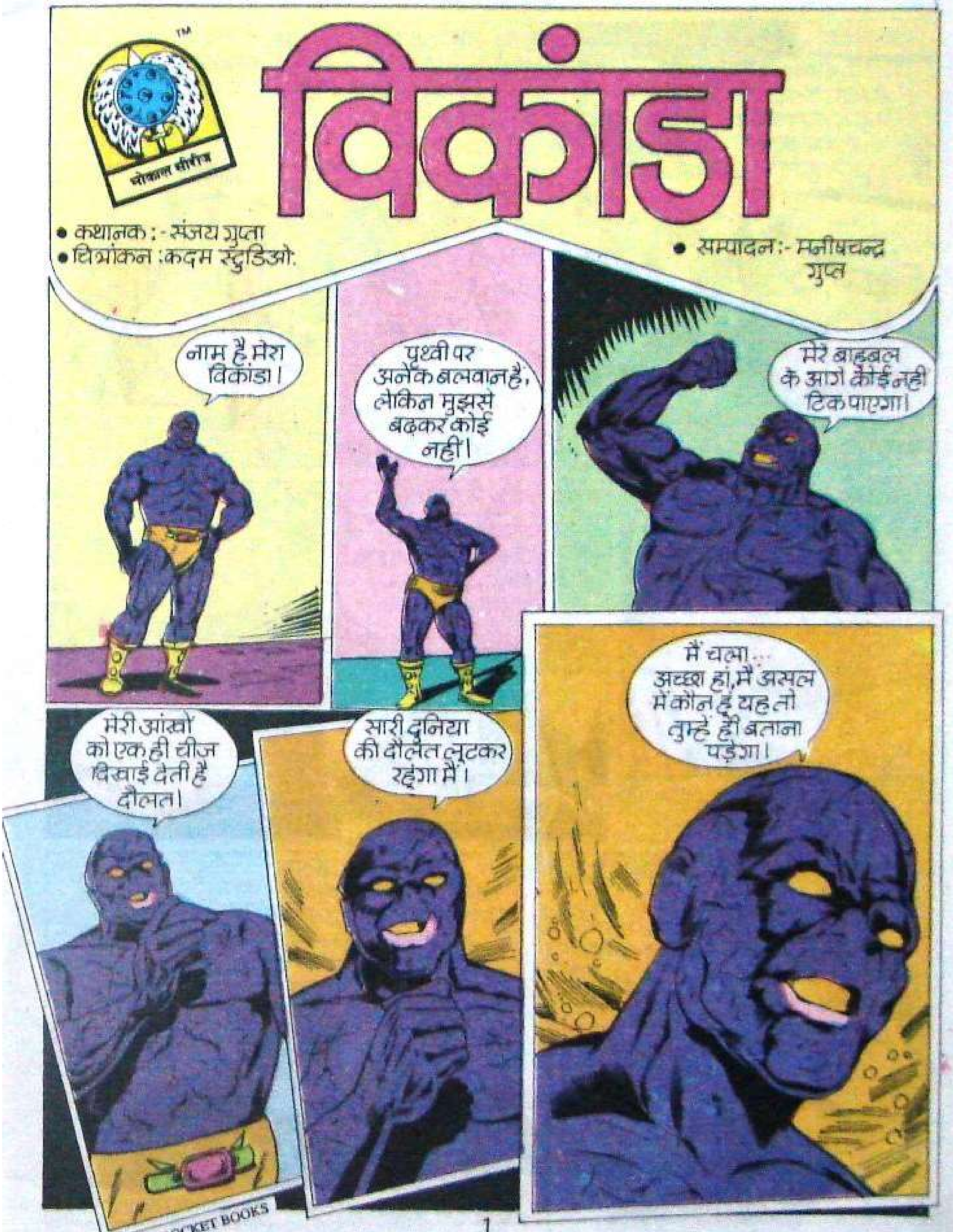

© RAJA POCKET BOOKS

विकास नगर-
यह नायाब हीरा अयोध्या के महाराज रामचन्द्र के राजमुकुट पर लगा हुआ था।
वाह!
महाराज विकासमोहन ने अपने विशाल खजाने की प्रदर्शनी लगाई हुई है।
बड़े-बड़े सम्राट आश्चर्यचकित थे राजा विकासमोहन के खजाने के उन अमूल्य जवाहरातों को देख-
यह दुर्लभ मोती भगवान विष्णु की माला का है।
अद्वितीय है आपका खजाना विकासमोहन!
खुशी से फूला न समा रहा था राजा विकासमोहन ये तारीफें सुनकर।
किन्तु उसकी इस खुशी पर जबरदस्त गाज पड़ी तब जबकि-
यह कर्णफूल! हाए! यह महाराज रावण का कर्णफूल कहां गायब हो गया?
उस चोरी ने हिलाकर रख दिया विकासमोहन को।
महल के एक विशेष कक्ष में-
सेनापति प्रवीणसिंह! इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के रहते प्रदर्शनी स्थल से कर्णफूल कैसे गायब हो गया?
महाराज! बड़े-बड़े सम्राटों, महाराजाओं व विश्वस्त सैनिकों के अलावा...
...प्रदर्शनी-स्थल में कोई प्रविष्ट नहीं हुआ। वहां मौजूद प्रत्येक सैनिक की जांच मैंने की है और देश-विदेश के मेहमान राजाओं की तो जांच हम कर भी नहीं सकते।
हां, प्रवीणसिंह! वे लोग तो खुद हमारे निमंत्रण पर विकासनगर आए हैं उनकी जांच करना तो उनकी तौहीन होगी।
कोई भी हल न निकल सका उस समस्या का।

अगले दिन प्रदर्शनी स्थल पर सुरक्षा व्यवस्था और मजबूत कर दी गई—
बावजूद उसके—
आज फिर चोरी हुई और इस बार गायब हुई रत्नजड़ित सोने की म्यान।
समस्या की गम्भीरता को देखते हुए बुलाया गया भोकाल, शूतान व अतिक्रूर को—
आपने हमारी परेशानी सुनी महाबली भोकाल! अब बताओ हम क्या करें?
अब प्रदर्शनी स्थल पर हम पहरा देंगे महाराज!
अगली सुबह प्रदर्शनी-स्थल पर मौजूद थे तीनों जांबाज—
इन्हीं राजाओं में से कोई चोर होगा।
मेरी तेज निगाहों के सामने से कोई चोर बचकर निकल जाए असम्भव।

आज कोई चोरी नहीं होगी।
तीनों को पक्का विश्वास था।
किन्तु तभी गूंज उठे राजा विकासमोहन के हैरत भरे स्वर-
चोरी हो गया। चोरी हो गया। आज तो सोने का पुतला ही चोरी हो गया।
तीनों उस तरफ लपके-
आज तुम्हारे रहते वह मानव कद का स्वर्ण पुतला ही गायब हो गया।
असम्भव।
!
!!
ऐसा कैसे हो गया महाराज! हमारी नजरें एक पल भी नहीं चूकी थीं।
और फिर सबके रहते चोर वृहदकाय पुतला ले कैसे गया?
फिर पूरा प्रदर्शनीस्थल ढूंढ मारा गया, किन्तु
कहीं नहीं है वह।
वह पुतला महाराज कंस के मित्र, हमारे पूर्वज राजा भीमसेन को खुद राजा कंस ने भेंट किया था।
व्यथित हो उठे राजा विकासमोहन।
हमें दुख इस बात का है कि कोई चोर हमारे रहते राजमहल में चोरी कर रहा है तो राज्य का क्या होगा?

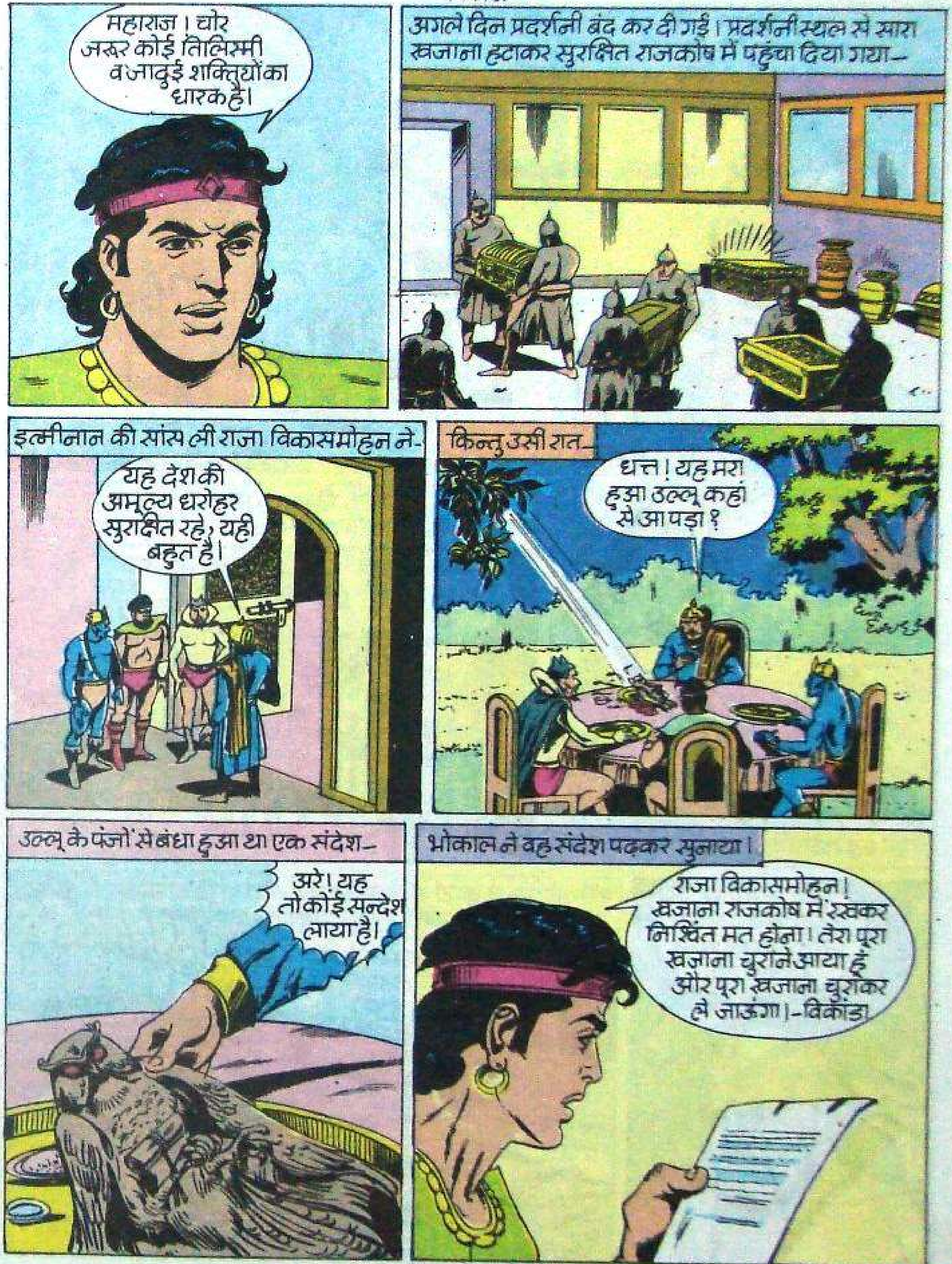
महाराज! चोर जरूर कोई तिलिस्मी व जादुई शक्तियों का धारक है।
अगले दिन प्रदर्शनी बंद कर दी गई। प्रदर्शनी स्थल से सारा खजाना हटाकर सुरक्षित राजकोष में पहुंचा दिया गया–
इत्मीनान की सांस ली राजा विकासमोहन ने–
यह देश की अमूल्य धरोहर सुरक्षित रहे, यही बहुत है।
किन्तु उसी रात–
धत्त! यह मरा हुआ उल्लू कहां से आ पड़ा?
उल्लू के पंजों से बंधा हुआ था एक संदेश–
अरे! यह तो कोई सन्देश लाया है।
भोकाल ने वह संदेश पढ़कर सुनाया।
राजा विकासमोहन! खजाना राजकोष में रखकर निश्चिंत मत होना। तेरा पूरा खजाना चुराने आया हूं और पूरा खजाना चुराकर ले जाऊंगा।–विकांडा

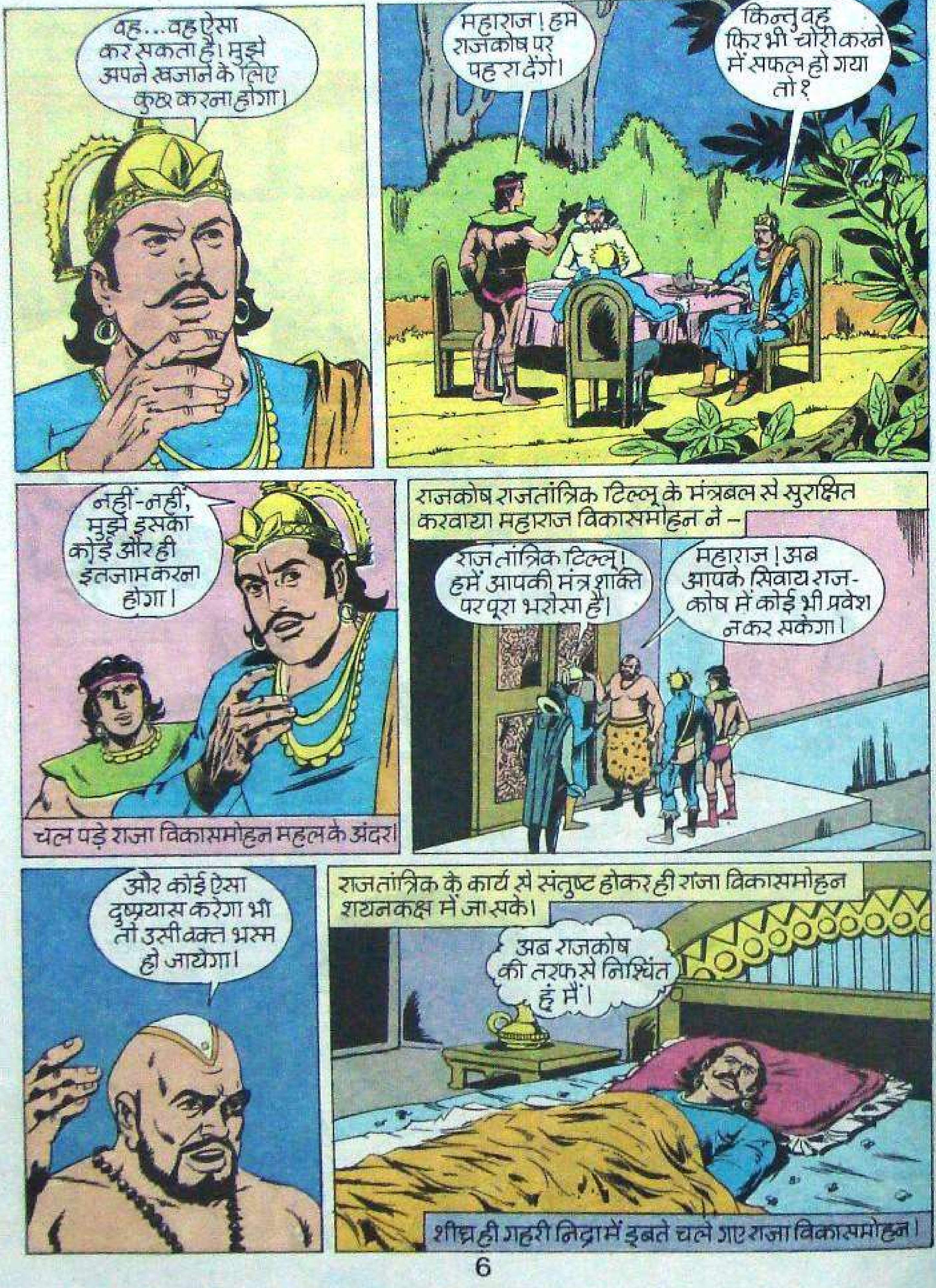
वह...वह ऐसा कर सकता है। मुझे अपने खजाने के लिए कुछ करना होगा।
महाराज! हम राजकोष पर पहरा देंगे।
किन्तु वह फिर भी चोरी करने में सफल हो गया तो?
नहीं-नहीं, मुझे इसका कोई और ही इंतजाम करना होगा।
चल पड़े राजा विकासमोहन महल के अंदर।
राजकोष राजतांत्रिक टिल्लू के मंत्रबल से सुरक्षित करवाया महाराज विकासमोहन ने –
राजतांत्रिक टिल्लू! हमें आपकी मंत्र शक्ति पर पूरा भरोसा है।
महाराज! अब आपके सिवाय राजकोष में कोई भी प्रवेश न कर सकेगा।
और कोई ऐसा दुष्प्रयास करेगा भी तो उसी वक्त भस्म हो जायेगा।
राजतांत्रिक के कार्य से संतुष्ट होकर ही राजा विकासमोहन शयनकक्ष में जा सके।
अब राजकोष की तरफ से निश्चिंत हूं मैं।
शीघ्र ही गहरी निद्रा में डूबते चले गए राजा विकासमोहन।

किन्तु अगली सुबह महल में मच गई एक हैरत अंगेज खबर से हलचल-
महाराज गायब हो गए।
महाराज महल में नहीं हैं।
अपहरण हो गया महाराज का।
भोकाल चाचा! कहां गए मेरे पिताश्री? ढूंढ कर लाओ उन्हें।
हां बेटा, हम उन्हें ढूंढकर लाएंगे।
तभी कक्ष के बाहर शोर गूंज उठा-
विकांडा!
हा हा हा
विकांडा!!
विकांडा!!!
?!
!!
एक सैनिक झोंके की भांति कक्ष में प्रविष्ट हुआ-
क्या हुआ सैनिक?
राजकोष में चोरी हो गई महाबली भोकाल।
चोरी कैसे? किसने की? चोर पकड़ा गया होगा?
नहीं महाबली! चोर था विकांडा, अत्यन्त बलशाली! गायब हो गया वह।
नाम सुनकर-

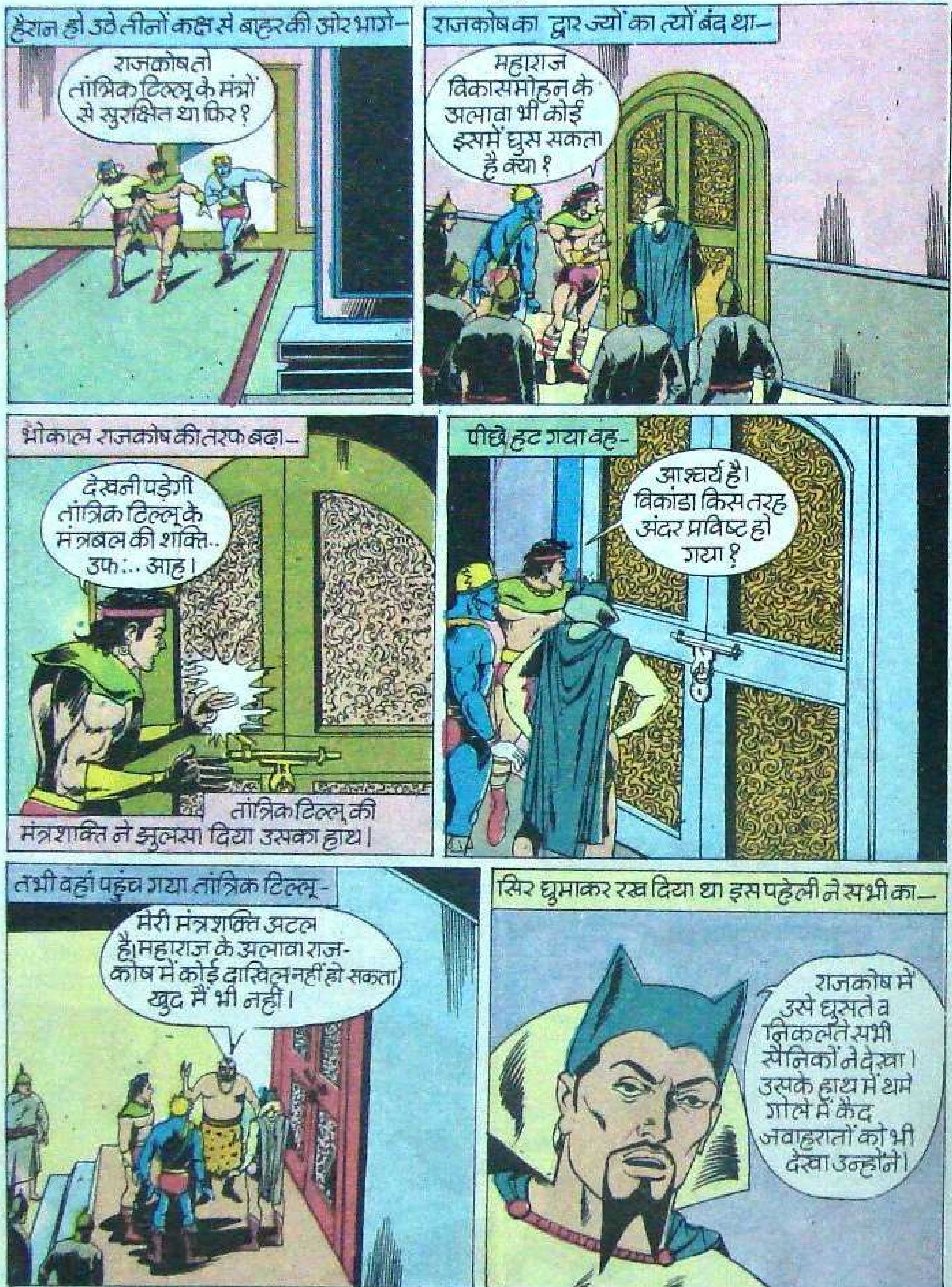
हैरान हो उठे तीनों कक्ष से बाहर की ओर भागे-
राजकोष तो तांत्रिक टिल्लू के मंत्रों से सुरक्षित था फिर ?
राजकोष का द्वार ज्यों का त्यों बंद था-
महाराज विकासमोहन के अलावा भी कोई इसमें घुस सकता है क्या ?
भोकाल राजकोष की तरफ बढ़ा-
देखनी पड़ेगी तांत्रिक टिल्लू के मंत्रबल की शक्ति.. उफ... आह।
तांत्रिक टिल्लू की मंत्रशक्ति ने झुलसा दिया उसका हाथ।
पीछे हट गया वह-
आश्चर्य है। विकांडा किस तरह अंदर प्रविष्ट हो गया ?
तभी वहां पहुंच गया तांत्रिक टिल्लू-
मेरी मंत्रशक्ति अटल है। महाराज के अलावा राजकोष में कोई दाखिल नहीं हो सकता खुद मैं भी नहीं।
सिर घुमाकर रख दिया था इस पहेली ने सभी का-
राजकोष में उसे घुसते व निकलते सभी सैनिकों ने देखा। उसके हाथ में थमे गोले में कैद जवाहरातों को भी देखा उन्होंने।

और यह कहते हुए भी सुना कि वह कल फिर आएगा।
कल हम होंगे यहां उसका मुकाबला करने के लिए।
तीनों वीर जमे हुए थे अगले दिन राजकोष के द्वार पर—
महाराज के अपहरण के बारे में भी पूछना है उससे।
भयंकर हंसी के साथ प्रकट हुआ वह—
हा हा हा
विकांडा!
विकांडा नीचे उतरा—
हा हा हा। आ गया मैं आज फिर खजाना ले जाने को।
विकांडा बढ़ा राजकोष के द्वार की ओर।
भोकाल ने उसे रोकने के लिए आगे बढ़ते शैतान व अतिक्रूर को रोक लिया—
रुको। पहले देखो यह क्या करता है?

बड़े ही आराम से राजकोष का द्वार खोल भीतर प्रविष्ट होता चला गया वह।
हा हा हा! सारी दौलत समेट लूंगा मैं।
ग्लोब में समाता चला गया राजकोष का खजाना—
आश्चर्यचकित से देखते रह गए वे निडर चोर को।
उफ! तो इस तरह गायब करता था! यह बड़ी से बड़ी चीज!
खजाने के बड़े हिस्से को गोले में भरकर पलटा विकांडा।
किन्तु द्वार पर खड़े हुए थे भोकाल, शूतान व अतिक्रूर।
ओह हो, तुम रोकोगे मुझे?
हाँ!
विकांडा के हाथ में प्रकट हुआ एक अद्भुत हथियार—
टांडा से टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा तुम्हारे शरीरों के।
टांडा से निकलती तेज चमक ने शूतान को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया—
उफ! ये किरणें मेरी आंखों पर हमला कर रही हैं।

अतिक्रूर ने किया उस पर दंताक से वार—
विकांडा! हमारे शरीर टुकड़े होने के लिए नहीं, टुकड़े करने के लिए बने हैं।
किन्तु—
अतिक्रूर को उछाल फेंका टांडा के सहारे विकांडा ने—
हा हा हा! टुकड़े नहीं चटनी बनाऊंगा मैं तेरे शरीर की।
महाबली बन गया भोकाल—
भोकाल
महाबली भोकाल खड़ा था अब विकांडा की राह का रोड़ा बनकर—
विकांडा! आज तू महल से बाहर कदम न रख सकेगा।
इस तलवार की शक्ति से अभी वाकिफ हो जायेगा तू!

टांडा को लहराता हुआ बढ़ा विकांडा आगे –
टांडा है यह टांडा! तेरी लोहे की पत्ती इसके आगे नहीं टिक पाएगी!
सम्भालियो इसे, अभी इस भोकाल को मारकर लेता हूं तुझसे!
खजाने वाला गोला अतिक्रूर को पकड़ा कर वह आगे बढ़ा।
जबरदस्त जंग के दर्शक बन गये सभी –
टन टनाक टन टन
खूबसूरत तलवारबाजी करते भोकाल को अहसास हो रहा था। टांडा की शक्ति का –
वाकई गजब की शक्ति है इसके हथियार में!
विकांडा भी मान गया लोहा उसकी युद्धकला का –
बहुत संवरा हुआ योद्धा है यह!
वार चला विकांडा का –
आह
भीषण दर्द की लहर दौड़ गई भोकाल के जिस्म में!
विकांडा ने किया टांडा का अगला प्रहार –
आह
पीड़ा की अधिकता से एक बारगी कांप ही तो उठा वह।

विद्युत गति से तलवार घूमी उसकी—
सांय्ऽऽऽऽ
विकांडा के हाथ से डंडा निकलता चला गया।
और अगले ही पल...
तलवार आ लगी विकांडा की गर्दन से—
वाह! असली योद्धा है।
चाहता तो तेरी गर्दन इस वक्त तक उड़ा चुका होता, लेकिन...
अभी तुझसे बहुत कुछ जानना है....उफ!
मैं जानने दूंगा तब ना।
संसार का सबसे बलशाली आदमी हूं मैं।
मेरे बाहुबल के आगे टिक नहीं पायेगा तू!

विकांडा के घूंसे घन गरज से बरस पड़े भोकाल पर—
आह
धाड़
शक्तिशाली विशाल हाथ भोकाल जैसे महाबली के होश ठिकाने लगा रहा था।
उफ। ऐसे प्रलयंकारी मुष्टि प्रहार पहले कभी नहीं खाए।
स्तम्भ तक हिल गया उस प्रहार की तीव्रता से—
अंधेरा सा छाने लगा भोकाल की आंखों के सामने—
उफ। मेरे होशोहवास मेरा साथ छोड़ रहे हैं।
भोकाल! तुम ठीक तो हो मित्र!
खड़े होओ और साबित कर दिखाओ कि तुम्हीं महाबली हो।
कहकहा गूंज उठा विकांडा का—
हा हा हा। ऐसे नहीं उठ पायेगा अब यह। जाओ, राजवैद्य को बुलाओ। हा हा हा।

तभी वहां गूंज उठी आवाज श्वेता की—
चाचा! भोकाल चाचा! हमें पता लगा है कि हमारे पिताश्री का अपहरणकर्ता यहां आया है। उसे जाने ना देना चाचा।
किन्तु भोकाल की हालत देखकर ठिठक गई वह
किन्तु उसे देख भोकाल के शरीर में हरकत हुई—
क्या हुआ चाचा! आप लेटे क्यों हो, मारो इसे। देखो, यह कैसा खड़ा हुआ हंस रहा है।
हा हा हा
वह उठ खड़ा हुआ।
विकांडा की तरफ बढ़ा वह।
यह क्या समझ कर इतना हंस रहा है। महागुरु भोकाल की शक्ति अपराजेय है, असीमित है।
हो हा हा
पंजे ने घूंसे का रूप लिया और—
धम्म
तेरा हंसना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है शैतान।
तड़प गया विकांडा।
अगले घूंसे ने तो उछाल ही फेंका उसे।
और अब तू तो वाकई जल्दी न उठ पाएगा।
खम्भा तोड़ता हुआ उसका शरीर वहीं ढेर हो गया।

शाबास चाचा!
वाह! भोकाल!
भोकाल बेमिसाल!
फिर विकांडा के बेहोश जिस्म को वहां से हटाकर...
...कारागृह में कैद कर दिया गया।
खजाने वाला गोला अतिक्रूर के कक्ष में रखवा दिया गया।
यह यहां सुरक्षित रहेगा।
शाही बाग में -
मुझे अब तक यह समझ नहीं आया कि वह राजकोष में घुस कैसे जाता था?
और उसने महाराज का अपहरण क्यों किया?
उसके होश में आने पर सब मालूम पड़ जायेगा।
तभी एक सुरीली आवाज ने उनके कदमों में जंजीर डाल दी।
सुनिए
और उसे देख ठगे से खड़े रह गए तीनों।

खूबसूरती में जो परियों को मात कर रही थी—
तीनों के ही मुख से एक साथ निकला—
कौन हो तुम सुन्दरी ?
नाम है मेरा पकोड़िया और प्यार से मुझे 'पीकू' कहते हैं। कुंवारी हूं। शादी करने आई हूं।
मैं करूंगा तुमसे शादी। नाम है मेरा शूतान। प्यार से शैतान कह सकती हो।
नहीं, मैं करूंगा इससे शादी। नाम है मेरा अतिक्रूर प्यार से ये मुझे 'अतिक' कहेगी।
कितनी रूपवती है, अगर तुरीन को दिल ना दिया होता तो इसी से शादी करता।
उसने भोकाल की तरफ देखा और बोली—
और तुम महाबली भोकाल?
मैं अपनी जीवन-संगनी चुन चुका हूं। तुम इन दोनों में से किसी से भी शादी कर सकती हो।

मैं फैसला कर चुका हूं इससे मैं ही शादी करूंगा।
नहीं मित्र, शादी तो इससे मैं ही करूंगा, क्योंकि पहले मैंने ही कहा था।
अजब दुविधा थी।
दोनों ही कृतसंकल्प लग रहे थे।
मैं तुझसे ज्यादा बलवान हूं। यह मुझसे ही शादी करेगी।
सूरत तो आइने में देख के आओ, मुझसे ना जीत पाओगे तुम।
कौन किस पर हावी होगा?
सुंदरी! तुम मुझसे ही विवाह करोगी।
मैं ही तुम्हारे योग्य वर हूं तुम मुझे ही वरोगी।
मुकाबले के जोड़ीदार हैं दोनों।
और मुकाबले का ही फैसला किया पीकू पकोड़िया ने—
ठीक है तुम दोनों के बीच प्रतियोगिता रखी जायेगी जो श्रेष्ठ सिध्द होगा मैं उसी से शादी करूंगी।
एक विशाल चट्टान की ओर इशारा किया उसने—
क्या तुम दोनों में से कोई उस चट्टान को उठा सकता है?
हां, क्यों नहीं?
आगे बढ़ा अतिक्रूर और अगले ही पल चट्टान उसने उठा ली।
यह देखो!
मेरे लिए यह असम्भव है, किन्तु असम्भव को सम्भव करने की विद्या मेरे पास है।

शैतान का सम्मोहन चला और।
वाह, इसने तो चट्टान एक ही हाथ में उठा ली।
नजरों का धोखा था सब।
असल में तो वह एक तरफ खड़ा था—
यह तो मुझसे भी ज्यादा शक्तिशाली है।
सम्मोहन टूटा तो—
मैं जीता। अब पीकू मुझसे शादी करेगी।
नहीं!
भोकाल ने रोक लिया उसे।
तुमने बेइमानी की है शैतान, तुमने सम्मोहन शक्ति का इस्तेमाल किया है। जीता अतिक्रूर ही है।
मित्र को धोखा दिया है तुमने एक स्त्री को पाने के लिए, इतना गिर गए तुम?
शर्मिन्दगी से नेत्र झुकते चले गये शैतान के।
अपनी गलती का अहसास हुआ उसे—
मुझे माफ कर दो मित्र, वाकई मैंने नीच कार्य किया। मैं अपने किए पर शर्मिन्दा हूं।
अन्ततः

पीक पकोड़िया ने अतिक्रूर का चयन किया—
जल्दी ही हम भुजंग देश जाकर विवाह करेंगे, किन्तु पहले महाराज विकासमोहन को ढूंढना है हमें।
फिर पीक पकोड़िया उन्हें अपने बारे में बताती चली गई—
मैं सफदरगंज से आई हूं। बचपन से ही चाहती थी कि विश्व के महाबलशाली से ही विवाह करूंगी। आपका नाम सुना तो विकासनगर के लिए चल पड़ी। आज आपको पाकर मैं बहुत खुश हूं।
महारानी मोहिनी से मिलवाया उन्होंने पीक पकोड़िया को—
बहुत खुशी हुई तुमसे मिलकर। अब तुम यहीं रहोगी मेरे पास राजमहल में। महाराज के आने के बाद तुम्हारा विवाह बड़ी धूमधाम से होगा।
उधर विकांडा अभी भी बेहोश पड़ा था—
और उसी रात्रि को...
महल में फैलते चले गये उस धुएं ने—
...सभी को गहरी निद्रा में पहुंचा दिया—

खजाने से भरा गोला उठाया उस साए ने-
और बेधड़क बाहर निकल गया।
कारागृह में सींखचों के सामने मौजूद था अब वह साया-
जादुई धुएं ने सब को बेहोश कर दिया है मेरा काम कितना सरल हो गया।
साए ने जादुई भस्म निकाली और-
यह जादुई भस्म विकांडा को दो पल में होश में ला देगी।
उड़ती चली गई भस्म सींखचों से अंदर।
भस्म की गंध नथुनों से टकराते ही विकांडा उठ बैठा-
कहां है भोकाल? मैं उसका कत्ल कर दूंगा।
अगले पल ही वह कारागृह का मजबूत द्वार तोड़ उस साए के सामने खड़ा था-
कौन है तू बता? भोकाल कहां है?
मुझे भक्ता ने भेजा है तुझे आजाद कराने के लिए।
यह लो जादुई गोला और यह बोरा तुम्हारे काम आएगा।

विकांडा को कुछ समझाकर साया एक तरफ चल दिया-
भोकाल, शूतान, अतिक्रूर को सबक सिखाने का यही बढ़िया तरीका है।
शूतान के कक्ष में पहुंचा विकांडा-
खजाने की तरह इसे भी इस गोले में कैद कर लूंगा।
बोरे में से उसने एक और जादुई गोला निकाल लिया था।
उसने मंत्र पढ़ा और शूतान का बेहोश जिस्म गोले में समाता चला गया-
वह गोला उसने बोरे के हवाले किया और कक्ष से बाहर निकल चला।
अतिक्रूर के कक्ष में पहुंचा विकांडा-
आओ महाबली तुम भी समा जाओ इस जादुई गोले में।
उसे भी बोरे में डाल वह चल पड़ा।
और पहुंचा महाबली भोकाल के कक्ष में-
निसंदेह, महावीर व महाबली हो तुम भोकाल, किन्तु अब मैं तुम्हारा अपहरण कर...
...ले जाऊंगा भददा के पास और वहीं मारूंगा तुम तीनों को।
बोरे में कैद कर उन्हें विकांडा महल के बाहर की ओर बढ़ चला।

अगली सुबह महल में उनके गायब होने की खबर ने तूफान मचा दिया-
महाबली भोकाल, अतिक्रूर व शैतान को दुष्ट विकांडा उठाकर ले गया।
अब क्या होगा?
पहले महाराज गायब हुए और अब ये। कोई बड़ी विपत्ति आने वाली है।
उधर एक अनजान जगह-
होश में आ चुके थे तीनों महारथी-
हाय! यह हम कहां आ गए?
उनके इस सवाल का जवाब मिला कमरे में प्रविष्ट होतीं उन तीन आवाजों से-
भद्दा! यदि तुमने पीकू पकोड़िया को न भेजा होता तो मेरा आजाद होना मुश्किल हो जाता।
पीकू पकोड़िया ने भी तो उन्हें खूब उल्लू बनाया।
सब आपके दिमाग की उपज थी भद्दा!
कमरे में प्रविष्ट हुए तीन शरीर-
विकांडा, भद्दा पीकू पकोड़िया का मेहमानों को प्रणाम।

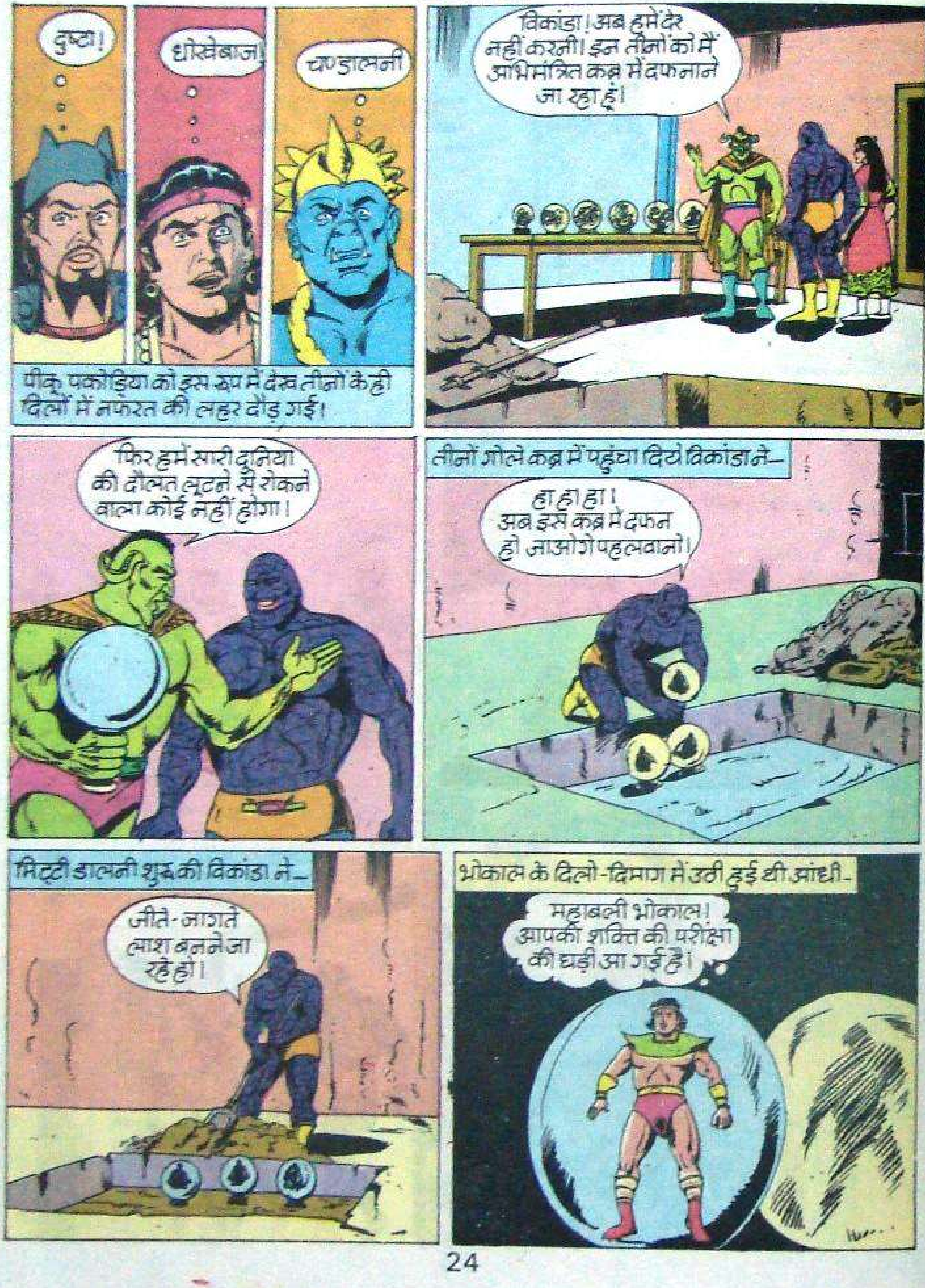
दुष्ट!
धोखेबाज!
चण्डालनी
पीकू पकोड़िया को इस रूप में देख तीनों के ही दिलों में नफरत की लहर दौड़ गई।
विकांडा! अब हमें देर नहीं करनी। इन तीनों को मैं अभिमंत्रित कब्र में दफनाने जा रहा हूं।
फिर हमें सारी दुनिया की दौलत लूटने से रोकने वाला कोई नहीं होगा!
तीनों गोले कब्र में पहुंचा दिये विकांडा ने—
हा हा हा! अब इस कब्र में दफन हो जाओगे पहलवानो!
मिट्टी डालनी शुरू की विकांडा ने—
जीते-जागते लाश बनने जा रहे हो!
भोकाल के दिलो-दिमाग में उठी हुई थी आंधी—
महाबली भोकाल! आपकी शक्ति की परीक्षा की घड़ी आ गई है!

भोकाल
आजाद होते ही एक क्षण की भी देर ना की महाबली भोकाल ने—
तुम्हारे दुष्ट विचारों को पूरा न होने दूंगा मैं।
तुम्हारे दुष्ट अरमानों को नाकामयाब कर दूंगा मैं।
विकांडा ने दीवार पर टंगा भारी फरसा उठाया और उसे भयानक ढंग से लहराता हुआ वह भोकाल की तरफ बढ़ा।
भोकाल, अब तुम शेर की मांद में हो। यहां से बच के ना निकल सकोगे।
शेर का शिकार शेर की मांद में ही घुसकर करना सीखा है मैंने।

विकांडा की तरफ बढते भोकाल को जकड़ लिया उस जाल ने—
बस अब और नहीं भोकाल, पहले ही बहुत देर हो चुकी है।
जाल में फंसे भोकाल ने बहुत कोशिश की आजाद होने की, किन्तु व्यर्थ।
हा हा हा। विकांडा। अब तुम इसे अभिमंत्रित जादुई गोले में कैद कर लो। इस जाल में कैद यह दोबारा बाहर ना निकल पायेगा।
जरूर!
भोकाल को अपनी हार स्पष्ट नजर आ रही थी, क्योंकि अब यह बात उसे अच्छी तरह मालूम थी कि एक बार वह गोले में कैद हुआ तो फिर बाहर ना आ सकेगा।
उफ!
हा हा हा
विकांडा के कदम निरन्तर नजदीक आ रहे थे। किसी भी क्षण कुछ भी हो जाने वाला था।
तभी—
तभी गूंजा एक धमाका—
धमाका!
उस दूसरी मूर्ति को भी उछाल फेंका पीकू पकोड़िया ने और इस बार टूट पड़ा शैतान वाला जादुई गोला—
य... यह क्या किया तूने?
इन्हें क्यों आजाद कराया तूने?
तेरा खेल खत्म करने को।
उलट गया दिमाग भद्दा का पीकू पकोड़िया के इस विद्रोही रूप को देख।

वह शीघ्रता से विकांडा की तरफ पलटा–
जल्दी करो विकांडा! इसे जल्दी कैद करो।
विकांडा पर उछाल फेंका शैतान ने खजाने से भरा गोला–
आह!
गोले के टूटते ही...
खजाना परिवर्तित हो गया विशाल रूप में और विकांडा छुप गया उस खजाने के ढेर के नीचे–
खन खन खन खन
और भद्दा को पहुंचा दिया अतिक्रूर ने दंताक के भरपूर वार से यमलोक–
आह!
ले मर दौलत के भूखे भेड़िए!
भद्दा के मरते ही आजाद हो गया भोकाल–
धन्यवाद अतिक्रूर।
तभी खजाने के ढेर का सीना चीर बाहर निकला विकांडा
हुर्ररर भोकाल, तुझे नहीं छोड़ूंगा मैं!

भोकाल ने लगाई हुंकार—
अब मेरी तलवार तेरा खून चाटकर ही वापस आएगी।
तभी गूंज उठी आवाज पीकू पकोड़िया की—
नहीं... रुक जाओ भोकाल! विकांडा ही राजा विकासमोहन है।
हैरत अंगेज रहस्योद्घाटन था वह—
जिसने भोकाल के कदमों को जाम कर दिया।—
क्या?
या आआ
और विकांडा बदस्तूर भागता हुआ भोकाल पर वार कर बैठा—
उफ!
कच्चक
और इससे पहले कि वह दूसरा जानलेवा वार करता...
.. चीख उठी पीकू पकोड़िया—
अपनी तलवार से इसका कपाल फोड़ डालो। यह सामान्य हो जायेगा।
भोकाल का हाथ तेजी से लहराया और—
खच्चाक
खड़
टूटकर बिखर गया मजबूत चट्टान सा विकांडा का कपाल।

और टूटकर बिखरता चला गया विकासमोहन के शरीर के चारों तरफ चढ़ा फौलाद सा मजबूत नकली शरीर विकांडा का—
तीव्र झटका सा लगा था राजा विकासमोहन के मस्तिष्क पर—
हांए! यह मैं कहां हूं?
तब भोकाल ने समझाई उन्हें सारी स्थिति—
ओह, तो हमारे साथ ऐसी दुर्घटना घट गई और हमें कुछ मालूम भी न पड़ा!
तब पीकू पकोड़िया की तरफ मुड़े चारों—
अब इस सारे चक्रव्यूह के पीछे छिपे रहस्यों से तुम अवगत कराओगी।
सफदरगंज से मुझे उठा लाया था यह शैतान भद्दा। बहुत ही लालची था। यह लोगों के घर चोरी किया करता था। उन्हें ठगने में मुझसे जबरन सहायता लेता था यह। एक दिन इसे एक जादूगर मिल गया। इसने उसकी जादू की मणि चुरा ली।
...और खुद जादूगर बन बैठा। तभी महाराज विकासमोहन ने खजाने की प्रदर्शनी लगाई। एक राजा का रूप धर कर यह वहां पहुंच गया और जादुई गोले की मदद से दो एक चीजें चुरा लाया। किन्तु, जल्दी ही महाराज ने प्रदर्शनी बंद कर दी। तब इसने विकांडा वाली योजना बनाई और महाराज का अपहरण करके...

प्रिय पाठको!
भोकाल सीरीज की शानदार सफलता पर आपको बधाई। कहानियों के प्रति आपकी प्रतिक्रियाओं के सैकड़ों पत्र मिले। बेहतरीन, मनोरंजनपूर्ण कहानियां लिखने की व्यस्तता में सभी पत्रों का अलग से जवाब देना सम्भव नहीं है। चित्रकथाओं के जरिये ही सम्पर्क बना रह सकता है। आपके भेजे विचारों पर निरंतर ध्यान देता हूं, किन्तु यह ध्यान रखें कि चित्रकथा भेजना या आप में से किसी की चित्रकथा छपवा देना मेरा काम नहीं है। अत: इस विषय में कोई पत्रव्यवहार न करें।

आपका :- संजय गुप्ता

समाप्त